प्रकाशक—
रसायन फार्मेसी (रजि०)
गणपति निवास
संगरिया (बीकानेर)

मुद्रक—
स्वस्तिक प्रिंटिंग प्रेस,
पो० बो० १२५ देहली।

विषयानुक्रमणिका

—(❀)—

दो शब्द

"एकौषधि गुणविधान" क्या है ? इस प्रश्न के उत्तर में मुझे पुस्तककी प्रशंसा के पुल बांधना अभिष्ट नहीं है, बल्कि उत्पन्न होने वाले सन्देह को निर्वाण करना है।

संभवत लोगों का ख्याल होगा कि "एकौपधि गुणविधान" में अन्य समस्त गुणविधानो का संग्रह होगा। यदि मै ऐसा करना चाहता तो एक सीमा तक मुझे अधिकार था, क्योंकि विभिन्न गुण विधान भी तो एकौपधि-अमिश्रित औपधि से ही सम्बन्ध रखते हैं। किन्तु मैंने ऐसा नहीं किया और वह केवल इस विचार से कि इस पुस्तक के ग्राहक भी वही सज्जन हैं जो इससे पहिले समस्त गुण विधानो को खरीद चुके हैं, या भविष्य में अवश्य खरीदेंगे। इसलिये पुनः वही वस्तु देना अनुचित समझता हूँ। इस पुस्तक मे नये से नये प्रयोग प्रकाशित किये गये है और इनमें से अधिकांश प्रयोग मेरी फार्मेसी के धर्मार्थ विभाग से सदैव व्यवहृत होते रहते हैं। इसलिये मै कह सकता हूँ कि यह पुस्तक प्रत्येक वैद्य, हकीम, डाक्टर तथा हर एक सद गृहस्थ के लिये बहुत ही उपयोगी सिद्ध होगी। इसमे अनेक रोग उस उच्च श्रेणी के हैं कि जिनकी तुलना मे अन्य योग मिलने कठिन हैं। मै आशा करता हूँ कि आप लोग इसका. सन्मान करके मेरे परिश्रम को सफल बनायेगे

संगरिया (बीकानेर)
१-१-१९४१

विनयावनत
लेखक—

भूमिका

अब इस बात को संसार मान गया है कि मिश्रित योगौ-पधियों कि अपेक्षा अमिश्रित एकौषधि में रोगो को मिटाने का अधिक प्रभाव होता है। इस पुस्तक की रचना उन सुनहरी नियमों के आधार पर हुई है, जिनका आविष्कार आज से तीन हजार वर्ष पूर्व हुआ था। आजकल भी विद्वान वैद्यो की सम्मति मे वही योग्य चिकित्सक है—जो एकौषधि से चिकित्सा करता है। यही कारण है कि बड़े २ विद्वान और योग्य चिकित्सक अत्यन्त संक्षिप्त और छोटे प्रयोग लिखते हैं। इस विचार से भी यह पुस्तक वैद्यो के लिये एक शिक्षक और पथप्रदर्शक का काम देगी, क्योंकि इस पुस्तक के योगो की समस्त औषधियां सर्वत्र सरलता पूर्वक प्राप्त होने वाली जडी बूटिया या प्रतिदिन व्यवहार मे आने वाली वस्तुये हैं, जिनके लिये किसी बड़े दवाखाने की तलाश की आवश्यक्ता नहीं होती, और फिर सबके सब योग प्रायः अनुभूत हैं। इसलिये किसी प्रकार की हानि का भय भी नहीं। अतः सब वैद्य, अवैद्य भी इससे लाभ उठा सकते हैं। फिर विशेषता यह है कि एकौषधि होने के कारण, औषधि-निर्माण मे आने वाले कष्ट और अधिक समय की भी आवश्यक्ता नही। पुस्तक का प्रबन्ध, और चिकित्सापद्धति का ढंग इतना सुन्दर है कि साधारण से साधारण बुद्धि रखने वाला व्यक्ति भी इससे लाभान्वित हो सकता है। इस पुस्तक के जितने

योग हैं वह सब के सब आजतक बड़े २ कुटुम्ब शताब्दियों से हृदय पट में बन्द रखते चले आरहे थे और हज़ारों रुपयों के बदले में भी प्रकट करना स्वीकार न करते थे, किन्तु यह लेखक की योग्यता और उदारता है कि उनको कठिन परिश्रम से प्राप्त करके जनसाधारण के लाभार्थ निर्लोभ भाव से प्रकाशित कर दिया। इस पुस्तक में वह अद्भुत प्रभावशाली एवं चमत्कारी योग हैं, कि जिनके प्रभाव को देखकर प्रत्येक मनुष्य आश्चर्य चकित रह जाता है। मैं इस पुस्तक के विषय में इससे अधिक कुछ नहीं लिख सकता कि यह पुस्तक चिकित्सक, अचिकित्सक के लिये विभिन्न पहलूओं से समान लाभकारी है। प्रत्येक व्यक्ति इसे पढ़ कर यही सोचेगा कि यह पुस्तक मेरे लिये ही लिखी गई है। इससे पहिले ऐसी कोई पुस्तक नहीं लिखी गई। साराश यदि इस पुस्तक की विशेषताओं का सविस्तार वर्णन करूं तो इतनी ही बड़ी एक और पुस्तक तैयार हो सकती है। मैं इतना लिखकर ही सन्तोष करता हूँ। इसकी विशेषतायें पुस्तक पढ़ने से पाठको पर स्वयं ही विदित हो जावेगी, अतः पाठकों का कर्तव्य है, कि वह इस पुस्तक का अधिकाधिक प्रचार करके लेखक के परिश्रम का सन्मान करें ऐसी ही अन्य कृतियां देने को उत्साहित करें।

हकीम आर० ए० साहिब प्रोफेसर त्तिब्बिया कालेज लाहौर

—*—

एकौषधि गुण विधान

शिर के रोग

यद्यपि शिर के रोग तो इतने अधिक हैं कि उनकी गणना करना भी निर दर्दी से खाली नहीं, तथापि नीचे केवल कुछेक उन रोगो का वर्णन किया जाता है, जो प्रायः ही पाये जाते है। हां यह बात स्मरण रखने योग्य है कि मनुष्य देह रुपी साम्राज्य में मस्तिष्क का वही पद है जो वजीर को हुवा करता है, अतः इसका रुग्ण हो जाना बहुत ही अनिष्टकारी सिद्ध होता है, इस लिये मस्तिष्क सम्बन्धी रोगो की चिकित्सा में आलस्य कदापि न करना चाहिये।

नजला और जुकाम

साधारणतया लोग नजला और जुकाम को साधारण रोग समझते हुये उसकी चिकित्सा कराने में आलस्य करते हैं,

प्रत्युत परवाह भी नहीं करते। हालांकि विद्वान वैद्यों और हकीमों ने इन्हें तमाम बीमारियों की जड बतलाया है। इनकी चिकित्सा में लापरवाही करने से अनन्त घातक रोग उत्पन्न हो जाने की आशंका रहती है, जैसा कि "अनुभूत योग चिन्तामणि" पुस्तक में विवरण दिया गया है। यहां केवल इतना लिख देना ही पर्याप्त समझते हैं कि नजूल दिमागी यदि नासिका मार्ग से बहे तो प्रतिश्याय (जुकाम) और यदि अन्दर गिरे तो नजला कहलाता है। इन दोनो रोगों के विशेषातिविशेष और अनेक वार के अनुभूत तथा परीक्षित योग तो "अनुभूत योग चिन्तामणि" में प्रकाशित हो चुके हैं, जो सम्भवत पाठकों की दृष्टि से गुजरे होंगे। अब यहां प्रस्तुत पुस्तक के अनुरूप वह प्रयोग भेट किये जाते हैं जो रामबाण होने के अतिरिक्त एकौषधि से सम्बन्ध रखते हैं।

नजला, जुकाम की स्वादिष्ट दवा

निम्न लिखित औषधिका अनुभव अनेक वार हो चुका है और प्रायः ही सर्वत्र लाभ दायक सिद्ध हुई है, फिर विशेषता यह कि मजेदार होने के अतिरिक्त चाय की प्रतिनिधि है, बल्कि चाय में जो विषाक्त दोष पाये जाते हैं–वह इसमे नाम मात्र को भी नहीं नजला जुकाम के लिये लाभदायक होने के अतिरिक्त मस्तिष्क बलदायक एवं दृष्टि हितकर तथा कोष्ठ बद्धता नाशक भी सिद्ध होती है। हम तो अनेक बार शौकिया इस चीज को इस्तेमाल कर लिया करते हैं।

प्रयोग—पानी पावभर लेकर अग्नि पर रखे. जब खूब उबलने लगे तो उसमें ४ माशा बनफ़शा के पत्ते डालकर तत्काल नीचे उतारले और ५ मिनट तक वर्तन के मूंह को बन्द रखे. तद् पश्चात छान कर थोड़ासा दूध और उचित परिमाण मे मिश्री मिलाकर गरम २ चाय की भान्ति घूंट २ करके पिलावे। बस, सारे दिन जब भी तृषा लगे यही वस्तु ताजा तैयार करके पिलाते रहे। अन्य कोइ वस्तु खाने या पीने को न दे। इस से एक ही दिन मे चित स्वस्थ हो जाता है और जब तक पूर्ण लाभ न हो यही चिकित्सा पद्धति आरम्भ रखे। अनेक वार का अनुभूत और रामबाण योग है।

लिसौडे का चमत्कार

सिपस्तां (लिसौडे) नग १४ लेकर जौकुट करके पाव भर पानी मे डाल कर पकावे। जब आधा पानी जल जावे तब छानकर और दो तोला मिश्री मिलाकर गरम गरम पिलावें। इससे वात और पित जनित नजला, प्रतिस्याय व खुश्क खांसी को अति शीघ्र आराम हो जायगा।

स्थायी नजला का गुप्त योग

प्रयोग—२१ नग सफेद मिरच साबित ही निगलवा दिया करें। सात दिन के सेवन से ही आराम हो जावेगा।

चमत्कारिक सफैद चुटकी

प्रयोग—सुहागा सफेद भूनकर पीसलें और शीशी में सुरक्षित रखें। आवश्यक्ता के समय इसमें से २ रत्ती दवा लेकर चाय के तादृश्य गरम पानी से दिन मे ३ वार सेवन करायें।

पित्त जनित जुकाम व दही का पान

प्राय: ग्रीष्म ऋतु में जुकाम हो जाया करता है और उसका कारण उष्णता हुआ करती है। वह लोग भूल करते हैं, जो प्रत्येक जुकाम की चिकित्सा उष्ण औषधियों से करते हैं। निम्नलिखित चुटकला अनेक वार का अनुभूत सिद्ध है, जिसको मेरे स्व० शिक्षक सदैव प्रयोग किया करते थे।

प्रयोग—गाय का ताजा दही न्यूनातिन्यून डेढ पाव लेकर उसमें मिश्री मिला कर पिलावे। इससे गरमी का जुकाम सरलता पूर्वक नष्ट हो जाता है।

अद्वितीय नस्य

एक दिन मेरे स्व० शिक्षक एक नस्य तैयार करके लाये और हमे वतलाया कि यह नस्य नजला और जुकाम के लिये अनुपम अगद है और साथ ही अपनी उदार वृत्ति से प्रयोग भी वतलादिया। किन्तु वह लापरवाही का युग था और उस समय तक अनुभूत योग संग्रह करने का रोग का भी मुझ पर प्रभाव प्रकट नहीं हुआ था इस लिये प्रयोग सुन तो लिया किन्तु तनिक

भी परवाह न की। हां जब अनुभूत प्रयोगों की महत्ता और आवश्यकता का अनुभव हुवा तो एकौषधि होने के कारण वह प्रयोग स्मरण हो आया जो अनुभव करने पर अकसीर सिद्ध हुवा। असल प्रयोग निम्न लिखित है।

प्रयोग—इटसिट (पूनर्नवा) के बीजों को लेकर छाया में सुखाकर अति सुक्ष्म पीस कर शीशी में सुरक्षित रखे। यही अद्वितीय नस्य है।

प्रहेज—दिन में सोना, खट्टी चीजों तथा दूध, दही, आलू अर्वी, उरद की दाल, शीतल वायु, अत्याधिक मैथुन और धूप में चलने फिरने में परहेज रखे।

पथ्य—मूंग की दाल, गेहूँ का फुलका, पालक का शाक (मांसाहारी बकरी का शोरबा खा सकते हैं) आदि।

मस्तिष्क शूल

प्राचीन विद्वानों ने मस्तिष्क शूल के इतने भेद लिखे हैं, कि जिनका याद रखना बल्कि एक बारगी स्वाध्याय कर जाना भी सिर दरद का कारण है। अतःएव हम इस विषय को छोडकर केवल उन भेदों का ही वर्णन करेंगे जो साधारणतया देखने में आते हैं और उनको दूर करने के लिये हमारे कोष में एकौषधि के प्रयोग उपस्थित हैं।

अर्धाव भेदक

यह एक प्रकार का सिर दरद ही है, जो प्रायः सिरके आधे

भाग मे होता है। इसका कारण प्रायः पैतृक ही होता है, या नजला, जुकाम से विगड़ कर भी हो जाया करता है।

चिन्ह—सिर घूमता है, चिनगारियां सी उड़ती हैं और फिर कनपटियो की रगे जोर २ से तड़पने लगती हैं, जी मिचलाता है और पीडा के मारे शिर फटने लगता है। प्रकाश अत्यन्त बुरा प्रतीत होता है।

अनुपम नस्य

चाहे रोगी पीडा से तड़फ रहा हो, उस समय निम्न लिखित नसवार पीड़ा के विपरीत ओर के नथने में सुंघा देने से पांच सात मिनट पश्चात ही छींके आकर दूपित द्रव्य निकल कर पीड़ा तत्काल शात हो जावेगी।

प्रयोग—सिरस के बीज सुक्ष्म पीसकर शीशी में संभालकर रखे। वस अनुपम नस्य तैयार है।

द्वितीय गुप्त योग

समुद्र फल को खूब सुक्ष्म पीसकर उप्रोक्त विधि से विपरीत नथने में टपकादे। यह कभी विफल न जाने वाला योग है।

कपूर का तत्कालीन चमत्कार

निम्न लिखित प्रयोग उस पीड़ा के लिये लाभदायक है जो गरमी के कारण से हो। उसका चिन्ह यह है कि ज्यो २ सूर्य ऊंचा होता जाता है, त्यो २ पीड़ा मे वृद्धि होती जाती है और दिन ढलने के बाद पीड़ा से न्यूनता होकर रात्रि को आराम हो जाता है। इस

पीड़ा को वैद्यक मे सूर्यावर्त और युनानी मे दरद असाबी कहते हैं।

प्रयोग—कपूर का टुकड़ा जो चणे के परिमाण का हो सूर्योदय से घंटा डेढ घंटा पूर्व मुन्नका मे लपेट कर या बताशे में रख कर निगलवादे और सूर्योदय के पश्चात धनिया ५ माशा पानी में घोट कर मिश्री मिलाकर पिलादे। इससे प्रथम दिवस ही, वरना दूसरे दिन तो अवश्य आराम हो जावेगा। प्रमाणित प्रयोग है।

अनन्तवात (उल्ल) का आश्चर्यजनक योग

अनतवात भी अर्धाव भेदक की किसम मे से एक रोग है जिसकी चिकित्सा बडा कठिन है। इसकी व्याख्या और विवरण तथा जिन अनुभूत प्रयोगो से वैद्यक ससार अब तक अपरिचित था वह सब हमने अपनी प्रसिद्ध—पुस्तक "अनुभूत योग चिन्ता-मणी" मे प्रकाशित कर दिये हैं। केवल यह प्रयोग शेष था और वह इसी पुस्तक मे प्रकाशित करने योग्य था, इस लिये यहां लिख रहे हैं। हम यह गर्व के साथ कह सकते हैं कि यह प्रयोग अभी तक किसी पुस्तक या पत्र मे प्रकाशित नही हुआ।

प्रयोग—अनतवात का तड़पता हुआ रोगी जब आपके पास पहुँचे तो एक मोटासा भिलावा लेकर उसमे सुई चुभोदे ताकि भिलावा के तैल से तर हो जावे। फिर रोगी की कनपटी में तडपती हुई रग को ढूंढकर उसमे उस सुई को धीरे २ चुभोदे। दो चार बार यही क्रिया करने से पीड़ा एक दम शान्त हो जावेगी

मानो कभी दरद हुवा ही नहीं। निःसन्देह आश्चर्यजनक योग है।

सरल चुटकले

(१) दो रत्ती नौशादर पानी में हल करके पीड़ा की ओर के विपरीत नथने में टपकाने से अर्धाव भेदक को आराम होता है।

(२) समुद्र झाग को पानी में घोल कर पीड़ा की ओर के विपरीत कान मे डालने से आधा शीशी का रोग शान्त होता है।

(३) सुलेमानी गुटी (जिसका प्रयोग इसी पुस्तक के अन्त से छपा है) को थोड़े से पानी में घिस कर सुंघावें। भ्रु पीड़ा के लिये अत्यन्त लाभदायक है, और अर्धावभेदक की अद्वितीय औषधि है।

(४) मीयां साहिब की नस्य (जिसका प्रयोग अगले पृष्ट पर छपा है) भ्रु पीडा की अति गुण कारी दवा है।

(५) दूध में जलेबी मिलाकर खिलाना अनंतवात के लिये अति लाभदायक है।

(६) इट सिट के बीजो के क्वाथ से सिर और मस्तक को धोने से, नजला और जुकाम से उत्पन्न होने वाली भ्रु पीड़ा और अनन्तवात की पीड़ा शान्त हो जाती है।

प्रहेज—सूखी वस्तुये, आलू, बैंगन, उरद की दाल, प्याज, रात्रि को जागना और पीड़ा समय भोजन करने से प्रहेज रखें।

पथ्य—भोजन मे खिचड़ी, मूंग की दाल, गेहूँ की रोटी, ताजा जलेबियां, या दूध जलेबी इस रोग के लिये अत्यन्त लाभ, दायक है।

नोट—अर्क (आक) गुण विधान, रीठा गुण विधान और फिटकड़ी गुणविधान में भ्रुपीड़ा और सिर दरद के अत्यन्त गुणकारी व अद्वितिय योग प्रकाशित किये गये हैं, जो सब के सब मुफरद (एकौषधि) योग हैं अतः विशेष जानकारी के लिये उक्त पुस्तको का अध्ययन अवश्य करें।

मीयां साहिब की नस्य

एक मियाँ साहिब जिला लायलपुर के किसी ग्राम की मस्जिद के इमाम थे। आप एक नस्य बनाया करते थे, जो कि ईश्वर प्रदत्त गुणों के कारण लोगों में अत्याधिक प्रसिद्ध हो रही थी और विशेष कर भ्रु पीडा के लिये तो अत्यन्त ही गुणकारी सिद्ध हुई थी। चूँकि मियां साहिब हमारे मित्रो में से एक थे, इस लिये उन्होने बिन पूछे अपना प्रयोग स्वयं ही बतादिया था, जो निम्न लिखित है।

भटकटाई (जिसको छमक निमोली भी कहते हैं) पीत वर्ण की लें और छाया में सुखाकर सुदम पीस कर सुरक्षित रक्खें।

सेवन विधि—आवश्यक्ता के समय अत्यन्त अल्प मात्रा में नस्य की भान्ति सुंघावें।

गुण—भ्रु पीड़ा अनन्तवात, शिरशूल, जुकाम को लाभ करती है। दिमाग की रगो मे रुका हुवा द्रव्य छीके आकर निकल जाता है और सिर हलका हो जाता है।

गरमी का सिर दरद

यदि गरमी के कारण से सिर दरद हो तो चन्दन घिसकर माथे पर लेप करने से दरद बन्द हो जाता है। इसी प्रकार जब के आटे को पानी में घोल कर माथे पर लेप करना भी लाभदायक है। यदि सर्दी के कारण से सिर दरद हो तो जायफल को मीठे तैल में घिस कर माथे पर लगाने से पीड़ा शान्त हो जाती है।

निसियां

निसयां के रोगी की स्मरण शक्ति नष्ट प्राय: सी हो जाती है। उसे यत्न करने पर भी कोई बात याद नहीं रहती। इसका कारण या तो मस्तिष्क (दिमाग) की निर्बलता, या दिमाग में बलगम की अधिकता हुआ करती है। यदि इस रोग का कारण मस्तिष्क की दुर्बलता हो तो मस्तिष्क को पुष्ट बनाने वाली औषधियों का सेवन करें। मस्तिष्क दुर्बलता के चिन्ह अगले पृष्ठों में पढें। निम्न लिखित प्रयोग निसयां रोग के लिये लाभदायक हैं।

भोजन और औषधि

हकीमों का कथन है कि वह दवा जो भोजन के रूपमें हो-समस्त औषधियों से उत्तम होती है। उससे दूसरे नंबर पर जड़ी-बूटियों का सेवन है, क्यों कि यदि उनसे फायदा न होगा तो नुक-

सान का भी भय नहीं है। अतः एव हम इस रोग के लिये एक एसाही प्रयोग भेंट करते हैं। जो महाशय इस से घृणा न करते हों वह लाभ उठा सकते हैं। यह योग केवल मासाहारी लोगो के लिये है। जोमांसाहारी नही है, उनके लिये और प्रयोग लिखेंगे।

प्रयोग—तीतर एक प्रसिद्ध पक्षी है उसका मांस प्रायः इस्तेमाल करने से निसियां का रोग मिटकर स्मर्ण शक्ति बढ जाती है।

चुटकला

दारचीनी के छोटे २ टुकड़े जेब में रखा करे और दिन में तीन चार टुकड़े चबाकर रस चूमते रहे। कुछ ही दिन इस प्रकार करने से आप पर स्वयं प्रकट हो जावेगा कि मस्तिष्क शक्ति आसाधारण रूप में उन्नति कर रही है और निसियां का रोग मिट रहा है।

मस्तिष्क की दुर्बलता

कारण—रक्त की न्यूनता, अधिक मानसिक परिश्रम, बहुमैथुन, हृदय की निर्बलता से दिमाग कमजोर हो जाता है।

चिन्ह—दृष्टि मद हो जाती है, कानो मे बाजे से बजते हैं, सिर के पृष्ठ भाग मे पीड़ा रहती है। मस्तिष्क की दुर्बलता दूर करने के लिये निम्न लिखित प्रयोगो मे जो अनुकूल पडे, बनाकर सेवन करें।

मस्तिष्क बल दाता घी

जो कि दृष्टि मान्द्य, निसियां और मस्तिष्क की दुर्बलता के लिए अनुपम वस्तु है।

मस्तिष्क की दुर्बलता और विशेष कर दृष्टी मान्द्य को दूर करने के लिये इस घी का इस्तेमाल बहुत गुणकारी सिद्ध होता है। यद्यपि इसके गुण तनिक देर में प्रकट होते हैं किन्तु खाने वाले ही जानते हैं कि इसके गुण कितने उत्तम और स्थाइ होते हैं। इसके निरन्तर सेवन से दृष्टि अत्यन्त तीव्र हो जाती है और फिर विशेषता यह कि साधारण घर में इस्तेमाल होने वाली चीज है।

प्रयोग—एक सेर उत्तम गौ घृत में आधपाव लड्डु गुड़ कूट कर डाल दें और मन्द २ अग्नि पर पकाते रहे। पहिले गुड़ नीचे बैठ जायगा किन्तु बाद में ऊपर आना आरम्भ होगा, यहां तक कि तमाम गुड़ ऊपर तैर आवेगा, परन्तु अभी इसमें चेप बाकी होगा इस लिये कुछ देर और पकने दें। जब देखें कि पकते २ चेप दूर हो गया है और गुड़ लाखकी भान्ति का होने लगा है तब उसे तत्काल अग्नि पर से उतारलें (यदि असावधानी से देर हुई तो घी कड़वा हो जायगा) और गुड़ को घृत से पृथक करलें (इसे बालक बताशों की तरह खा जाते हैं) और घृत को किसी शुद्ध पात्र में सुरक्षित रखें।

घर में साधारणतया जो घृत इस्तेमाल होता है, यदि उसे इसी प्रकार से बनाकर सेवन किया जाय तो कुटुम्ब भर की दृष्टी

तीव्र हो जायेगी। कोई हानिकारक द्रव्य नहीं है और न अधिक लागत की चीज है। केवल घी को साधारणतया साफ करना है। इसके गुणो का अनुभव तो वही कर सकेंगे, जो सेवन करेंगे, वरना इसके गुणों का वर्णन करने की शक्ति जड़ लेखनी में नहीं है।

अन्य प्रयोग

अनेक खाद्य पदार्थ ऐसे हैं जो तनिक से परिवर्तन से अक्सीर बन सकते हैं। निम्न लिखित विधि से अन्डो को सेवन करना बहुत ही गुणकारी होता है।

प्रयोग—मुर्गी के दो कच्चे अंडो की पीतता आधा सेर दूध में खूब फेंट कर और शहद से मीठा करके पिया करे। मस्तिष्क के लिये अत्यन्त पौष्टिक वस्तु है।

नोट—मस्तिष्क को बल देने वाले ऐसे ही और बहुत से चुटकले वर्णन किये जा सकते हैं, मगर चूंकि वह "बादाम गुण विधान" "सोफ गुण विधान" आदि पुस्तकों में लिख चुका हूँ अतः यहा वर्णन करने की आवश्यकता नहीं। हां केवल एक आश्चर्यजनक योग हम अपनी अत्यन्त प्रसिद्ध और प्रमाणित पुस्तक "अनुभूत योग चिन्तामणी" से ऊद्धर्त करके यहां लिख रहे हैं।

आश्चर्य जनक चुटकला

यदि दिमाग खाली हो चुका हो, और इस कारण से सिर

हिलाने से दरद होने लगता हो तो मुर्गी के एक अंडे की ताजा पीतता हथेली पर रखकर रोगी का कान ऊपर रखवादें। दस, पन्द्रह मिनट में तमाम पीतता स्वयंमेव दिमाग में चली जावेगी और एक सप्ताह में मस्तिष्क बलवान हो जायगा, जिसका चिन्ह यह है कि फिर पीतता दिमाग में कदापि न जासकेगी।

सन्निपात्त

विवर्ण—दिमाग के जौहर मे शोथ आजाने से रोगी को मूच्छा हो जाती है। विशेष विवर्ण जानने के लिये देखो 'अनुभूत योग चिन्तामणी" पृष्ट ३८

इस रोग के विशेषातिविशेष प्रयोग तो "अनुभूत योग चिन्तामणी" में प्रकाशित किये जा चुके हैं। यहां केवल एक प्रयोग लिखा जाता है, जो अन्यन्तही चमत्कारी है।

सन्निपात की तत्कालीन चिकित्सा

प्रयोग—यद्यपि यह प्रयोग यवनो के लिये है यथापि जब और कोई साधन प्राप्त न हो तो इससे लाभ उठा सकते हैं। जवान मुर्ग को मारकर उसके पेट मे से तमाम द्रव्य निकाल डालें और गरम २ ही रोगी के सिर पर बांधदे। यदि रोगी के सिर पर बाल हों तो कैंची से कतर कर बांधें। इससे रोगी की मूर्छा शीघ्र ही दूर हो जाती है।

प्रहेज—रोग शान्त होने से पूर्व भोजन बिलकुल न दें। गरम वस्तुओं तथा धूप मे चलने फिरने से प्रहेज रखें।

पथ्य—आराम होने के बाद रोगी को जौकासत्त् खांड मिलाकर या साबूदाना, खिचड़ी, मूंग की दाल का पानी दें।

दिमाग़ के कीडे

दिमाग में कीड़े पड़ जाना मृत्यु का चिन्ह समझा जाता है। यह अत्यन्त ही घातक रोग है। इससे सिर मे दरद रहता है और आवाज मे गुनगुनाहट पैदा हो जाती है। प्रायः हालतो मे नाक बैठ जाता है। डाक्टरी में इसकी सफल चिकित्सा नही मिलती, हां आयुर्वेद और यूनानी में कई ऐसे उत्तमोत्तम प्रयोग हैं, जिनसे तुरन्त ही कृमी मरकर नासिका मार्ग से बाहिर निकल जाते हैं। यहां एक खाने की दवा के प्रयोग का वर्णन किया जाता है, जो श्रीयुत देवराज जी वैद्य का अनुभूत है और आपने बड़े उत्साह के साथ इस पुस्तक में प्रकाशनार्थ भेजा है, किन्तु मुझे अनुभव करने का अवसर नही मिला।

प्रयोग—खरगोश की मेगनी एक नग गुड मे लपेटकर गरम पानी से रोगी को खिलादे। समस्त कृमी बाहिर गिर पड़ेगे।

एक अद्भुत नस्य

कनखजुरा जो प्रसिद्ध कीड़ा है, उसको छाया मे सुखाकर सुक्ष्म पीसले और उसकी नस्यदे, इससे तमाम कीड़े निकल जायेगे और फिर कभी न होगे।

अपस्मार मृगी ।

इस रोग के सन्यासी प्रयोग

इस रोग मे दौरा पड़ता है और दौरे के समय रोगी गिर-कर मुर्छित हो जाता है। मूंह से झाग आने लगती है। इस रोग के भेद और विवर्ण लिखने के लिये यह छोटी सी पुस्तक प्रयाप्त नही इस लिये इस विषय को छोड देते हैं। बालकों की मृगी की चिकित्सा भी यहां न लिखकर इसी पुस्तक के अन्त में "बालरोग" के वर्णन में लिखेगे।

अताइ हकीम की अपूर्व भेंट

जिससे अपस्मार का चिन्ह भी शेष नहीं रहता

एक कीडा गेहूँ के दाने के बराबर होता है, जिसका रंग भूरा होता है और टांगे अत्यन्त छोटी २ होती हैं। खेतो से कहीं कही मिलता है। इसके रहने की जगह ओखली जैसी होती है। हमारे प्रांत मे इसे घघू कहते है। यह अपस्मार के लिये अतीव गुणकारी सिद्ध होता है।

विधि—एक नग प्रतिदिन गुड़ मे लपेटकर पानी से निगलवा दिया करे। इसी प्रकार २१ दिवस के सेवन से आजीवन इस रोग से छुटकारा मिल जायगा।

अपस्मार की सन्यासी धूनी ।

खटमल जो चारपाइयों में होते है—उनको प्राप्त करते रहें और एक कपड़े पर मलते रहे । यहां तक कि कपड़ा खटमलों के रक्त से तर हो जावे । बस, इस कपड़े को सुरक्षित रखे और जब रोगी को अपस्मार का दौरा पड़े तब इस कपड़े में से थोड़ा सा टुकड़ा काटकर बत्ती बनावें और उसको आग लगाकर उसका धूंआ रोगी के नाक मे पहुँचादें । ईश्वर की दया से उसी दिन नाक मे से कीड़ा निकलकर रोगी स्वस्थ हो जावेगा । वरना फिर कभी दौरा पड़े तो यही क्रिया करें । यह विशेषातिविशेष गुप्त योग है ।

मृगी का फकीरी योग

प्रत्यक्ष मे यह साधारण सी चीज है इस लिये चिकित्सक को उचित है कि इसे गुप्त रूप से सेवन कराये । आशा है पहली बार ही नहीं तो तीसरी बार तो अवश्य सफलता होगी और फिर दौरा नहीं पड़ेगा । यह प्रयोग हकीम महोमदशफी साहिब रईस के चिकित्सालय का खास प्रयोग है ।

✓ प्रयोग—एक नग गधे की लीद ताजा निचोड कर उसका पानी निकाललें और दौरा पड़ने पर रोगी को पिलादें । ईश्वर ने चाहा तो फिर कभी दौरा नही पड़ेगा ।

खटमलों का अक्सीर तैल

खटमल जितने मिलसकें पकड़ले और शीशी मे डालदे ।

ऊपर से मीठा (तिलों का) तैल इतना डालें कि जिसमें खटमल अच्छी तरह डूब जायें। अब बोतल को कार्क लगाकर दो सप्ताह पर्यन्त धूप में लटकाये रखे। फिर छानकर शीशी में सुरक्षित रखे।

सेवन विधि—प्रति दिन थोड़ा तैल रूई की फुरैरी पर लगाकर रोगी के नाक पर लगा दिया करे।

गुण—कुछ दिन निरन्तर इस प्रयोग का इस्तेमाल करने से दौरा कदापि न होगा।

अपस्मार का अनोखा प्रयोग

काले रंग की कुतिया के शरीर पर प्रायः चिचड़ियां लगी होती हैं जिनको कुत्ता मक्खी के नाम से भी पुकारा जाता है। प्रति दिन एक चीचड़ी गुड़ में लपेटकर खिला दिया करें। आशा है सात दिन के सेवन से पूर्ण आरोग्यता प्राप्त हो जावेगी।

कुछेक अपूर्व नस्य प्रयोग

निम्न लिखित नस्य प्रयोग अपस्मार के लिये अक्सीर हैं, जिनका निरन्तर इस्तेमाल करना कुछ ही दिनों में रोग को समूल उखाड देता है, तथा मूर्छित रोगी को होश मे ले आना इसका प्रथम काम है।

मसीहाई नस्य

ऊंट के नाक के कीड़े छाया मे सुखाकर सूक्ष्म पीसले

और सुरक्षित रखें और अपस्मार के रोगी को नित्य नस्य की भांति सुंघाया करे। कुछ काल के सेवन से ईश्वर की कृपा हो तो अवश्य दौरा बन्द हो जाता है।

दौरा रोकने की अद्भुत नस्यों के प्रयोग

(१) राई को सुक्ष्म पीसकर शीशी में सभालकर रखे और आवश्यकता के समय सुंघावे। तत्क्षण दौरा मिट जायगा।

(२) ढाक की जड पानी में घिसकर दौरा के समय नाक में टपकाने से दौरा तुरन्त रुक जाता है।

(३) कडवी तोरी के रस की कुछ बूंदे दौरा के समय नाक में टपकाने से उसी समय दौरा दूर हो जाता है।

(४) ऊदस्लीब की धूनी देने से भी दौरा दूर होता है।

(५) रीठा की छाल सुक्ष्म पीसकर रखे और रोगी को दौरा के समय सुंघावे।

(६) इन्द्रायण का गूदा छाया में सुखाकर पीसकर रखें और दौरा पड़ने के समय रोगी को सुंघावे।

युवकों के साहस को गिराने वाला रोग

समय से पूर्व बालों का सफेद होना

इस नामुराद रोग के कारण हजारो युवक वृद्ध बने हुये दृष्टी गोचर होते हैं बल्कि कई मनुष्य तो युवावस्था में पदार्पण करने से पूर्व ही वृद्धो के समतुल्य हो जाते है।

कारण—वास्तव में तो यह रोग पैतृक हुवा करता है, किन्तु कई बार नजला और जुकाम पैदा करने वाले पदार्थों को निरन्तर सेवन करते रहना, बहु मैथुन, चिन्ता और ज्ञान तंतुओं की निर्बलता आदि से भी बाल बहुत जल्द सफेद हो जाते हैं।

चिन्ह—प्रायः तो यही देखा जाता है कि शनैः २ कुछेक वर्षों में बाल सफैद हो जाते हैं, किन्तु कई उदाहरण ऐसे भी मिलते हैं, जिनसे पता चलता है कि बाजे आदमियो के बाल केवल एक ही मास मे या सप्ताह बल्कि एक ही रात में सफेद होगये।

हमारे प्राचीन पुरुष श्वेत केशो को मृत्यु का सदेश समझा करते थे और जब बाल सफेद हो जाते थे तो वह वानप्रस्थ अथवा सन्यास आश्रम को ग्रहण करके तपश्चर्या मे लग जाते थे। जिससे प्रतीत होता है कि उनका जीवन बहुत ही पवित्र और समतुल होता था, इस लिये निसदेह उनके सफेद बाल मृत्यु संदेशवाहक हुवा करते थे, किन्तु आधुनिक युग मे अनियमित जीवन व्यतीत हो रहा है इस लिये बाल जल्द सफेद हो जाते हैं। बस ! आज कल सफेद बाल मृत्यु संदेश वाहक तो नहीं किन्तु जवानी के शत्रु अवश्य हैं। इस लिये उचित प्रतीत होता है कि नीचे कुछ ऐसे प्रयोग लिखे जावें कि जिनके सेवन से असमय मे ही बालों के सफेद होने से मनुष्य सुरक्षित रहे, तथा ऐसे प्रयोग भी कथन किये जायेगे कि जिनको पथ्य पूर्वक नियमित सेवन करने से न केवल बालो का सफेद होना ही रुक जायगा

बल्कि सफेद बाल पुनः श्याम हो जावेंगे। मगर चूंकि इन प्रयोगों के सेवन काल में पथ्य की आवश्यकता होती है, इस लिये उत्तम यही प्रतीत होता है कि प्रथम उन खाद्य पदार्थों का वर्णन कर दिया जाय कि जिनसे बाल सफेद होते हैं, फिर वह गिजायें बताइ जायें–जिनसे केशों की श्यामता बहुत दिन स्थिर रहती है और बाल सफेद नहीं होने पाते।

वह खाद्य पदार्थ जिनसे बाल सफेद होते हैं

यदि बालों की श्यामता को चिरकाल तक स्थिर रखने की इच्छा हो, यदि सांसारिकता की आनन्द दायक घड़ियों को लम्बा बनाना इच्छित हो तो निम्न लिखित चीजों को कम इस्तेमाल करें। विशेपकर वह महाशय जिनको सदैव नजला या जुकाम रहता हो, वह अवश्य ही परहेज रखें।

दही, छाछ, कच्चा दूध, अचार तथा हर प्रकार की खटाई।

इन उपरोक्त चीजों के अतिरिक्त बहुमैथुन एक बहुत बड़ा दोष है जिससे मनुष्य कुछ ही वर्षों में वृद्धावस्था को प्राप्त हो जाता है अतः इस दोप से सदैव सावधान रहें।

केशों की श्यामता को चिरकाल
स्थिर रखने वाली विधियां

नीचे कुछ ऐसी विधियां अंकित की जाती हैं जिनको क्रियात्मक रूप से व्यवहार में लाने से मनुष्य चिरकाल तक न

केवल बालों की श्यामता बल्कि जवानी को कायम रख सकता है।

बाल धोने की उत्तम दवा

यदि हर तीसरे दिन भी निम्न लिखित विधि से बालों को धोते रहें और उसके बाद कच्चा घानी का सरसों का तैल लगा लिया करें तो निसंदेह केशों की श्यामता दिन प्रति दिन बढती ही रहेगी और बाल चिरकाल तक सफेद न होंगे।

आमले कूटकर रात्रि को मिट्टी के पात्र में भिगोदे और प्रातः काल निथार कर उस पानी से सिर धो लिया करें और फिर कच्ची घानी का सरसों का तैल लगा लिया करें।

स्वास्थ्य और यौवनदाता शाक

आमले इच्छानुसार लेकर रात्रि को पानी में भिगोदें और प्रातः काल उस पानी को गिराकर पुनः पानी डालकर सात बार धोलें और विधि पूर्वक घृत अधिक डालकर शाक बनालें। यदि इस प्रकार आमले का शाक महीने में पांच सात बार सेवन कर लिया जाय तो चिरकाल तक सौन्दर्य और यौवन को स्थिर रखता है। आमाशय को बलबान बनाता है।

कायापलट सन्यासी योग

अक्सीर अहमर

जिसके निरन्तर सेवन से समस्त श्वेत केश पुनः श्याम हो जाते हैं। इस प्रयोग के सम्बन्ध में प्राचीन वैद्यों के भी प्रमाण मिलते हैं, किन्तु इसकी सेवन विधि नहीं बताई गई और यही

कारण है कि लोग लाभान्वित न हो सके। हम यहां सेवन विधि सहित इस प्रयोग को प्रकाशित कर रहे है, आशा है जो सज्जन सपथ्य इसका सेवन करेंगे, उनकी इच्छा अवश्य पूर्ण होगी।

प्रयोग—काही सुर्ख (जिसे युनानी मे जाज अहमर कहते हैं) आवश्यकतानुसार लेकर पीसकर रखलें। बस अक्सीर अहमर या अक्सीर जवानी तैयार है।

सेवन विधि—मात्रा केवल १ खश के दाने के बराबर परांवठे के ग्रास मे लपेटकर खाये और ऊपर से इच्छानुसार परांवठों का ही भोजन करें। हलवा, चूरी; आमले का शाक खा सकते हैं। हर प्रकार की खट्टी चीजो व दही दूध आदि से प्रहेज रखें, विशेष कर मैथुन से खास प्रहेज रखे।

गुण—दो मास सेवन करने से श्वेत बाल गिरने आरम्भ हो जावेंगे, और निरन्तर एक वर्ष सेवन करने से सब श्वेत बाल गिरकर पुनः श्याम केश उत्पन्न हो जावेंगे। दवा के सेवन काल में घृत को अधिक सेवन करना आवश्यक है, किन्तु घृत पचा हुवा होना चाहिये वरना फेफड़े का रोग उत्पन्न होजाने की आशंका रहती है।

चूंकि काही सुर्ख अत्यन्त वमनकारक चीज है इस लिये मात्रा से अधिक कदापि सेवन नहीं करना चाहिये, वरना लाभ के स्थान में हानि होने का अत्यन्त भय है।

रसायन बदन

जिससे केश श्याम होजाने के अतिरिक्त वाजीकरण शक्ति अत्यन्त बढ जाती है।

प्रयोग क्या है, एक अनुपम और दुष्प्राप्य वस्तु है, जिसकी तुलना करना भी सरल नहीं। फिर विशेषता यह है कि बिलकुल कम खरच, जिसमे न लम्बे चौडे बखेड़े की उलझन और ना ही किसी चीज की भस्म बनाने की आवश्यकता। बस! प्रति दिन शीशी से दवा निकाली और इस्तेमाल करली। लोग ऐसे प्रयोगो को बतान के लिये किसी प्रकार राजी नहीं होते और हृदय पट में लिये २ ही शमशान भूमि में जा विराजते हैं। वास्तव में ऐसे प्रयोग पुस्तकों मे छापने योग्य होते भी नहीं बल्कि गुरु मंत्र की भांति ही एक से दूसरे के पास जाने योग्य होते हैं, परंतु इस विचार से कि लोग लाभ उठाकर आशीर्वाद देंगे, हम स्पष्ट रूप से यहां अंकित किये देते हैं। साथ पथ्य और भोजन के विषय में भी स्पष्ट बता देना उचित समझते हैं, ताकि सेवन करने वाले को कोई कठिनाई न पड़े। जो इसे पथ्य पूर्वक सेवन करेंगे, निसंदेह वह अपनी इच्छा पूर्ण करेंगे। इतना संकेत ही पर्याप्त है।

प्रयोग—मगज माल कंगनी (जो छिलको रहित करके साफ कर लिये गये हो) इच्छानुसार लेकर एक बोतल में बन्द करके सुदृढ कार्क लगाकर रखें। बस, दवा तैयार है।

सेवन विधि—प्रथम दिवस प्रातःकाल ईश्वर का नाम लेकर तीन दाने साबित ही पानी की घूंट से निगललें और दूसरे दिन चार तथा तीसरे दिन पांच इसी प्रकार प्रति दिन एक २ दाना बढाते २ तेरह तक पहुँचादें और फिर तेरह दाने ही प्रति-दिन ताजा पानी की घूंट के साथ सेवन करते रहे। इसी प्रकार निरन्तर एक वर्ष तक सेवन करने से लाभ आपको स्वयं ही विदित हो जावेगे और आप कह उठेगे कि निसन्देह उस जग-न्नियताने इस वस्तु में अपूर्व गुण भर दिये है।

गुण—निरन्तर ६ मास के सेवन से सफेद बाल फिरसे काले हो जाते हैं और वाजीकरण शक्ति अत्यन्त बढ जाती है और स्मर्ण शक्ति मे तो इतनी अधिक उन्नति हो जाती है कि पृष्टों के पृष्ट एक बार पढ लेने से याद हो जाते हैं। वर्षों की भूली बाते याद आने लगती हैं और चैहरा लाल सुर्ख हो जाता है।

भोजन—गेहूँ या बेसनी रोटी व मूंग, मोठ या चने की दाल अथवा मैथी का शाक खा सकते हैं। घी प्रत्येक चीज मे खूब मिलाया जाना आवश्यक है। जो मासाहारी हो वह तीतर, बटेर, मुर्ग का मास खा सकते हैं। यदि कभी मिठाई खाने को जी चाहे तो जलेबी या खांड का अधिक घी वाला हलवा भी खा सकते है।

उप्रोक्त जो खाद्य पदार्थ बताये गये हैं उनके अतिरिक्त

और कोई वस्तु न खानी चाहिये और औषधि के सेवन काल में मैथुन बिलकुल न किया जाय, वरना सब परिश्रम निष्फल हो जायगा। विचारों का पवित्र रखें ताकि स्वप्नदोष न होने पाये। तमाम बाते स्पष्ट लिखदी है। अब लाभ उठाना या न उठाना आपका काम हे। जो महाशय अपने ऊपर कन्ट्रोल रख सकें और वासना के दास नहो, वह अवश्य सेवन करके लाभ उठाये।

एक अमूल्य प्रयोग

जो कि बालों को सफेद होने से रोकता है और अनन्त गुण प्रकट प्रकट करता है

यह निर्विवाद सिद्ध है कि कई बूटियां वास्तव में अकसीर और रसायन बदन होती है, जिनके सेवन से शरीर के अनेक रोग मिटकर देह निर्मल हो जाती है। जिस बूटी का मैं कथन करने लगा हूॅ उसे "मुंडी" बूटी कहते हैं। इस बूटी के अनन्त गुणों पर एक पृथक पुस्तक लिखी जासकती ह। चूंकि जड़ी बूटी पर हम "भारतीय जड़ी बूटी" नामक पुस्तक लिख चुके हैं और दूसरे भाग का सिलसिला जारी है इस लिये विशेष न लिखकर यहां केवल वही दो तीन प्रयोग लिखेगे, जो इस पुस्तक से सम्बन्धित है। मै वायदा करता हूॅ कि यदि ईश्वर की कृपा रही तो न केवल भारतीय जड़ी बूटी का दूसरा भाग बल्कि "मुंडी गुण विधान" में समस्त प्रयोग तथा गुणो का वर्णन

करदूंगा। जैसा कि प्राचीन हकीमों का विश्वास है कि मूंडी बूटी की जड़ में अमृत है, इस पर भी प्रकाश डालूंगा।

चूर्ण जवानी

मुंडी बूटी के पुष्प जब पक जावें तब छाया में सुखाकर शीशी में सुरक्षित रखें। मात्रा ३ माशा ताजा जल के साथ प्रति दिन प्रात काल सेवन करें। इसी प्रकार यदि निरन्तर छ मास सेवन कर लिया जावे तो आयु पर्यन्त बाल सफेद न होंगे। जवानी स्थिर रहेगी। दृष्टी में किसी प्रकार का अंतर न आयेगा। सेवन काल में घृत को अधिक सेवन करें क्यों कि इसमें खुश्की अधिक है।

चूर्ण जवानी का द्वितीय योग

यह प्रयोग पूर्वोक्त प्रयोग से अधिक बलवान है, किन्तु कम बनता है। कारण मुंडी बूटी के ऐसे पौदे कम मिलते हैं, जिसमें फूल न निकले हों। दूसरा कारण यह भी है कि मुंडी बूटी उगते ही फूल निकाल लेती है, किन्तु खोज करने वाले बिना पुष्प के पौदे भी ढूंढ सकते हैं। अप्राप्य नहीं हैं।

प्रयोग—बिना पुष्प की मुंडी बूटी की जड़ों को एकत्र करके छाया में सुखाले और सूखने पर कूटकर चूर्ण बनालें। बस दवा तैयार है। शीशायों में सुरक्षित रखे।

सेवन विधि—मात्रा केवल २॥ माशा प्रति दिन ताजा जल के साथ निरन्तर एक साल पर्यन्त सेवन करना उचित है।

गुण—दृष्टी, मस्तिष्क, पाचनशक्ति मे असाधारण उन्नति हो जाती है और बड़ी विशेषता यह है कि आयु पर्यन्त बाल श्वेत नही होने पाते। बाजीकरण शक्ति खूब बढ जाती है। अनुभव कर देखे।

भंगरा का चमत्कार

भारतीय वैद्य और हकीम इस विषय पर सहमत है कि भंगरा एक ऐसी बूटी है, जिसके निरन्तर सेवन से समय मे पहिले बालो का सफेद होना रुक जाता है। वैद्यक ग्रन्थों मे इसके अनन्त प्रयोग मिलते है। हम भी यहां वह प्रयोग अंकित करते हैं, जो हमे सब से अधिक प्रभावशाली प्रतीत हुये है।

प्रयोग—आवश्यकतानुसार आमले लेकर किसी चीनी के पात्र मे डाले और ऊपर से भंगरे का रस इतना डाले कि आमले उसमे डूब जावे। इसी प्रकार सात भावनादे और फिर सूखने पर सुक्ष्म पीसकर शीशी मे सुरक्षित रखे।

मात्रा ३ माशा प्रतिदिन ताजा जल के साथ सेवन करे। इसके सेवन सफैद बाल शीघ्र ही श्याम हो जाते हैं।

हरीतकी का सेवन ।

आयुर्वेदिक ग्रन्थो मे लिखा है कि भगवान धन्वन्तरी जब समुद्र से निकले तो उनकी मुट्ठी मे भारतीय रसायन औषधि हरितकी (हरड) पकड़ी हुई थी। अन्य रोगो के लिये जहा हरड़ अक्सीर है, वहां, असमय में बालो के सफेद होने, नेत्र तथा आमाशय के लिये तो अनुपम वस्तु है, किन्तु इसके सम्पूर्ण गुण प्राप्त करने के लिये इसका निरन्तर सेवन करना अत्यावश्यक है। नीचे इसकी मासिक सेवन विधि लिखी जाती है।

विधि—जेष्ठ और आषाढ़ मासमे इसका ४ माशा चूर्ण गुड़मे मिलाकर सेवन करे। श्रावण और भाद्रपद मास में हरड़ के ४ माशा चूर्ण मे १ माशा सैन्धव नमक मिलाकर दें। आसोज और कार्तिक मास में ४ माशा हरड़ का चूर्ण समभाग खांड मे मिलाकर दे। मार्गशीर्ष व पौष मास मे ४ माशा हरड़ का चूर्ण और १ माशा सौठ का चूर्ण मिलाकर सेवन कराये। माघ और फाल्गुण में हड़ का ४ माशा चूर्ण, लौग के चूर्ण १ माशा के साथ सेवन करायें। चैत्र और वैशाख मास मे हरड़ का चूर्ण ४ माशा की मात्रायें शुद्ध मधु (शहद) ४ माशा मिलाकर दे।

गुण—ग्रन्थकारो ने लिखा है कि प्रथम मास में शरीर का आलस्य दूर होता है, द्वितीय मास मे शरीर से अधिकांश रोग दूर हो जाते हैं, तीसरे मास आंखो मे ज्योति उत्पन्न हो जाती है, चौथे मास हृदय की निर्बलता दूर हो जाती है, पाचवे मास

मस्तिष्क शक्ति और विवेक-शक्ति बढ़ जाती है, छठे मास में वाजीकरण शक्ति उत्पन्न होती है,सातवें मासमें बुद्धि तीव्र होती है। आठवे मास मे समर्ण-शक्ति तेज हो जाती है। नवें मास में दिन में तारे दृष्टिगोचर होने लगते हैं। दसवे मास में श्वेत केश काले हो जावेंगे, ग्यारहवे मास में त्रिकालदर्शी बनता है और बारहवें मास में सिद्ध पुरुष बन जाता है।

नेत्र रोग

यद्यपि नेत्र रोग तो अनेक हैं, तथापि उन रोगों का ही कथन करते हैं जो साधारणतया देखने में आते हैं, और इसमें दृष्टि की शक्ति कैसे उत्पन्न होती है और नेत्रो के भीतर ही प्रकृति की कैसी २ अद्भुत लीलाये पिनहां हैं, इसको मालूम करने के लिये "अनुभूत योग चिन्तामणि" के पृष्ठों को उलट कर देखिये। यहां केवल एक नियम का वर्णन कर देना प्रयाप्त समझता हूँ, कि वह रोगी–जो किसी प्रकार के भी नेत्र रोग से पीड़ित हो, उसके कब्ज (कोष्ठबद्धता) कदापि न होने देनी चाहिये, वरना लाभ न होगा। कोष्टबद्धता निवारक प्रयोग देखने के लिये इसी पुस्तक का कोष्टबद्धता सम्बन्धी प्रकरण देखें।

नेत्रों की लाली ।

(आश्चर्यजनक चुटकुले)

इस रोग के उत्तमोत्तम प्रयोगो का वर्णन करने से पूर्व हमें यह अत्यावश्यक प्रतीत होता है, कि स्वास्थ्य रक्षा के एक प्रयोग का कथन करदें, ताकि वह महाशय जो प्राय: ही इस दुष्ट रोग मे ग्रसित रहते हैं, ईश्वर की कृपा से वह सुरक्षित रहेगे । यद्यपि यह प्रयोग इससे पूर्व हम अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "अनुभूत योग चिन्तामणी" में भी प्रकाशित कर चुके हैं तथापि आवश्यक और एकौषधि होने के कारण इस पुस्तक मे भी लिखे देते हैं । प्रयोग अनेक वार का अनुभूत और रामबाण है । जो महाशय परीक्षा करेंगे वह प्रसन्न होगे ।

जिन लोगो के नेत्र साल या छः मास बाद प्राय: दुखते रहते हैं, या जो महाशय चाहे कि हम नेत्र पीड़ा से सुरक्षित रहे, उनके लिये अद्भुत भेट है ।

प्रयोग—मुंडी बूटी के पुष्प इच्छानुसार लेलें और बिना पानी की सहायता से उसे निगल ले । यदि आप एक फूल निगल लेंगे तो एक वर्ष और यदि दो फूल निगल लेगे तो दो वर्ष, इसी प्रकार क्रमशः जितने फूल निगलेगे उतने ही वर्ष तक आंखे कदापि न दुखेंगी ।

———

नेत्रों की लाली पर अक्सीर गुटी ।

(जो कुक्करे और नेत्रस्राव के लिये भी अक्सीर है)

निम्नलिखित गोलियां बनाकर तैयार रखें और नेत्र सम्बन्धी रोगियो में बांट कर पुण्य के भागी बनें । क्योंकि पैसा आपका भी खर्च न होगा ।

प्रयोग—हरे आंवलों का रस निकाल कर कलई की हुई देगची मे डाले और मन्द मन्द अग्नि पर पकाकर गाढ़ा करलें । जब खूब गाढ़ा हो जावे तो उतार कर शीतल करके लम्बी लम्बी गोलियां बनालें और आवश्यकता के समय गोली का एक सिरा पानी में तर करके आंख में लगावे या गोली को घिस कर सलाई से नेत्रो मे लगावे । एक दो बार के लगाने से आराम हो जायगा। अत्यन्त आश्चर्यजनक **प्रयोग** है ।

आश्चर्यजनक टोटका ।

मेंहदी के हरे पत्तो को कूटकर टिकिया बनाले और रात्रि को सोते समय रोगी की गुदा पर टिकिया रखकर ऊपर लंगोट बधवादे । इसके लगाने से ईश्वर की कृपा से प्रातःकाल लाली आदि सब दूर हो जावेगी ।

फोला ।

नेत्रविन्दु के ऊपर सफेद चिन्ह पड़ जाने को फारसी में

गुलचश्म और साधारणतया फुली या फोला कहते हैं । बालकों के यदि यह रोग हो जावे तो इसकी चिकित्सा सरलता पूर्वक की जा सकती है किन्तु युवावस्था या वृद्धावस्था के लोगों का फोला कठिनता से मिटता है। रसायन फार्मेसी मे एक ऐसी दवा है जिससे किसी प्रकार का और किसी आयु मे फोला क्यों न हो शर्तिया मिट जाता है मगर उस योग का इस पुस्तक से कोई सम्बन्ध नही इसलिये यहां कतिपय ऐसे प्रयोग अंकित किये जाते है, जिनका रामबाण सिद्ध होने के अतिरिक्त अकौषधि से सम्बन्ध है । हां ! यह न भूलना चाहिये कि जो फोला चेचक (शीतला) के कारण से बढ़ जावे उसकी चिकित्सा अत्यन्त कठिन है । कई वैद्य तो इसे असाध्य बता देते हैं, किन्तु यह सत्य नही है, कई दशाओ मे चेचक के फोले का इलाज भी हो जाता है, जब कि फोला पड़े को अधिक समय न हुवा हो और देखने की शक्ति बिलकुल नष्ट न हो गई हो तो ऐसी दशा में इसकी चिकित्सा में लाभ होता है ।

चेचक के फोले का विशेष प्रयोग ।

हाथी के नाखून (नख) का एक टुकड़ा लेकर सात दिवस पर्य्यन्त सिरस के रस मे भिगो रखें परन्तु प्रति दिन रस नया बदल देना उचित है । तद्पश्चात् एक दिन कूप जल में भिगोकर रखें और प्रतिदिन कुछ बून्दें पानी की पत्थर पर डालकर घिसें और सलाई से नेत्रो मे लगाया करे ।

द्वितीय प्रयोग ।

गधे का दान्त मिल जाय तो उसे शीशी में डालकर सुरक्षित रखें और आवश्यकता के समय वर्षा के जल में घिसकर सलाई से लगावें । ईश्वर की दया से चेचक का फोला भी दूर हो जावेगा ।

फोले का अद्भुत सुरमा ।

(जो न केवल साधारण फोले को बल्कि चेचक के नये फोले को भी मिटा कर साफ कर देता है ।)

रीठे के बीज की गिरी ३ माशा लेकर खरल मे पीसले, और उसकी रंगत को बदलने एव उसकी आर्द्रता को शोषण करने के लिये श्याम सुरमा ६ माशा मिलाकर खूब सूक्ष्म पीसलें, बस अनुपम सुरमा तैयार है ।

सेवन विधि—रात्रि को सोते समय परमात्मा का नाम लेकर तीन सलाई लगवाया करें ।

गुण—साधारणतया हर प्रकार के फोले को और विशेषकर चेचक के फोले को लाभदायक है ।

सुलेमानी वटी ।

जिसका प्रयोग पुस्तक के अन्त में 'परिशिष्ट मे छापा गया है । यह गोलियां भी हर प्रकार के फोले को अत्यन्त लाभदायक

हैं। आवश्यकता के समय एक गोली नींबू के रस में या बरसात के पानी में घिसकर सलाई से लगवाया करें। नेत्र के फोले को अतीव गुणकारी है और अनेकवार की अनुभूत है।

बीस वर्षीय फोला की चिकित्सा।

चाहे फोला कितना ही पुराना हो, निम्नलिखित टोटके से अवश्य आराम हो जाता है।

प्रयोग—बारहसींगे का सींग स्त्री के दुग्ध में घिसकर एक सलाई रात्रि को लगाते रहने से पुराने से पुराना फोला भी दूर हो जाता है।

पथ्य—दूध, दही, चावल, प्याज, लहसुन, बैंगन आदि।

पथ्य भोजन—शीघ्र पचने वाली, मूंग की दाल, गेहूँ का फुलका, दूध डबल रोटी आदि।

रतौंधा।

रतौंधा के रोगी को रात्रि के समय दिखाई नही देता। यह रोग या तो पैतृक होता है या शीतल वस्तुओं के अधिक इस्तेमाल से होजाता है, इस लिये गर्मियों की अपेक्षा सर्दियों मे इस रोग का अधिक आक्रमण होता है।

——:०:——

आश्चर्यजनक योग ।

यह आश्चर्यजनक योग हमे अपने मित्र जनाब अब्दुल-वकील साहिब से प्राप्त हुआ था । इस रोग के चिकित्सक को उचित है कि प्रयोग का भेद रोगी पर प्रकट न होने दे और यथा सम्भव इस भेद को गुप्त रखना उचित है ।

प्रयोग—रोगी के कान की मैल किसी बहाने से निकलवाले और अल्पमात्रा मे सलाई पर लगाकर रोगी के नेत्रो में लगावे । बस ! ईश्वर ने चाहा तो प्रथम दिवस ही वरना दो तीनबार के इस्तेमाल से रोग का चिन्ह भी शेष न रहेगा । अब आप स्वयं ही न्याय करे कि प्रयोग के आश्चर्यजनक होने में क्या सन्देह है ?

यवनानी इलाज ।

बकरी की कलेजी को आग पर रख कर गरम करे, जब इसमें से रतूबत सी निकलने लगे तो उसे नेत्रों मे लगावे और कलेजी को भूनकर रोगी को खिलावे । दो तीन दिन में ही आराम हो जावेगा ।

सरदार साहिब का रहस्य ।

एकबार फतेहाबाद तहसील मे रतौंधी का रोग इतना अधिक फैला कि जिसे देखो, वही प्राज्ञचक्षु बने दृष्टिगोचर होते हैं । ऐसे नाजुक अवसर पर एक सरदार साहिब मसीहा बनकर

उतरे। आप वैद्य तो नही थे मगर इस रोग के विशेष चिकित्सक सिद्ध हुये, क्योंकि आपकी दवाकी एकही सलाई से आराम हो जाता था।

चूंकि यह प्रयोग किसी प्रकार मुझे मालूम हो गया था, जिसे ज्यो का त्यो नीचे लिखे देते हैं। रतौंधा की उत्तम दवा है। जिसे एक दिन मे लाभ न हो वह दो तीन दिन तक इस्तेमाल करें।

प्रयोग—देशी तमाखू को सूक्ष्म पीसकर नस्य बनालें और शीशी मे सुरक्षित रखें। एक सलाई भर कर रोगी की आंखो मे लगादे। थोड़ी देर चुभेगी अवश्य, किन्तु रोगी को आराम हो जावेगा।

पलाण्डू का चमत्कार।

यह प्रयोग जितना सरल है उतना ही गुणकारी भी है। कईबार तो रोगी इस दवा को सेवन करने के पश्चात् तुरन्त ही स्वस्थ होकर स्वयं चला जाता है।

रतौंधे का कोई रोगी जब आपके पास आये तब उसी समय प्याज को निचोड़ कर उसका रस निकालें और एक एक बून्द आंखो मे डालदें। बस! उसी क्षण आराम हो जावेगा।

नेत्रों से पानी जारी रहना।

यदि नेत्रो से पानी बहते रहने का कारण पड़बाल या कुक्करे न हों तो निम्नलिखित प्रयोग से लाभ उठाइये।

खाने का योग।

बादाम की मींगी २१ प्रतिदिन खिला दिया करें, ईश्वर ने चाहा तो २१ दिन के सेवन से दिमाग ताकतवर हो जावेगा तथा नेत्रों से पानी बहना नितान्त बन्द हो जावेगा और यहां तक कि जंभाई लेने से भी न आवेगा।

लाभदायक चुटकला।

नेत्रों से बहते पानी को बन्द करने के लिये कान की मैल वाला आश्चर्यजनक योग भी बहुत लाभदायक है किन्तु यथा सम्भव रोगी से गुप्त रखकर इस्तेमाल करावें।

मदनी हकीम का योग।

केवल काले सुरमे को सूक्ष्म पीसकर नेत्रों मे लगाने से बहते पानी को आराम हो जाता है।

नेत्र कण्डू।

यदि नेत्रो में खारिश होती हो और पलको के बाल गिरने आरंभ हो गये हो तो ऐसे रोगीके लिये निम्नलिखित योग बहुत ही गुणकारी सिद्ध होता है।

अनेक बार का परीक्षित योग।

छालिया (सुपारी) को कांसी के पात्र मे गाय की छाछ कुछ

बून्दें डालकर घिसें और सलाई द्वारा नेत्रो में लगाया करें। नेत्र-कण्डू के लिये अक्सीर है।

तत्काल चमत्कार दिखाने वाला चुटकला।

हुक्के के नेचे की मैल को, जिसे हुक्के का मक्कू भी कहते हैं—लेकर शीशी में सुरक्षित रखें और आवश्यकता के समय पानी में हल करके अत्याल्प मात्रा में सलाई से नेत्रो में लगावें। एकबार तो बहुत चुभेगा किन्तु तत्क्षण अपना चमत्कार दिखायेगा।

अक्सीर राख।

हरमल की शाखाओ को छाया मे सुखाकर जलाले, और सुरमें की भान्ति सूक्ष्म पीसकर रखें तथा प्रातःकाल और रात्रि को सोते समय तीन २ सलाई नेत्रो मे लगाया करे। रोग का चिन्ह भी न रहेगा।

नोट—नेत्र रोगो मे बादी और देर मे हजम होने वाली वस्तुओ से परहेज रखें। यदि कब्ज हो जावे तो तत्काल कब्ज खोलने का उपाय करे।

———

कान और नाक के रोग ।

कर्ण और नासिका दोनों ही मनुष्य शरीर के अत्यावश्यक अंग हैं । यदि एकाग्र चित्त से इनके महत्व पर विचार किया जावे तो इनकी वास्तविक सेवाओ का पता चलता है । उदाहरण स्वरूप यदि कानो की श्रवण-शक्ति में दोष उत्पन्न हो जावे तो मनुष्य के लिये संसार निरस हो जाता है । चूंकि इस पुस्तक का विषय वैद्यक से सम्बन्ध रखता है, इसलिये इन बातो को छोड़कर कुछेक कर्ण रोगो सम्बन्धी चिकित्सा का वर्णन किया जाता है ।

कर्ण पीड़ा ।

मस्तिष्क के निकट होने से कर्ण पीड़ा का रोग अत्यन्त भयानक होता है । कई बार तो इसी के कारण से ऐसे २ रोगो मे ग्रसित होना पड़ता है कि जिनका नाम सुनते ही हृदय कांप उठता है ।

कर्ण रोग सम्बन्धी उत्तमोत्तम योग' अनुभूत योग चिन्ता-मणी" फिटकड़ी गुण-विधान, पलाण्डू गुण-विधान आदि मे प्रकाशित कर चुके हैं । अब शेष योगों मे से जो योग इस पुस्तक में अंकित करने योग्य थे, वह निम्नलिखित हैं । इन सब से पहले

एक ऐसे प्रयोग का कथन किया जाता है, जो न केवल कर्ण पीड़ा, बल्कि बहिरापन, (वधिरता) कर्णश्राव तथा अन्याय कर्ण रोगों के लिये अत्युत्तम हैं।

कर्ण रोगों का अक्सीरी तैल।

सरसों का आध पाव तैल लेकर कलईदार बर्तन में डाल कर मन्द २ अग्नि पर पकावे। जब वह कड़कड़ाने लगे तो उसमे रतनजोत एक तोला डालदे, और फिर इतना पकावे कि रतनजोत जल जावे। फिर शीतल होने पर छानकर शीशी मे सुरक्षित रखें। लाल रंग का अक्सीरी तैल तैयार हो गया। आवश्यकता के समय समोष्ण करके दो तीन बून्द कान मे डाला करे। कर्ण-पीड़ा, बहरापन, कर्णश्राव को लाभदायक है।

कोड़ी से हीरे।

पीत वर्ण की कपर्दिकाये लेकर दहकते हुये कोयलो की आग पर डाल दे, और अग्नि शीतल होने पर निकाल ले। यद्यपि प्रत्यक्ष मे यह कौड़ियो की भस्म है किन्तु गुणो मे हीरे से अधिक लाभकारी सिद्ध होगी। इनको पीसकर शीशी मे सुरक्षित रखें और आवश्यकता के समय १ रत्ती दवा कान मे डालकर ऊपर से नीम्बू का रस निचोड दे, ताकि रस की कुछ बून्दे कान मे चली जावें। कान मे पहुँचते ही दवा मे जोश आयेगा और कई प्रकार की आवाजे सुनाई देगी। जब जोश शान्त हो जावे तो

कान को उलट कर दवा निकाल दो और रुई से साफ करदो। उसी समय कर्ण पीड़ा मिट जायगी।

लीद में मोती।

गधे की ताजा लीद को कपड़े से से निचोड़ कर पानी निकाले और समोष्ण करके दो तीन बून्द कान मे डालदे। इससे तड़पते हुये रोगी को चैन पड़ जायगा। इसी विचार से लीद में मोती लिखा गया है।

कर्णश्राव।

कान से पीप आना—जब कान की फुन्सी या शोथ पक कर फूट जाता है तब इसको कुर्रा या नासूर कहते हैं। कान से पीप बहती रहती है और जब जरा बन्द हो जावे तो पीड़ा मे अधिकता हो जाती है। कभी कभी क्षत कान की........भीतरी गहराई मे हो जाने के कारण से सिर में चक्कर से आने लगते हैं।

चेतावनी—कईबार चिकित्सा में लापरवाही करने से सरसाम हो जाता है इसलिये चिकित्सा कराने मे आलस्य न करना चाहिये।

चिकित्सा।

डाक्टरी में इसकी सफल चिकित्सा नही देखी गई। कई बार तो रोगियो को निरन्तर साल भर तक इलाज कराते और

पिचकारिया लगवाते देखा है लेकिन पीप बन्द न हुई। हां, आयुर्वेदिक और यूनानी में ऐसे कई प्रयोग मिलते हैं, जो ईश्वर की कृपा से अत्यन्त ही लाभदायक सिद्ध हुये है। अनुभूत योग चिन्तामणि फिटकड़ी गुण-विधान, बबूल गुण-विधान मे जिन प्रयोगो का कथन कर दिया है, उनको दोहराने की आवश्यकता नही, तथापि वह एक दो प्रयोग—जो अब तक इन पुस्तको के पृष्ठों की शोभा नही बने हैं—निम्नलिखित हैं।

एक यात्री मित्र का प्रयोग।

(दीवान बोधाराम गोल्डमेडलिस्ट)

सुहागा भुना हुआ सूक्ष्म पीसकर एक रत्ती की मात्रा में कान में डालकर ऊपर मे ताजा नीम्बू का रस निचोड़ दे या सिरका समोष्ण करके कुछ बून्दें कान में डाला करे। कुछ दिन मे आराम हो जावेगा। अनुभूत है।

पुनः

कर्ण रोगो का अक्सीरी तैल (जिसका वर्णन पहिले हो चुका है) इस रोग के लिये गुणकारी है।

नकसीर फूटना।

नाक की रगे रक्त से भर कर फट जाती हैं। इसके अनेक कारण हैं जिन सबको यहा वर्णन करने की गुंजाइश नही है। हा! साधारणतया युवती स्त्रियो और लडकियों को मासिक ऋतु

आने से पूर्व कभी २ नकसीर फूट आया करती है और इसी प्रकार ज्वरो मे भी प्राय: फूट आती है।

नोट—तीव्र ज्वर और नमोनियां के रोगी की नक्सीर फूटना स्वस्थ होने का चिन्ह समझना चाहिये, अतएव इसे बन्द करने की चेष्टा न करनी चाहिये और यदि शोणित श्याम-वर्ण का निकल रहा हो तो उसे भी बन्द न करना चाहिये, अलबत्ता जब आवश्यकता से अधिक रक्त निकलने लगे तो फिर बन्द करने मे आलस्य न करे।

शर्बत का प्रयोग।

अंजबार की जड़ २ तोला कूटकर रात्रि को सेर भर पानी में भिगोदे और प्रातःकाल अग्नि पर पकावें। पकते २ जब आधा पानी जल जावे तो उतार कर छानलें और उसमे आधसेर मिश्री मिलाकर नियमानुसार शर्बत बनालें।

सेवन विधि—तीन तोला शर्बत पानी मे मिलाकर दिन मे तीनबार सेवन करना उचित है।

गुण—यह न केवल नकसीर व रक्त हर प्रकार के बहते हुये खून को बन्द करने मे अनेकवार का अनुभूत है।

नोट—यदि शर्बत के साथ १ माशा कहर्बा का चूर्ण दे दिया जावे तो बस! रामबाण बन जाता है, और कुछ दिनो के सेवन से रोग बिलकुल निर्मूल हो जाता है।

अक्सीरी मालिश ।

गधी का दूध इच्छानुसार लेकर रोगी के सिर पर मालिश किया करें, ताकि रोगी का सिर दो घण्टे दूध से गीला रहे। छः सात दिनकी निरन्तर मालिशसे रक्त फिर नही आयेगा । अत्यन्त गुणकारी प्रयोग है। किन्तु दूध हरबार ताजा ले।

तत्कालीन प्रभावक नस्य ।

(१) ऊटनी के छोटे बच्चे के बाल लेकर जलाले और आवश्यकता के समय सुंघायें, तत्क्षण बहता हुआ शोणित रुक जायगा । पूज्य पिता जी के विशेष योगों मे से एक है।

(२) तुलसी के पत्तो की नस्य लेने से नकसीर का खून तत्काल बन्द हो जाता है।

(३) सियालकोटी कागज की राख की नस्य देने से दो मिनट मे नकसीर बन्द हो जाती है।

घातक नक्सीर ।

यह बहुत ही बुरी किस्म की नक्सीर होती है, ईश्वर इससे बचाये रखे। इसका खून किसी प्रकार बन्द होने में ही नहीं आता। वैद्य तो इलाज करते २ थक जाते हैं, किन्तु खून बराबर जारी रहता है और देखते २ रोगी सबको बिलकता छोड़कर सुर-पुर सिधार जाता है। इस रोग के लिये हमें हकीम शाह अ० अ०

नागपुरी ने अपना विशेष खानदानी नुसखा भेंट किया है, जिसको अभी तक सिवाय हकीम साहिब के कुटुम्बीजनों के और कोई नही जानता और मैं भी अपने स्वाध्याय के आधार पर कह सकता हूँ कि यह प्रयोग सम्भवतः अभी तक किसी वैद्यक पत्र या पुस्तक के पृष्ठो की शोभा नहीं बना, बल्कि हकीम साहिब के खानदान मे ही चला आता है।

प्रयोग—सफेद कांच आवश्यकतानुसार लेकर लोहे के हमामदस्ते में कूटें और फिर लोहे की कड़हाई में डालकर लोहे के हथोड़े से विशुद्ध सिरका मिलाकर खरल करते रहे, यहां तक कि सूक्ष्म लेप तैयार हो जावे। फिर रोगी के तालू के बाल मुंडवाकर ऊपर लेप करदे और मलमल के साफ कपड़े को सिरके में तर करके लेप के ऊपर रखें। जब कपड़ा खुश्क होने लगे तो और सिरका डालकर तर करदे। ईश्वर ने चाहा तो रक्त अवश्य बन्द हो जावेगा और फिर आयु पर्यन्त इस प्रकार कभी जारी न होगा।

नोट—यह प्रयोग उस समय अक्सीर सिद्ध होता है, जब कि नासिका मार्ग से रक्त बहुत अधिकता से बहता हो, और यदि नाक को बन्द कर दिया जावे तो मुख द्वारा सेरो खून निकलने लगे।

अशुभ चिन्ह।

वृद्धावस्था मे नक्सीर का आना, सिर पर चोट लगने

व क्षत से नकसीर का फूटना अत्यन्त भयानक होता है।

यदि तेज बुखार और नमोनियां में नकसीर फूटे तो उसको बन्द न करे क्योंकि यह स्वस्थ होने का चिन्ह है, हां यदि रक्त अधिक आये तो अवश्य बन्द करदें, वरना नहीं।

पथ्य—धूप में फिरने से, आग के पास बैठने से तथा गरम वस्तुओ एवं गुड़, शक्कर के इस्तेमाल से परहेज रखें।

भोजन—ठण्डी सब्जी, शाक, तरबूज, यव के सत्तु आदि।



दन्त रोग

दांत भी ईश्वर प्रदत्त अमूल्य भेट है । यदि दांतो को अच्छी तरह साफ रखा जावे तो मनुष्य अनेक रोगों के आक्रमण से सुरक्षित रहता है । दांतों की शुद्धता के लिये अनेक प्रकार के मंजन और टूथ पाउडरो का अविष्कार हो चुका है, किन्तु वास्तव में देखा जाय तो दान्त सम्बन्धी रोगो से बचने के लिये दान्तुन से उत्तम दूसरी और कोई वस्तु आज तक मालूम नही हो सकी और न ही होगी । इसीलिये हमारे प्राचीन ग्रन्थों और शास्त्रकारों ने नैतिक कर्म मे दन्त-धावन को विशेष महत्व दिया है । यह बताने के लिये कि दांतो को शुद्ध रखने से बड़े २ असाध्य रोग भी किस प्रकार नष्ट हो जाते हैं— एक पृथक पुस्तक लिखने की आवश्यकता है, इसलिये केवल दातुन करने के आग्रह को पुनरोक्त करके अपने विषय पर आता हूँ । हां यदि मेरे विचारो का छाया चित्र देखना अभिष्ट हो तो "अनुभूत योग-चिन्तामणी" प्रथम भाग में से दन्त-रोग और दांत क्या हैं—शीर्षक लेख को पढ़ जाइये ।

——:•:——

दाढ़ की पीड़ा ।

दाढ़ की पीड़ा अति दुःखदाई होती है, जिसका कारण दाढ़ मे कीड़ा लग जाना बतलाया जाता है । जिस दाढ़ मे कीड़ा लगा होता है उसमे छिद्र हो जाता है और दाढ़ मे प्रायः पीड़ा रहा करती है । प्रथम इन कीड़ों को निकालनेके दो.तीन उपायो को लिख कर फिर पीड़ा की चिकित्सा लिखेंगे ।

दांतों से कीड़े निकालने के कुछेक योग ।

प्रथम उपाय ।

भटकटाई अर्थात् छमक निमोली या छोटी कटेरी के बीज दांतो के कीड़े निकालने के लिये अद्वितीय औषधि सिद्ध हुई है । विधि यह है. कि आवश्यकता के समय कुछ दहकते हुये कोयले लेकर उन पर उपरोक्त बीज डालकर ऊपर एक ऐसा बर्तन ढकदे, (मिट्टी की हाडी आदि) जिसके पैदे मे छिद्र हो । जब उस छिद्र मे से बीजो का धुवां निकलने लगे तो उस पर हुक्के की नय या कोई नलकी का एक सिरा लगाकर दूसरा सिरा दाढ़ के छिद्र पर लगादे, ताकि धुवा अच्छी तरह लगता रहे । इस धूवे से कीड़े निकल कर नीचे गिरते जायेंगे । जब धूवां कम हो जावे तो बीज और डालदे । इस क्रिया को देर तक जारी रखें ताकि सब कृमी निकल जावे । इस विधि से कृमी निकल जाने के बाद फिर दाढ़ मे पीड़ा न होगी।

कृमी निवारक पोटलियां ।

(जो कि बारीक २ कृमियों से लिपटी हुई निकलती है)

वायवडिंग को जौ कुट करके बहुत छोटी २ वायवडिंग के दाने के समान साफ मलमल के वस्त्र में पोटलियां बांधलें और इन सब पोटलियों को दस तोला पानी मे डाल कर जोश दे। पकते २ जब सब पानी उन पोटलियों में ही शोष्ण हो जावे तो उनमे से गरमागरम पोटली लेकर दाढ मे दबाकर सो रहे और प्रातःकाल उठने पर पोटली को निकाल कर देखे, कृमियो से लिपटी हुई निकलेंगी। इसी प्रकार दूसरी रात्रि को भी यही क्रिया करे। ईश्वर कृपा से समस्त कृमी निकलकर आराम हो जावेगा।

नोट—बायबडिंग की भान्ति तुख्मआरतग की पोटलियो से भी यही लाभ होता है।

अकसीरी फुरेरी ।

विशुद्ध तारपीन के तैल में रुई की फुरेरी तर करके पीड़ित दांत पर लगाने से ईश्वर की दया से अति शीघ्र आराम हो जाता है। अनेक बार का अनुभूत योग है।

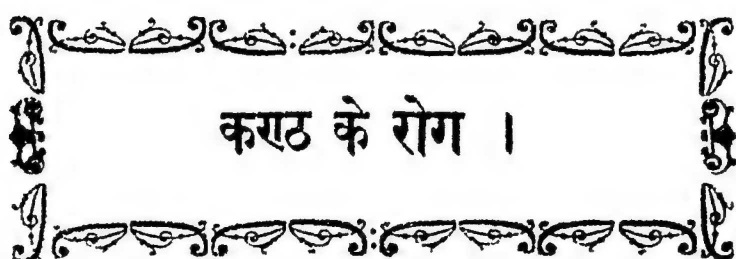
सन्यासी चिकित्सा ।

जिस ओर की दाढ़ में दर्द हो उसके विपरीत ओर के कान में लाल मिरचें पानी में पीसकर समोष्ण करके डालने से

तत्क्षण पीड़ा शान्त हो जावेगी, किन्तु कान मे दर्द होने लगेगा, जिसको दूर करने का सरल उपाय यह है कि घृत को समोष्ण कर के कुछ बून्दे कान में डाले ।

नाक में दवा डालने दाढ़ की पीड़ा दूर ।

कलमी शोरा पानी में हल करके दोनो नथनो मे टपकाने से चीखते हुये रोगी को उसी क्षण चैन पड़ जाता है ।



कण्ठ के रोग ।

यद्यपि गले और कण्ठ के अनेक रोगो का वर्णन आयुर्वेदिक ग्रन्थो मे लिखा मिलता है किन्तु यहां उन दो प्रसिद्ध और घातक रोगो की चिकित्सा का कथन किया जावेगा जिनको खुनाक और खनाजीर (कण्ठमाला) के नाम से सम्बोधित किया जाता है । जहां यह दोनो रोग अत्याधिक कष्टप्रद है, वहां इनकी चिकित्सा भी अति कठिन है । खुनाक के कारण रोगी कुछ ही क्षणो मे मृत्यु को प्राप्त हो जाता है और खनाजीर का रोगी सिल मे ग्रसित होकर और भांति के कष्ट सहन करके यमराज का शिकार बन जाता है । यह दोनो ही रोग अत्यन्त भयानक हैं । इसका अर्थ यह नही है कि यह रोग सर्वथा असाध्य ही हैं, नही,

उस दयामय जगदीश्वर ने जहां भयानक विषों के अगद उत्पन्न किये हैं वहां इनकी चिकित्सा के साधन भी बनाये हैं। इन दोनों रोगों के विशेषातिविशेष अनेक बार के अनुभूत प्रयोग इससे पूर्व 'अनुभूत योग चिन्तामणि'' में प्रकाशित कर चुके हैं जिनके असाधारण गुणों पर अनेक वैद्य, हकीम मुग्ध और कायल हो चुके हैं। यदि उन योगों से लाभ उठाना हो तो अनुभूत योग चिन्तामणि प्रथम भाग के पृष्ठों को खोलकर देखलें। हां! वह प्रयोग जो एकौषधि से सम्बन्धित है, वह यहां अंकित किये जाते है। यह भी अतीव गुणकारी है।

कण्ठमाला (खनाजीर)

इस रोग में चूंकि गले की ग्रंथियां फूलकर माला के समान हो जाती है इसलिये इसका प्रसिद्ध नाम कण्ठमाला ही है।

अर्वाचीन डाक्टरों के अनुसंधान के अनुसार सिल और कण्ठमाला के कीटाणु एक ही होते है इसलिये कण्ठमाला का परिणाम हमेशा सिल ही हुवा करता है। यहां कुछेक अक्सीरी प्रयोग अंकित किये जाते है, जिनकी कदर और कीमत का अनुमान मुझ ही को मालूम है।

नम्बरदार का हृदयगत योग।

हरियाना प्रान्त में एक नम्बरदार कण्ठमाला की चिकित्सा का सिद्धहस्त था। दूर २ से कण्ठमाला के रोगी आते और स्वस्थ होकर चले जाते थे। उनके पास किसी सन्यासी का बताया हुवा

यह एक ही योग था, जो प्राय: कष्ट साध्य रोगियों को भी स्वस्थ कर देता था। नम्बरदार महोदय इस योग को अपने हृदय में छुपाये हुये हैं। जिज्ञासु हजार प्रार्थना और खुशामद करें किन्तु आपका हृदय नही पसीजता था,परन्तु "जिन खोजा तिन पाइयां, गहरे पानी पेठ" की किम्वन्दत्ती के अनुसार पता लगाने वालो ने योग मालूम कर ही लिया और हृदयरूपी कारागार से मुक्त होकर आज वह गुप्त प्रयोग "एकौषधि गुण विधान" के स्वतन्त्र पृष्ठो पर खेल रहा है। आशा है पाठकगण इसका सन्मान करेंगे।

प्रयोग—एक गिरगट को पकड़ कर पाव भर सरसो के तैल में जलालें, और बिलकुल जल जाने पर घोट कर मरहमसा बनाले और प्रति दिन कण्ठमाला पर लगाया करे। ईश्वर ने चाहा तो एक सप्ताह के अन्दर २ इस रोग का चिन्ह भी न रहेगा, परीक्षा कर देखें।

इसी प्रकार का और अनुभव।

यह एक पंजाबी यात्री का कथित योग है। उसने बतलाया कि मेरा अनेकबार का अनुभूत है और आशा से अधिक फलदायक है। कण्ठमाला को समूल नष्ट कर देता है।

प्रयोग—एक छिपकली को आध सेर पानी में पकावें, जब पाव भर पानी शेष रहे तो उसमें १० तोला सरसो का तैल मिला कर पुन अग्नि पर पकावे। जब जलकर कोयला बन जावे तो

उस छिपकली को पृथक निकाल कर पीसले और उसके ७ भाग करलें। एक भाग प्रति दिन हलवा या मक्खन के अन्दर लपेट कर दिया करें और तैल को ऊपर लगाया करें। अनुभूत है,परीक्षा कर देखें।

नोट–छिपकली का खाना प्रत्येक साम्प्रदाय में अनुचित है, अतः मैं इसकी आज्ञा कदापि नहीं दूंगा।

पीर साहिब का योग।

पीलू के पत्तो को ऊंट के मूत्र में पीसकर लेप करे, आश्चर्यजनक गुण करता है। निजामाबादी पीर साहिब द्वारा प्रदत्त है इसलिये गुणो की आशा की जा सकती है।

सरल योग।

हलदी ६ माशा पीसकर प्रतिदिन पानी से खिलाया करें और इसी को घिस कर लेप किया करें, साधारण और सरल योग है।

पुनः

काले सांप की केंचुली को तिल के तैल में जलाकर और अच्छी तरह खरल करके मरहम बनालें, और प्रति दिन कण्ठ-माला पर लगाया करें आराम हो जायगा।

खुनाक।

यह एक प्रकार का शोथ है, जो कण्ठ में पैदा होता है, जिसके कारण रोगी को खाना पीना ही नहीं बल्कि सांस लेना भी कठिन हो जाता है।

कारण—नज़ला या जुकाम बिगड़कर या कवा गिरकर यह रोग उत्पन्न हो जाता है।

चिन्ह—रोगी के कण्ठ में खराश होकर बारम्बार खांसी उठती है और रोगी को कण्ठ मे कुछ अटका हुवासा प्रतीत होता है, इसलिये उसे निगलने की चेष्टा करता है। इसमें सहसा रोगी के मर जाने की आशंका रहती है।

खुनाक का अद्वितीय अगद।

यद्यपि यह प्रयोग "अनुभूत योग चिन्तामणि" और रीठा गुण-विधान मे भी वर्णन किया जा चुका है तथापि इसके अपूर्व गुणों और तत्कालिक प्रभाव को देखकर एकौषधि गुण प्रकाश के पृष्ठों को ऐसे आवश्यकीय प्रयोग से वंचित रखना उचित न समझते हुये यहां भी प्रकाशित कर रहे हैं।

अगद नं० १

इस प्रयोग से खुनाक का मूर्च्छित रोगी भी तत्क्षण उठ बैठता है और जिसके कण्ठ मे से पानी की घूंट तक न उतरती

हो वह फौरन ही दूध बल्कि नरम भोजन को खा सकता है। यह अगद नहीं तो और क्या है, किन्तु इसको उस समय इस्तेमाल करायें जब कि रोगी अन्तिम अवस्था को पहुँच चुका हो।

रीठे का छिलका १ तोला को पानी में घोटकर या क्वाथ करके गण्डूश करायें, यदि रोगी मूच्छितावस्था मे हो तो रीठे का पानी रोगी के मुंह मे डालकर दूसरा आदमी रोगी के सिर को हिलावे। ईश्वर की कृपा से रोगी उठ बैठेगा और कण्ठ भी खुलता जायगा। इसी प्रकार कई बार गण्डूश कराये। अनेक-बार का अनुभूत है।

अगद नं० २

खुनाक के लिये अकेला अमलतास ही ऐसी चीज है कि जिसको पिलाने और गण्डूश कराने व लेप करने से ९९ प्रति-शत सफलता मिलती है। अनेको बार इस दवा के प्रताप से खुनाक के ऐसे निराश रोगी भले चंगे हो गये जिनके बचने की आशा तक नहीं थी। जवान आदमी के लिये विधि निम्न-लिखित है।

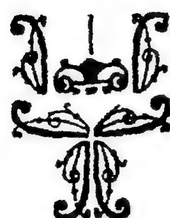
(१) अमलतास का गूदा ५ तोला लेकर सेर भर पानी मे भिगो दे और फिर मल छानकर उसमें ६ माशा बादाम रोगन और २ तोला मिश्री डालकर पिलाये।

(२) पांच तोला अमलतास के गूदे को सेर भर गरम पानीमें भिगोकर मल छानले और समोष्ण से ही गण्डूश कराये।

(३) अमलतास के गूदे को थोड़े से उष्ण जल के साथ घोट कर प्रथम टकोर करें और फिर ऊपर से लेप करदें।

परहेज –खट्टी और मिष्ट वस्तुओ से परहेज रखें।

पथ्य भोजन—सागूदाना, दूध, डबल रोटी आदि।



छाती और फुफ्फुस के रोग ।

फुफ्फुस हृदय का पंखा है, यदि यह ५ मिनट भी अपना कार्य त्याग दे तो प्राणी का जीवित रहना असम्भव है। मनुष्यों के कुपथ्य के कारण इनको भी कई वार रोगों में ग्रसित होना पड़ता है। अतएव यहां फेफड़े के रोगों का वर्णन और चिकित्सा लिखी जाती है।

कास ।

जब दिमागी नजला फेफड़े पर गिरता है तो इस नजले को फेफड़े उछालते हैं और इस गति का नाम कास है।

भेद—कास के प्रसिद्ध दो भेद हैं, एक खुश्क और दूसरा तर। तर में कफ निकलता है और खुश्क खांसी मे कुछ नहीं निकलता या बहुत गाढ़ीसी झाग निकलती है। इन दोनो प्रकार की खांसी की पृथक २ चिकित्सा लिखी जाती है।

खुश्क खांसी का अद्वितीय चुटकला ।

खुश्क खांसी बहुत कष्टप्रद रोग है। रोगी खांसते २ तंग आ जाता है किन्तु यह हटने का नाम नहीं लेती। इसके लिये निम्नलिखित प्रयोग अत्यन्त ही गुणकारी सिद्ध हुआ है।

प्रयोग—हलदी की गांठ को भून कर चूरण बनालें और और प्रातः समय ३ माशा की मात्रा में फंका दिया करे।

स्वादिष्ट दवा।

एक तोला अलसी को पाव भर पानी मे उबाले। जब ५ तोला पानी शेष रहे तो छानकर दो तोला मिश्री मिलाकर उष्ण को ही घूंट २ करके पीलें। इसके कुछवार के सेवन से वह खुश्क खांसी जो सर्दी लगने के कारण से हुई हो—दूर हो जावेगी।

खुश्क खांसी की उत्तम दवा।

लिहसोड़े नग १४ लेकर जव कुट करके पाव भर पानी मे पकावे, जब आधा पानी शेष रहे तो उसमे एक तोला मिश्री मिलाकर पिलावे।

गुण—खुश्क खांसी जो गरमी के कारण से हो—इससे मिट जाती है।

सरल योग।

यह प्रयोग खुश्क खांसी के लिये अतीव गुणकारी है। बीहदाना के साबत दाने मुंह मे डालकर उनका रस चूसते रहे। कुछ दिनो मे खांसी दूर हो जावेगी।

मुफ्त का नुसखा ।

मकई का तिका (जो दाने निकालने के बाद बाकी रह जाता है) जलाकर पीसलें और उसमें समभाग खांड मिलाकर रखे। मात्रा तीन तीन माशा, प्रातः सायं ताजा जल के साथ दें। हर प्रकार की खांसी के लिये लाभदायक है।

उत्तम प्रयोग ।

शलगम के ऊपर कपड़ा लपेट कर उसके ऊपर एक एक अंगुल मोटी मिट्टी का लेप करदें और सूखने पर कोयलों की आग में दबा दें। जब मिट्टी का रंग लाल हो जावे तो निकालकर शीतल होने पर मिट्टी दूर करके शलगम को निचोड़कर रस निकाल ले, और ६ माशा की मात्रा में थोड़ीसी मिश्री या मधु मिलाकर प्रातः सायं पिलाया करे। पांच छः दिवस में आराम हो जावेगा।

बांसापत्र का प्रभाव ।

कास, श्वांस के लिये बांसापत्र अनुपम गुण रखता है और इसके गुणों पर प्रत्येक चिकित्सा पद्धति के लोग सहमत हैं। कई वैद्यक ग्रन्थो मे तो यहां तक लिखा है कि जिस स्थान मे बासां जैसी अद्वितीय बूटी उत्पन्न होती है, उस स्थान में कास, श्वांस पैदा ही नही हो सकते। सारांश इसके गुणो के सब कायल हैं। हम यहां इसका प्रयोग लिखते हैं।

प्रयोग—हरे वांसापत्र आवश्यकतानुसार लेकर उनको पानी से तर किये हुये कपड़े में लपेट कर ऊपर से मिट्टी का लेप करदें और फिर भूभल (गरम राख) में दबादें। जब मिट्टी लाल हो जावे जब निकालकर निचोड़कर रस निकाल ले और शीशी में सुरक्षित रखें।

सेवन विधि—छः माशा रस मे ६ माशा मधु मिलाकर प्रातः साय पिलाया करें, कुछ ही दिनों के सेवन से हर प्रकार की खांसी दूर हो जावेगी।

परहेज—हर प्रकार की खटाई, तैल की वस्तुओ, मक्खन, घी आदि से तथा यदि सरदी से हो तो सिर और छाती को शीतल वायु से बचावे।

पथ्य भोजन—खिचड़ी, मूग की या अरहर की दाल, पालक का शाक, गेहूँ की रोटी।

—:o:—

दमा रोग

इसके दमा, श्वांस, अस्थमा आदि प्रसिद्ध नाम हैं। यह कठिनता से जाने वाला रोग है, यहां तक कि लोगों में तो यह

किम्बन्दती प्रसिद्ध हो चुकी है कि "दमा दम के साथ जाता है"। किन्तु वास्तव में यह सत्य नहीं है। हम यहां कुछेक ऐसे प्रयोग अंकित करते है जिनके सामने बड़े २ योग तुच्छ हैं। ईश्वर से प्रार्थना है कि वह रोगियों को इन योगों द्वारा स्वस्थ होने की शक्ति प्रदान करे।

कफ का श्वांस।

यह प्रयोग एक महाशय ने हमारे भाई को बडी कृपा के साथ भेंट किया था, जो कि अनुभव करने पर अत्यन्त गुणकारी सिद्ध हुआ। इससे नया रोग तो केवल ५ मिनट में और पुराना दो, चार दिन में दूर हो जाता है।

योग—भूई फोड़ (एक जड़दार जड़ी है जो कि बहावलपुर स्टेट में मिलती है और वहां प्रत्येक मनुष्य इसको इसी नाम से जानता है) को प्राप्त करके उसमें से २-३ माशा लेकर तमाखू के मध्य मे रखकर हुक्का में पिलावे। बस! उसी दिन बलगमी दमा से छुटकारा मिल जायगा। हां! यदि रोग पुराना हो तो दो, चार दिन इसी प्रकार हुक्के मे पिलाइये।

सैयद साहिब का योग।

यह प्रयोग एक रसायनी (किमियागर) सैयद साहिब से पाया हुआ था, जो कि दमा का शर्त के साथ इलाज करते थे। उनका कथन था कि "दमा दम के साथ जाता है" इस किम्बन्दती को

असत्य सिद्ध करने के लिये यह प्रयोग काफी है। किन्तु हमने अभी अनुभव नहीं किया, हां अनुमान है कि प्रयोग सत्य होगा, परन्तु तनिक सावधानी और तदबीर से काम लेकर सेवन कराना उचित है।

योग—इन्द्रायण के पके फल लेकर उनके बीज निकाल कर उसके गूदे को छाया में सुखाले और चूर्ण बनाकर रखें। बस! दवा तैयार है।

सेवन विधि—आवश्यकता के समय बलवान रोगी को तीन दिन पहिले गेहूँ का दलिया आदि नरम भोजन करायें और फिर इस चूरण में से एक तोला लेकर गरम पानी से दे दे। तद्‌-पश्चात् एक एक घण्टा के अन्तर से दो बार और दें, अर्थात् दिन में तीन बार दें। इसमें खूब खुलकर वमन होगा और कफ की जमी हुई गांठें निकलेंगी और दस्त आयेंगे। बस! इससे एक ही दिन में पूर्ण लाभ हो जायगा। किन्तु एक सप्ताह पर्यन्त खुराक घी और खांड मिलाकर देनी चाहिये।

यथा सम्भव रोटी बिलकुल न खाई जाय। विवशता की दशा में बहुत कम। हा घी, खांड जितना चाहे खा सकते हैं।

यदि रोगी निर्बल हो—तो उसको दवा एक एक तोला के हिसाब से तीन दिन में दें। ऐसे रोगी को एक ही दिन में कदापि सेवन न करायें।

नोट—चूंकि यह दवा जरा तेज है इसलिये किसी विद्वान वैद्य या हकीम हाज़िक के सिवाय और कोई इसका उपयोग न करावें।

दमे की अनुभूत चिकित्सा ।

यह प्रयोग श्रीयुत हकीम महबूब आलिम खान साहिब मजिस्ट्रेट ने प्रकाशनार्थ भेजा है।

प्रयोग—कड़वी तमाखू की बटी हुई रस्सी, जिसको तमाखू का बीड़ा भी कहते हैं, लगभग आध सेर लेकर ढींगरों की आग पर जलालें, ताकि अच्छी तरह से जल जावे, फिर इस राख को आठ गुणे पानी में भिगोकर रख दें और दिन में तीनबार हिला दिया करें। तीसरे दिन ऊपर में निथरा हुआ पानी लेकर अग्नि पर पकायें, पकते पकते सारा पानी जल जाने के बाद थोड़ासा क्षार प्राप्त होगा, उसको शीशी में सुरक्षित रखें।

सेवन विधि—एक रत्ती क्षार को आधे पान के पत्ते में रख कर खिलावे। खटाई और तैल की बनी हुई चीजों से परहेज रखें।

सन्यासी अगद ।

काले मुर्ग की बीट सूक्ष्म पीसकर शीशी में सुरक्षित रखें, और तीन माशा की मात्रा मे प्रति दिन जल के साथ दिया करें, किन्तु रोगी पर दवा का भेद प्रगट न होने दें, कुछ दिन मे आराम हो जावेगा।

ग्रामीण चिकित्सा ।

ऐसी गाय जो पहलीबार बच्चा दे, उसका दूध निकालकर तुरन्त ही रोगी को पिलादे। ईश्वर की कृपा से एक ही बार के इस्तेमाल से आराम हो जायगा। इस ग्रामीण चिकित्सा से दमा के अनेक रोगी स्वस्थ हो चुके हैं, परन्तु कोमल प्रकृति के लोगों को इस चिकित्सा से परहेज रखना चाहिये।

पवित्र प्रयोग ।

यह प्रयोग एक मौलवी साहिब की सञ्चिका में से है। प्रति दिन एक हथेली भर हालीयून ऐसी गाय के दूध के साथ लिया करें—जिसका रंग काला हो, यहां तक कि एक बाल भी सफेद न हो। कुछ दिन के सेवन से आराम हो जायगा।

कटु वटिका ।

अमली एलुआ खरल में डालकर सूक्ष्म पीसले. और पानी की सहायता से एक २ रत्ती की गोलियां बनालें, और प्रति दिन एक गोली पानी की साथ दिया करें। यह दवा सरल होने के अतिरिक्त अतीव गुणकारी है।

पथ्य—भैंस के दूध, छाछ, दही, खटाई हर प्रकार, तैल में पकाई हुई वस्तुओं से परहेज रखें।

भोजन—पुराने लाल चावल, गेहूँ, जौं की रोटी, पुराना घी और बकरी का दूध।

वमन कारक अनुभूत योग।

रेवन्द अस्मारा उमदा लेकर सूक्ष्म पीस ले. और १ से २ माशा तक गुलकन्द मे मिलाकर खिलावें या गरम पानी मे घोल कर पिलावे। बस ! थोडी देर मे ही वमन हो जावेगी, फिर गरम पानी पिलावें और वमन करायें। साथ ही दस्त शुरू हो जावेंगे जो स्वयं ही बन्द हो जाते हैं वरना गुलकन्द व सौंफ घोट छान कर पिलावे। इससे बेचैनी व घबराहट आदि को लाभ हो जाता है।

नोट—वमन के लिये आसोज और चैत्र मास उचित है, अतएव विशेष आवश्यकता के सिवाय और दिनों में वमन नहीं कराना चाहिये। दमा के रोगी को वमन कराकर कफ निकाल देना उचित है। इससे चिरकाल के लिये लाभ हो जाता है, तथा वमन कराने के बाद प्रत्येक प्रयोग अधिक लाभदायक सिद्ध होता है।

न्यूमोनिया।

न्यूमोनियां फेफडे के शोथ से होता है और इसका एक भेद और भी है उसमे एक झिल्ली का शोथ होता है, किन्तु इस संक्षिप्त पुस्तक में इस विषय पर बहस करना अनुचित प्रतीत होता

है अतएव हम कुछ ऐसे एकौषधि प्रयोग अंकित करते हैं जो दोनों प्रकार के रोगो मे लाभदायक सिद्ध होते हैं।

चिकित्सा।

निमोनियां को दूर करने के लिये एक से एक बढ़कर प्रयोग खाने और लगाने के "अनुभूत योग चिन्तामणी" फिटकड़ी गुण-विधान, अर्क गुण-विधान आदि मे वर्णन किये जाचुके हैं ; यद्यपि इस पुस्तक का अधिकाश भाग इन पुस्तको मे विभाजित हो जाने के कारण अब मेरा कोष रीता दृष्टिगोचर होता है, तथापि एक दो प्रयोग सेवा मे उपस्थित है-जो उपरोक्त पुस्तको के योगोंसे सर्वथा अलग हैं। आशा है, आवश्यकता के समय अमूल्य सिद्ध होंगे।

पीड़ा निवारक क्वाथ।

निम्नलिखित दवा के क्वाथ मे न केवल पीडा ही शान्त हो जाती है, बल्कि कंठ से लगाकर गुदा तक की सब पीड़ाओ को शान्त करने में अक्सीर है। ज्यो ही दवा अन्दर पहुँची कि पीड़ा को तुरन्त आराम हो जाता है। एक रोगी को कोलेज था, जिसे कुछ देर के लिये तो आराम हो ही गया। दवा कटु बहुत है।

प्रयोग—करंजवा की गिरी नग ७ को कूट कर पाव भर पानी मे जोश दे, जब आधा पानी शेष रह जावे तो उसको छान कर समोष्ण दशा में ही पिलावें।

पीड़ा निवारक लेप ।

करंजुआ की गिरी पानी में सूक्ष्म पीस कर पीड़ा के स्थान पर लेप कर दें, तत्काल पीड़ा शान्त हो जावेगी । यह दवा शृङ्ग के तद्रूप है । परीक्षा कर देखें ।

मालिश का अक्सीरी तैल ।

यह तैल तनिक कठिनता से तैयार होता है किन्तु है एकौषधि ही, इसलिये लिखा जाता है । जहां सैकड़ों प्रयोग बिना कष्ट के बन जाने वाले लिख दिये हैं, वहां एक तनिक कठिनता से बनने वाला योग भी स्वीकार कीजिये ।

आस्बा हल्दी इच्छानुसार लेकर टुकड़े २ करके मिट्टी के बर्तन में डालो और ऊपर से ऐसी गाय का दूध डालकर तर करें—जो कम से कम १० मास से या न्यूनातिन्यून ७ मास से दूध दे रही हो । इसी प्रकार प्रति दिन प्रातः सायं तर कर दिया करे । सात दिवस पश्चात खुश्क होने पर पाताल यन्त्र से तैल निकाल ले और आवश्यकता होने पर पीड़ा के स्थान पर मालिश करके ऊपर गरम गरम धतूरा या अरंड या आक के पत्ते बांधदें । शीघ्र ही पीड़ा शान्त हो जावेगी ।

पथ्य—रोगी को पानी बिलकुल न पिलवे, बल्कि अर्क सौंफ या अर्क गावजबां गर्मोष्ण करके पिलाते रहे ।

भोजन—मूंग की दाल, अण्डे की पीतता शहद के साथ ।

हृदय के रोग

हृदय चूंकि मनुष्य देह के साम्राज्य का सम्राट है, इसलिये हृदय का रोग ग्रसित होना अत्यन्त भयानक होता है। विशेष कर हृदय की निर्बलता तो एक ऐसा रोग है कि जिसके लिये मूल्यवान औषधियां एकत्र करके यथा जवाहर मोहरा, याकूतियां और खमीरो के रूप में दिलाई जाती है किन्तु फिर भी यह स्वस्थ होने का नाम नहीं लेता। किन्तु निम्नलिखित चुटकले इस रोग के लिये ऐसे उत्तम सिद्ध हुए हैं जो कि कम कीमत और सरल होने के अतिरिक्त रोग मिटाने के लिये अगद् हैं।

हृदय की दुर्बलता का अद्भुत योग।

इस चुटकले को बार बार परीक्षा करके लाभदायक पाया है। जो सेवा में सादर समर्पित है। देखिये साधारण चीजों में उस दयालु जगदीश्वर ने कितने गुण भर दिये हैं, जो श्रीमन्त और निर्धन सबके लिये साधारण और सुलभ प्राप्त वस्तु है। आप भी लाभान्वित हो।

प्रयोग—मगज़ तरबूज ताजा ६ माशा, पानी में घोट छान कर और मिश्री मिलाकर मीठा करके दिनमें दो, तीनबार पिलाया करें।

लाभ—आपको दिन प्रति दिन मालूम होता जायगा कि हृदय की कमजोरी, दिल की धड़कन व घबराहट आदि कितनी जल्दी नष्ट होती है । जब पूर्ण स्वास्थ लाभ हो जावे तो दवा का सेवन करना बन्द करदे ।

पौष्टिक और स्वादिष्ट योग ।

गुलकन्द सेवती उत्तम बनी हुई हृदय की दुर्बलता के लिये बहुत ही लाभदायक है । प्रति दिन प्रातः सायं तीन तीन तोला सेवन करना उचित है । प्रत्यक्ष में साधारण योग दृष्टिगोचर होता है किन्तु गुण तो सेवन करने पर ही ज्ञात होंगे ।

शर्बत दिलखुश ।

लालिमायुक्त बादामी रंग की पतली २ सुन्दर गाजरें लेकर उनका ५ तोला रस निकाल ले, और मिश्री मिलाकर नियमानुसार प्रति दिन पिलाया करें ।

लाभ—हृदय की धड़कन, पागलपन, हृदय की दुर्बलता के लिये सुलभ प्राप्त और उत्तम गरीबी प्रयोग है ।

शर्बत रुह अफज़ा ।

श्वेत चन्दन के टुकड़े को पत्थर पर घिसकर और मिश्री मिलाकर पिलाया करे, हृदय की धड़कन के लिये अत्युत्तम योग है । प्यास को बुझाकर दिल में सरूर पैदा करता है ।

पथ्य—हृदय रोगो में गुड़, शक्कर और स्वेदन वस्तुओं से परहेज करायें, और सूर्योदय से पहिले अन्धेरे २ बाग या हरे भरे जंगल की सैर किया करें ।

आमाशय के रोग।

स्वास्थ को स्थिर रखने के लिये आमाशय को स्वस्थ रखना अत्यावश्यक है। ज्यो ही इसमे कोई दोष उत्पन्न हुआ कि तत्क्षण कोई न कोई रोग प्रकट हो जाता है। इसलिये आमाशय को स्वस्थ रखना प्रत्येक मनुष्य का कर्त्तव्य है। यदि आमाशय अपना नियमित कार्य करता होगा तो रूखा, सूखा भोजन भी पौष्टिक सिद्ध होगा, और इसके विपरीत आमाशय रुग्ण हो तो उत्तमोत्तम पदार्थ भी कुछ फायदा न करेंगे। यहां आमाशय को स्वस्थ करने का एक नियम और शाक का वर्णन किया जाता है।

सौ गुरों का एक गुर।

भोजन क्षुधा लगे तब करे और चार ग्रास की भूख बाकी रखकर खाना बन्द करदे, बस ! यही नियम है।

क्षुधा वर्धक शाक।

इस शाक के गुणो का अनुमान वही मनुष्य कर सकता है, जो यदाकदा इसे सेवन करता रहता हो, क्योंकि इसे कभी २ सेवन करते रहने से आमाशय अनेक रोग से सुरक्षित रहता है।

सेवन करने वाले को भूख खूब लगती है, खाया, पिया अंग में लगता है। रंगत निखर आती है, सारांश अद्वितीय वस्तु है। सप्ताह में एक या दो बार एक चम्मच विशुद्ध सिरका बतौर शाक के सेवन कर लिया करे।

उदर शूल।

ईश्वर ही रक्षा करे, यह बुरी किस्म का पेट दर्द है, जिसमें रोगी तड़पने लगता है। यह रोग रह रहकर आया करता है और केवल चन्द मिनट या अधिक से अधिक चन्द घण्टे रहकर रोगी को अधमूवासा बना देता है। यह रोग क्यों होता है और किस प्रकार होता है इसके सम्बन्ध में यहां लिखने की आवश्यकता नहीं, यहां केवल उत्तमोत्तम प्रयोग निवेदन किये जाते हैं।

लाभदायक भूल।

मेरे मित्र हकीम इनायत्तुल्ला ने बतलाया कि एकबार रात्रि के समय एक व्यक्ति आया और कहने लगा कि एक लड़का उदर शूल से बेचैन हो रहा है, कृपया कोई दवा देकर अनुगृहीत करें। चूंकि मैं किसी आवश्यकीय कार्य में तल्लीन था, इसलिये मैंने कह दिया कि मेरे बक्स में एक शीशी पड़ी है उठा लाओ। वह शीशी उठा लाया और मैंने उसको नमक सुलेमानी ख्याल करते हुये उसमें से रत्ती २ की तीन पुड़ियां बांध दी, और कह दिया कि एक पुड़िया गरम पानी से दे देना, यदि दर्द बन्द न हो तो एक घण्टा के अन्तर से दूसरी पुड़ियां दे देना।

दूसरे दिन कथित व्यक्ति ने दो पुडियां लाकर वापिस कर दी, और कहने लगा कि बस एक ही पुड़िया मे आराम हो गया था। मैंने इत्तफाक़ से पुड़िया खोल कर देखी तो मालूम हुआ कि भूल से नमक सुलेमानी की बजाय दूसरी शीशी की दवा विशुद्ध मीठा तेलिया दे दी गई। पहले तो बड़ी चिन्ता हुई, किन्तु परिणाम पर विचार करने से अत्यन्त प्रसन्नता भी हुई। इसके बाद अनेकबार इसका अनुभव किया गया तो जादू के समान गुणकारी पाया और यहां तक कि जिसको दवा दी गई, उसका उदर शूल तत्क्षण बन्द हो जाने के बाद फिर कभी नहीं हुआ।

नोट—यह विष है और इसकी मात्रा एक रत्ती वैद्यक के नियमानुसार अधिक है, इसलिये सिवाय किसी विद्वान वैद्य के साधारण लोग इसको खिलाने का साहस न करें। (सम्पादक)

मीठा तेलिया को शुद्ध करने की विधि

दो तोला का एक टुकड़ा लेकर उसको कड़हाई में डाल दें, और फिर कड़हाईमें १० सेर पानी और आकके पत्ते, फूल और जड़ के छोटे २ टुकड़े डालकर अग्नि पर पकावे, यहां तक कि छः सात सेर पानी जल जावे। फिर कड़ाही को नीचे उतार कर मीठा तेलिया के टुकड़े को निकाल लें, जो मोम की भांति हो गया होगा। खुश्क होने पर सूक्ष्म पीसकर सुरक्षित रखें, और आवश्यकता के समय काम मे लावें, यह दवा न केवल उदर शूल बल्कि और भी अनेक रोगो के लिये अक्सीर है जिनका यथा स्थान वर्णन आता रहेगा।

आश्चर्यजनक चुटकुला।

जब रोगी को प्रतीत हो कि उदर शूल आरम्भ होने लगा है तो तत्काल पौन तोला गौ घृत अग्नि पर पकाकर उसमें १ साबत लाल मिर्च डालदे और जब मिर्च जलकर काली हो जावे तो उसको निचोड़कर फैंकदें, और घी को पीले। ईश्वर की कृपा से दर्द वहीं थम जायगा।

अनुभूत योग चिन्तामणी द्वितीय भाग में उदर शूल के बहुत ही सफल और उत्तमोत्तम योग प्रकाशित किये जावेंगे। (छप रही है)

कोडी का दर्द।

यह अत्यन्त लौटपौट कर देने वाला दरद है, इसके कष्ट का अनुमान वही मनुष्य कर सकता है, जो इस रोग से ग्रसित रहा हो। साधारणतया यह रोग बादी की चीजो के अत्याधिक सेवन से होता है।

हींग का चमत्कार।

अत्युत्तम हीरा हींग १ रत्ती, निर्बीज मुनक्का में लपेटकर खिलावे, ईश्वर की कृपा से तत्काल पीड़ा शान्त हो जावेगी।

दूसरा चुटकला।

रूमी सौंफ ६ माशा ताजा पानी से फंका दे, इससे भी पीड़ा शान्त हो जाती है।

चाय का तमाखू ।

इच्छानुसार चाय लेकर चिलम मे तमाखू की भान्ति पिलावे । दरद बन्द हो जायगा। खासा लाभदायक है ।

पथ्य—चावल, दूध कच्चा, दही, छाछ से परहेज कराये, और भोजन पचने से पूर्व रोगी को सोने न दें ।

भोजन—गेहूँ की रोटी, मूंग की दाल, गेहूँ का दलिया इत्यादि ।

वमन व उबकाई ।

जी मिचलाता हो, वमन होती हो, या खाली उबकाइयां आती हों तो निम्नलिखित प्रयोग को सेवन कराइये ।

एक सुनहरी नियम ।

वमन रोकने मे शीघ्रता से काम नही लेना चाहिये, क्योंकि दूषित द्रव्य का निकल जाना ही उत्तम है । यदि उस दूषित द्रव्य को बन्द कर दिया जावे तो बहुत नुकसान होता है । उचित तो यह है कि दूषित द्रव्य को निकालने में सहायता करें किन्तु जब यह प्रतीत हो कि आमाशय साफहो चुका है तो उस समय निम्न-लिखित औषधियो से वमन को रोक देना चाहिये । प्रयोग यह है-

आश्चर्यजनक योग ।

यह जादू असर प्रयोग एक अमृतसर के हकीम ने देहली

की वैद्यक कान्फ्रेस के उत्सव के अवसर पर पेश किया था जो कि अत्यन्त गुणकारी है।

मक्खी जहां स्वय वमनकारक है वहां उसका एक अंग वमन को रोकने के लिये भी अक्सीर है। मक्खी की वीट आवश्यकतानुसार एकत्र करके खरल करे और पानी की सहायता से रत्ती २ की गोलियां बना ले और सुरक्षित रखे।

सेवन विधि—आवश्यकता के समय एक गोली पानी से दे।

गुण—वमन तुरन्त बन्द हो जावेगी। यदि गोली अन्दर पहुँचने से पहिले ही वमन हो जावे तो उसी समय दूसरी गोली दे दें।

अजीब टोटका।

चूल्हे की भटोर (लाल मिट्टी) को सूक्ष्म पीसकर रखें और आवश्यकता के समय केवल १ माशा पौडर पानीके साथ खिलावें वमन तत्काल बन्द हो जावेगी, इस मिट्टी में और भी अनेक गुण हैं जिनका यथा स्थान वर्णन किया जावेगा।

वमन रोकने वाला पानी।

लोहे के साफ टुकड़े को अग्नि मे खूब तपाकर पानी में बुझावें। इसी प्रकार २१ बार बुझाकर पानी जब बिलकुल शीतल हो जावे तब वमन के रोगी को पिलावे। वमन और तृषा की अधिकता के लिये सीमा से अधिक गुणकारी है।

द्वितीय योग ।

मिट्टी के पुराने दीपक को लेकर अग्नि मे डालकर जलावें। जब सारा तैल जलकर दीपक लाल सुर्ख हो जावे तब उसको पानी मे डालकर छोड़दें। यह पानी पिलाने से वमन तुरन्त रुक जाती है।

एक और विधि ।

आमाशय पर जरासा तैल लगाकर ऊपर राई का लेप करदे और ५ मिनट बाद उतार ले। इससे चाहे कैसी ही वमन क्यों न हो, फौरन बन्द हो जाती है।

दूसरी विधि ।

जब किसी दवा से लाभ न हो तो निम्नलिखित विधि को व्यवहार में लावें। दोनो कन्धों के मध्य मे उस्तरे से टक-लगाकर सींगीयां खिचवादे। बस! रक्त निकलतेही वमन बन्द होजावेगी।

एक उत्तम प्रयोग ।

मोर के पंख को जलाकर उसकी भस्म को शहद मे मिला कर चटावें। दो तीन अंगुलियां चटाने से ही वमन और उबकाइयां बन्द हो जाती हैं।

सरल चुटकुला ।

अनारदाना या इमली को मुंह में रखकर चूसें। इससे वमन, उबकाइयां आदि दूर होकर चित्त स्वस्थ हो जाता है।

नीम्बू का चमत्कार ।

जब वमन रुकती ही न हो तो कागजी नीम्बू के दो टुकड़े काटकर उन पर खांड छिड़क कर चुसाये । वमन रुक जायगी ।

वमन रोकने का एक नियम ।

यदि इस नियम को ध्यान में न रखा जावे तो उत्तम से उत्तम औषधि से भी लाभ नहीं होता । रोगी को दवा या पानी एक घूंट ही पिलावे, अर्थात् प्रत्येक घूंट दो मिनट के अन्तर से पिलावें ।

हिक्का (हिचकी)

कई बार हिचकी अधिक समय तक चालू रहकर बड़ी कष्टप्रद होती है, जिससे रोगी को बहुत कष्ट का अनुभव होता है । यहां हिचकी बन्द करने के लिए कुछ प्रयोग लिखे जाते हैं । अधिक देखना हो तो "अनुभूत योग चिन्तामणी" प्रथम भाग देखिये ।

हिक्का रोकने वाली नस्य ।

नकछिकनी बूटी सूक्ष्म पीसकर शीशी में सुरक्षित रखें, और आवश्यकता के समय रोगी को थोड़ीसी सुंघादे । निरन्तर पांच चार छींके आकर हिचकी बन्द हो जावेगी । जब इच्छा हो अनुभव कर देखें ।

अति प्रभावक योग ।

जब हिचकी किसी प्रकार भी बन्द न होती हो तो धनिया कोरी चिलम में रख कर हुक्के पर रखकर तमाखू की भांति पिलावें ; दो, चार कश लगाने में ही तत्काल आराम हो जावेगा।

सन्यासियाना लटका ।

मक्खी की बीट लड़की वाली स्त्री के दूध में हल करके नाक के दोनो नथनों मे दो दो बून्द टपकावे, लाभ होगा।

विशूचिका (हैजा)

यह बड़ा भयानक रोग है। नाम सुनते ही रोमाञ्च हो आते हैं। इस दुष्ट रोग से भारत का बच्चा २ परिचित है। इसके निरन्तर आक्रमणों ने भारत के लाखो घरो को बर्बाद कर दिया है। सारांश यह वह रोग है जिससे हमारे देश को इतनी हानि पहुँची है कि उसका अनुमान करना कठिन है, किन्तु अभी तक इसकी ऐसी सफल औषधि नहीं मिली, जिसे हम ६५ या ६० प्रतिशत ठीक कह सकें। तथापि डाक्टरी की अपेक्षा आयुर्वेदिक और यूनानी में इसके उत्तमोत्तम योग मिलते हैं, जैसा कि हमने अपनी अल्प बुद्धि के अनुसार "अनुभूत योग चिन्तामणी" फिटकड़ी गुण-विधान, अर्क गुण-विधान, पलाण्डू चिकित्सा मे निवेदन कर दिये हैं और उन योगो से असंख्य लोगो ने लाभ उठाया है। यहां एकोषधि सम्बन्धी अवशेष प्रयोग निवेदन किये जाते हैं।

यहां यह स्मरण रखना चाहिये कि इनमें क्या हम अपनी किसी भी पुस्तक में वह योग पुनः नहीं लिखते जो एकबार एक पुस्तक में छपा दिया हो। इससे पहिले की उपरोक्त पुस्तका के योग इनसे सर्वथा भिन्न हैं, क्योंकि यदि वही प्रयोग पुन. लिख दिये जाते तो ग्राहको को आपत्ति होती, कारण जिसने भी हमारी एक कृति को खरीदा है, वह धीरे २ हमारी सब रचनाओं को खरीदता है। इस लिये अन्य प्रयोग हमारी बनाई हुई अन्य पुस्तकोंमें देखिये।

चिकित्सा पद्धति।

विशूचिका के रोगी के वमन और दस्तो को बन्द कर देना भारी भूल है। इससे दूषित द्रव्य पेट में रुक कर रोगी की मृत्यु का कारण बन जाता है, इसलिये उचित है कि एक गिलास समोष्ण जल मे १ तोला नमक मिलाकर पिलावे, ताकि खुलकर वमन हो जाय और आमाशय विषैले द्रव्य से पवित्र हो जावे। इसी प्रकार पहिले कोई दस्तावर चीज दे देनी चाहिये, जो कि रेचक होने के अतिरिक्त विशूचिका के लिये भी लाभदायक हो, जैसा कि एक प्रयोग "अनुभूत योग चिन्तामणी" के पृष्ठ १४५–१४६ में लिखा गया है। हां यदि रोग जोरो पर हो तो कोई हर्ज नहीं।

कृपालु दवा।

छोटी इलायची के छिलके एकत्र करके सुरक्षित रखें, क्योंकि यह कई रोगो के लिये अति गुणकारी सिद्ध हुये हैं। विश-

चिका के लिये भी यह अत्युत्तम दवा है। विधि यह है कि छोटी इलायची के छिलके ४ तोला लेकर सेर भर पानी में पकावे। जब पकते २ पाव भर पानी शेष रह जावे तो उतार कर शीतल करे, और रोगी को दो दो तोला पिलाते रहे।

गुण—विशूचिका की प्रत्येक दशा में लाभदायक है इसके अतिरिक्त हैजा के सब उपद्रव वमन, तृषा आदि को बन्द करके मूत्र जारी करता है।

अथचः

मकोय के हरे पत्ते प्राप्त करके उनको स्वच्छ खरल मे कूट कर किसी मलमल आदि के रूमाल में दबाकर पानी निकाल ले, और रोगी को तोला २ पिलावे। इससे प्रायः ८० प्रतिशत रोगियो को आराम हो जाता है।

अक्सीर हैजा।

तिल के पत्ते छः माशा तीन तोला पानीमें घोंटकर पिलावे। इसकी दो मात्रा पिलाने से रोगी स्वस्थ हो जाता है।

अक्सीरी जड़ी।

अपाभार्ग की जड़ छः माशा लेकर सौंफ के अर्क या पानी में घोंटकर पिलावे। विशूचिका के लिये अक्सीर है।

निराशा में आशा की झलक।

लाल मिरच की मसीहाई।

जब रोगी का शरीर हिमतुल्य शीतल हो जावे, नाड़ी रुकने

जैसी हो जाय नेत्र भीतर को धस जायं, सारांश रोगी के जीवन की आशा न रहे ऐसी दशा मे ईश्वर का नाम लेकर निम्नलिखित योग सेवन कराये, लाभदायक सिद्ध होगा।

लाल मिरच ३ माशा पानी मे घोटकर पिलावें, बस ! ईश्वर ने चाहा तो दवा अन्दर पहुँचते ही शरीर गरम होना आरम्भ हो जायगा और थोड़ी देर के अन्दर ही आराम हो जावेगा।

चन्दन की करामात।

श्वेत चन्दन की लकड़ी को थोड़े से पानी मे घिसकर एक एक चमचा रोगी को पिलावे। प्यास, वमन आदि दूर होकर थोड़ी देर मे आराम हो जायगा।

हैजे की अन्तिम दवा।

लौंग ३ माशा लेकर ३ सेर पानी में उबाले। जब आधा पानी जल जावे तब उतार कर रखदें।

सेवन विधि—रोगी को घून्ट २ करके पिलाते रहे।

विशूचिका के उपद्रव।

वमन, तृषा, मूत्रावरोध आदि और उनके प्रयोग।

इससे पूर्व जो प्रयोग लिखे गये हैं वह भी उपरोक्त उपद्रवों के लिये लाभदायक हैं तथापि प्रत्येक उपद्रव के विषय में पृथक २

योग भी अंकित कर देते हैं, ताकि आवश्यकता होने पर उचित चिकित्सा में सरलता हो।

तृषा की अधिकता को रोकने वाले उत्तमोत्तम योग।

विशूचिका के रोगी को प्यास की अधिकता बहुत तंग करती है, जिसके लिये बिलकुल सरल प्रयोग लिखते हैं जो सर्वत्र सुलभ प्राप्त हो सकते हैं। इसलिये हम निर्भय होकर कह सकते हैं कि यह प्रयोग उन पेटेण्ट और लम्बे चौड़े प्रयोगो से उत्तम हैं जो गुणों में तो अकसीर होगे पर समय पर मिल नही सकते या बन नहीं सकते।

प्यास बुझाने का विशेष योग।

यह प्रयोग जहां प्यास रोकने मे अक्सीर है, वहां हैजा के लिये भी उत्तम अगद् है।

योग—जायफल नग ४ लेकर कूट ले और एक सेर पानी में उबाले। जब पाव भर पानी जल कर तीन पाव शेष रहे तब उतार कर मिट्टी के कोरे बर्तन में छानलें। जब बरफ के समान ठण्डा हो जावे तो इसमे से घून्ट २ करके रोगी को पिलाते रहे। तृषा को मिटाता है और विशूचिका के लिये गुणकारी है।

पुनः

गत पृष्ठों में लिखे हुए कृपालु दवा और चन्दन की करामात वाले योग भी तृषा को रोकने और वमन को बन्द करने में अक्सीर हैं।

वमन रोकने वाले सरल योग।

वमन को रोकने वाले वह योग जो 'वमन' के प्रकरण में लिखे जा चुके हैं—विशूचिका की वमन को रोकने में भी सफल सिद्ध हुये हैं। आवश्यकता के समय उनसे लाभ उठाना चाहिये।

हां! जब हैजा के रोगी को वमन और प्यास का कष्ट तो न हो किन्तु शरीर शीतल हो गया हो तो निम्नलिखित प्रयोग व्यवहार में लावें।

हैजा के रोगी के देह को गरम करने की विधि

पुरानी रुइ के दो नमदे लेकर बारी २ से गरम करके शरीर के उन स्थानों पर—जो अधिक शीतल हों, विशेषकर हाथ की हथेलियों और पांवो के तलुओं पर सेंकदें। गरम पानी से भरी हुई बोतलें बगलों में रखें। इस विधि से शरीर की सर्दी दूर होकर बदन बहुत जलदी गरम हो जावेगा।

अभ्यङ्ग के लिये तैल।

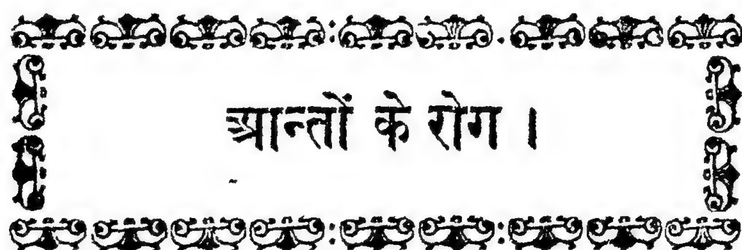
तिलों के तैल में जायफल डालकर खूब जोरदार हाथों से खरल करें और फिर इस तैल को तमाम बदन पर विशेष कर हाथ पांवो पर मालिश करें। इस मालिश से भी देह की शीतलता दूर होकर रोगी को स्वास्थ्य लाभ होगा।

मूत्र जारी करने का योग।

जब प्यास आदि दूर हो जावे और मूत्र जारी न हुआ हो तो रोगी को गरम पानी के टब में बिठादें। इस तदबीर से पेशाब जारी हो जावेगा। अनुभूत है।

मूत्र जारी करने का लेप।

कलमीशोरा या चूहे की मेंगनी अथवा दोनो पानी में पीस कर पेड़ू पर लेप करें। ईश्वर ने चाहा तो शीघ्र ही पेशाब जारी हो जावेगा।



आन्तों के रोग।

अन्तड़ियां आहार की नाली का वह भाग हैं, जो आमाशय से आरम्भ होकर मलाशय तक पेट में स्थिर हैं। हम जो कुछ खाते हैं वह पहिले आमाशय मे पकता है और फिर उसका स्वच्छ भाग तो यकृत मे चला जाता है किन्तु अवशिष्ट भाग अन्तड़ियो के मार्ग से धीरे २ उतरता है। अन्तड़ियां अपना भाग लेकर शेष को मल (पाखाना) बनाकर निकाल देती हैं।

नुकता—जो वस्तु आमाशय के लिये लाभदायक है, वह आन्तो के लिये भी मुफीद है। जो आमाशय के लिये हानिकर है,

वह अन्तड़ियों को भी हानिकर सिद्ध होती है।

पेचिश।

यह दो प्रकार की होती है। एक अन्तड़ियो मे सुद्दे पैदा होकर मल निकलने मे बाधक हो। दूसरी, जिसमे सुद्दे न हो।

यदि सुद्दे हो तो अनिवार्य रूप में इसे बन्द करने की दवा न देनी चाहिये वरना नुकसान का भय है, बल्कि जुलाब देकर सुद्दे निकालने का यत्न करना चाहिये।

अब इसकी परीक्षा कैसे हो, यह जानने के लिए निम्नलिखित पंक्तियां पढ़ें।

निदान।

ईसबगोल या सलयारा के बीज एक तोला पानी के साथ फंका दे। यदि कुछ घण्टो के पश्चात् मल के साथ साफ निकल जावें तो समझें कि सुद्दे नही है।

सुद्दे निकालने का जुलाब।

जब निदान से यह प्रतीत हो जावे कि पेचिश सुद्दो से है तो इसके लिये उत्तम जुलाब "कस्टर आयल" ही है। आवश्यकता के समय रोगी के बलाबल के अनुसार दो तोला से पांच तोला तक पाव भर समोष्ण दुग्ध मे मिलाकर कदरे मीठा करके उलट पुलट करके रोगी को पिलादे। इससे जो सुद्दा जो पेचिश का कारण बना हुआ है दस्त द्वारा निकलकर आराम होजावेगा।

यदि एकबार के जुलाब में पूर्ण रूप से न निकले तो दूसरे दिन यही जुलाब फिर दे। बार २ का अनुभूत और हमारी प्रति दिन की चिकित्सा का व्यवहृत योग है, किन्तु हम कभी छ: माशा से एक तोला तक ईसबगोल भी फंका दिया करते हैं, जिससे सुद्दे निकलने मे और भी सहायता मिलती है।

द्वितीय जुलाब।

जुलाबा की जड़ उमदा ४ माशा से ६ माशा तक लेकर ठण्डाई की भान्ति घोटकर छान ले और मिश्री मिलाकर पिलावे। इस जुलाब से सुद्दे सरलता पूर्वक निकल जाते।

नोट—प्रथम तो सुद्दा निकल जाने से पेचिश स्वयं बन्द हो जाती है, तथापि कसर रहे तो फिर उसे बन्द करने की दवा देनी उचित है—जिनका वर्णन आगामी पृष्टों में है।

पेचिश का अगद।

निम्नलिखित प्रयोग पेचिश को बन्द करने के लिये अद्वितीय है। यदि पथ्य पूर्वक इसको सेवन किया जावे तो निश्चय ही लाभ हो जाता है।

योग—बारतंग सूक्ष्म पीसकर छान रखें और आवश्यकता के समय चार माशा की मात्रा मे लेकर दही के मट्ठे या गाय की छाछ से दे। भोजन मे केवल दही व खिचड़ीदे। यह प्रयोग हमारे परम मित्र हकीम गोरधनदास,महोदय द्वारा प्राप्त है।

अकसीर दवा ।

काकडा सिंगी आवश्यकतानुसार लेकर खूब सूक्ष्म पीस कर शीशी में सम्भालकर रखें और इसमें से दो माशा की मात्रा दही के साथ दें। इसी प्रकार तीन २ घण्टा के अन्तर से चार मात्रा दें। आराम हो जायगा।

पेचिश की निश्चयात्मक दवा ।

मोचरस कूट कर छानले और २ माशा प्रातः और दो माशा सायं पाव भर दही मे मिलाकर पिलाया करें। दो तीन दिन के सेवन से निश्चय ही आराम हो जावेगा।

सफल औषधि ।

जब किसी प्रकार भी आराम होने की आशा न रही हो ऐसे अवसर पर निम्नलिखित योग से अनेक वार सफलता मिली है।

सुलेमानी वटिका एक से दो तक छाछ के साथ दिया करे। (योग पुस्तक के अन्त मे छपा है)

खूनी पेचिश की दवा ।

जब पेचिश के कारण रोगी लाचार हो वार २ दस्त की हाजत होती हो और पाखाना न आकर बहुत थोड़ी मात्रा में रक्त मिश्रित आंव (पीप) आती हो तो उसके लिये निम्नाङ्कित योग इस्तेमाल कराये। एकही दिन मे आराम होगा, अनुभूत है।

तुरंजबीन खुरासानी ५ तोला, गौ दुग्ध डेढ पाव में भिगोकर और छानकर रात्रिको पिलावें। इससे एक दो दस्त खुलकर होंगे और आराम होजायगा।

१२५ वर्ष पूर्वकी सञ्चिका का योग

वायवडिंग के बीज अधभुने ३ माशा अर्क गुलाब या मिश्री के शर्बत से दे। आशा है २-३ मात्राओं मे ही आराम हो जावेगा।

फालसे का चमत्कार

फालसा के बीज जोकुट करके रात्रिको पानी में भिगो दे और प्रात. काल उसका लुआब निकाल कर मिश्री या शहद मिलाकर पिलावें।

पथ्य—गर्म, तीक्ष्ण वस्तुयें; मांस, बैंगण, गुड शक्कर, आलू, अर्वी आदि और चलने फिरने से प्रहेज रखे।

पथ्य भोजन—साबूदाना, गेहूँ का दलिया, दही चावल आदि २ खाने को दे।

अतिसार चिकित्सा

अतिसार और पेचिश का अन्तर तो प्रकट ही है। अर्थात पेचिश में पीडा और कब्ज से पाखाना आया करता है, किन्तु

अतिसार मे बद्धकोष्टका नाम भी नहीं होता, बल्कि मल पतला होकर बारंबार अधिक मात्रा में आता है नीचे लिखे योग दस्तोको बन्द करने के लिये अक्सीर हैं।

दस्त बन्द करने की बाह्य चिकित्सा

आंवले खुशक १० तोला लेकर उनको सुक्ष्म पीसलें और फिर थोडासा घी मिलाकर चिकना करके थोड़ा २ पानी मिलाकर गूंधते जावे। यहां तक कि हलवे की भान्ति हो जाव। इसे रोगी की नाभि के चारो ओर मण्डल सा बनाकर लगादें और मण्डलके मध्य मे अदरक का रस भरदे तथा रोगी को हिदायत करदें कि न्यूनातिन्यून दो घंटे चित्त लेटा रहे। इस क्रिया से निश्चयात्मक दस्त बन्द हो जाते है।

आश्चर्यजनक दवा

दही की लस्सी में ३ वार किसी स्वच्छ लोहे के टुकडे को गरम करके बुझावे फिर यह लस्सी रोगी को पिलादे। इसी प्रकार दो तीन वार पिलाने से दस्त बन्द हो जाते हैं। अनुभूत है।

हर प्रकार के दस्त रोकने का योग

इस प्रयोग से रक्तातिसार, पेचिश और हर प्रकार के दस्त बन्द हो जाते हैं।

योग—तालमखाना १ तोला दही मे मिलाकर पिलावे।

इसी प्रकार दिन मे तीनवार इस्तेमाल किया करे। निश्चय ही दस्त बन्द हो जावेगे।

सन्यासी चुटकला

घृत मे भुनी हुई भांग २ माशा शहद मे मिलाकर रात्रि के समय चटाये। रोगी को खूब नींद आयेगी और दस्त बिलकुल रुक जायेगे। हालांकि अतिसार के रोगी को नींद बहुत कम आया करती है।

पुनः

हरे भंगरे का रस १ तोला, १० तोला दही मे मिलाकर पिलावें, इसी प्रकार शामको दे। एकही दिनमे काफी फरक मालूम देगा। अत्यन्त प्रभावक योग है।

अति लाभकारी योग

छोटी इलायची एक तोला मे से बीज निकाल कर उनका चूरण बनालें और सारा चूर्ण एक बारमे ही पानी से दे। प्रथम तो एक ही मात्रा मे अवश्य लाभ हो जायगा। अत्यन्त सरल और निर्दोष योग है।

भोजन—मूंग की दाल व चावलो की खिचड़ी दही के साथ दे और समस्त चीजो से प्रहेज राखे।



संग्रहणी

निदान—संग्रहणी उस रोग का नाम है जिसमें मटियाले रंग के ५-४ दस्त प्रतिदिन आकर एक दो दिन स्वय ही कब्ज हो जाती है और फिर पूर्ववत दस्त आने लगते है। रोगी दिन प्रति दिन दुबला होकर मृत्यु के सन्निकट पहुँच जाता है। इसके लिये निम्न लिखित योग अनुभूत है :

अकसीर संग्रहणी

कुडा छाल ४ तोला लेकर सुदम चूर्ण बनाले। फिर इस चूर्ण की समभाग ७ पुड़ियां बनावे और प्रतिदिन एक पुडी दहीके साथ खिलाया करे। यथा सम्भव भूख रहन करावे। हा दही जितना चाहे पिलातें रहे या यदि दही न मिले तो छाछही पिलाते रहें। यदि भूख अधिक सतायेतो दही चावल खिलाये। एक सप्ताह मे शर्तिया लाभ हो जायगा।

कपर्दिका की लीला

इच्छानुसार कोड़ियां लेकर जलाले और पीस कर शीशी मे सुरक्षित रखे। यद्यपि प्रत्यक्ष मे अति साधारण सी चीज है किन्तु अनुभव करने पर अक्सीर सिद्ध होती है। सवन विधि

यह है कि इस दवा में से ७ माशा किंचित शहद मे मिला कर थोड़ासा नमक मिश्रित करके रोगी को चटाये।

कृष्ण वटिका

रसौंत शुद्ध करके अग्नि पर इतना पकावे कि गाढा होकर गोलियां बांधने योग्य हो जावे। बस ! इसकी रत्ती २ की गोलियां बनाले और इनमे से ५ गोलियां छाछके साथ दिन ५ बार सेवन कराया करे। जब क्षुधा या प्यास लगे तो छाछही पिलाया करे। और कोई चीज खाने को न दे। इसी प्रकार तीन दिन सेवन कराये और तीन दिन ही रोगी को उपवास करावें। तीन दिनमें ही लाभ हो जायगा,



कोष्टबद्धता

आज ६५ प्रतिशत लोग इस रोग में ग्रसित दृष्टि गोचर हो रहे हैं और आचार्यो का कथन है कि कब्ज समस्तरोगो की जननी है। इसी के कारण से मनुष्य अनन्त रोगो यथा अर्श सिर दरद, भूख न लगना, प्रमेह, अस्तित्सार, आदि में ग्रसित होते हैं एसे अवसर पर यदि असल मूल कारण कब्ज की चिकित्सा न की जाये तो उत्तमोतम औपधियां निष्फल सिद्ध होती हैं। हां ! अलबत्ता यदि कोष्टवद्धता निवारक औषधियां सेवन कराइ जायें तो वह रोग जो कब्ज के कारण से ही उत्पन्न होते हैं, स्वयं मेव मिट जाते हैं। इसका वर्णन लिखने के लिये लम्बे विवर्ण की

आवश्यक्ता है। चूंकी आप मेरी अन्य रचनाओं में विवर्ण पढ चुके होंगे इस लिये यहां इस पुस्तक सम्बन्धी योग ही लिखे जाते हैं।

सन्यासी चुटकला

सिरस के बीज पहिले दिन एक, दूसरे दिन दो, तीसरे दिन तीन, ताजा पानी से लिया करे। इसी प्रकार ४० तक पहुंचा दे और फिर छोड़दे। निश्चय ही कब्ज नष्ट हो जायगा।

कोष्टबद्धनिवारक बूटी

सरबनफशा या गुल गावजबां पिशावरी (एक ऊदेरंग के पुष्प होते हैं) लेकर पीसलें और उसके सम भाग खांड मिलाकर सुरक्षित रखे।

सेवन विधि—रात्रि को सोते समय १ तोला की मात्रा मे ताजा पानी से खिलायें। विना किसी घबराहट और कष्टके प्रातः दस्त खुलकर आजायगा और चित्त प्रसन्न रहेगा

योग—यह दवा अमृतसर मे २) रु० सेर के भाव से गुल गावजबां पिशावरी के नाम से मिलती है।

फकीराना प्रयोग

यह अत्यन्त लाभदायक योग है। इससे उत्तम प्रयोग आज

तक नहीं पाया। केवल तीन दिन के सेवन से दायमी कब्ज दूर होकर सदैव के लिये चित्त स्वस्थ हो जाता है।

तुख्म जवाना एक तोला रात्रि के समय पानी से निगलवा दिया करे। प्रातः खुल कर दस्त होगा, आश्चर्यजनक योग है।

नोट—यह प्रयोग पीर अब्दुलरहीम निजामाबादी द्वारा प्राप्त हुआ है और उन्ही के शब्दो मे लिख दिया है। वह लिखते हैं कि हमारे हां इसको तुख्म जवाना ही कहते हैं। वैद्यक नाम तलाश करने पर नही मिला।

बिना दवा कब्ज का इलाज

यह भारतीय योगियो की क्रिया है जो अन्यान्य लाभो के अतिरिक्त कोष्टबद्धताको मिटाने के लिये उत्तम उपाय है। इससे अन्तडियो की गति बढ जाती है और भूख खूब लगती है। यह क्रिया शीर्षासन है। सिर जमीन पर रखकर टांगे दीवार के सहारे ऊपरको करे। प्रथम दिवस यह क्रिया २ मिनिट करे फिर प्रति दिन एक २ मिनट बढाते जावे और एक घंटा तक पहुँचा दे।

इसमे न केवल कोष्टबद्धता ही दूर होती है बल्कि अनन्त लाभ होते हैं जिनका यहां वर्णन करने से मजबूर है। विशेष लाभ अन्यान्य रोगो सम्बन्धी आसनो के देखना अभिष्ट हो तो हमारी "सचित्र योग साधन" नामक पुस्तक मे पढ़े।

प्रहेज—आलू अर्वी और बादी की चीजो से प्रहेज करे।

भोजन—गेहूँ के मोटे और अनछने आटे की रोटी।

यकृत और प्लीहा के रोग

यकृत और तिल्ली के रोग तो इतने है कि उनका वर्णन लिखने से एक नई पुस्तक तैयार हो सकती है। यहां साधारणतः भारतवर्षमें सर्वत्र होने वाले रोगो का कथन किया जाता है।

पाण्डु रोग

गरम चीजो के अधिक सेवन से यकृत में पित्त उत्पन्न हो कर रक्त की रंगत को पीतवर्ण कर देता है जिससे प्रथम मूत्रमे और फिर नेत्रों में और नाखुनो के अन्दर पीतता प्रकट होती है धीरे २ सारा शरीर पीला हो जाता है।

चिकित्सा

पाण्डु रोगके उत्तमोत्तम योग इससे पूर्व "अनुभूत योग चिन्ता मणी" फिटकडी गुण विधान आदि मे लिख चुके हैं, जिन मे से कइ तो एसे हैं जो सहस्रोवार के अनुभूत है। शेष जो एकौषधि से सम्बन्धित है, वह निम्न लिखित हैं। यदि इसमे भी अधिक देखने की इच्छा हो तो अनुभूत योग चिन्तामणी देखे। जिसमें आश्चर्य जनक योगो को प्रकट किया गया है।

यथा—अर्क तरबूज, यकृत रसायन चूर्ण जिससे हमने एक मास मे लगभग ५०० रोगियो की चिकित्सा की थी और सब के सब स्वस्थ हो गये।

आश्चर्यजनक माला

हमारे प्रान्तो एक महाशय एक माला बनाया करते हैं, जिसके पहिनने से दिन प्रतिदिन पाण्डू रोग कम होता जाता है और माला बढती जाती है। वह तो इस मन्त्रकी करामात समझते हैं (जो गांठ देते समय पढना बताया गया है) किन्तु वास्तविकता से साधक स्वयं अपरिचित है। यहां इस मालाकी वास्तविकता को प्रकट किया जाता है। मंत्र पढने पढानेकी आवश्यकता नहीं। केवल उस बूटी का चमत्कार है, जो गांठमे बांधी जाती है।

योग—इटसिट की जड के छोटे छोटे टुकडे बनाकर प्रत्येकटुकड़े को एक ८-६ तागे के कच्चे सूत के धागे में गांठ में बांधते जावें। यहां तक कि इसी प्रकार २१ टुकड़े बांधे जावे। बस माला तैयार है। रोगी के गले मे पहिना दें। माला बढती जावेगी और रोग कम होता चला जावेगा।

अन्य गुप्त योग

यह प्रयोग दीवान बोघाराम प्रसिद्ध यात्री के चिकित्सालय का गर्वित योग है, जो निसंकोच आपके सामने अर्पित है।

सुहागा आवश्यकतानुसार लेकर लोहे के तवे पर रखे और

नीचे आग जलाकर सुहागे को लकड़ी से हिलाते रहे। थोड़ी देर में फूलकर सफेद हो जावेगा। सुक्ष्म पीसकर शीशीमे सुरक्षित रखे।

मात्रा ४ रती प्रात: मक्खनमें लपेट कर निगलवादें। पाण्डु रोग से चाहे समस्त शरीर पीला पड चुका हो, एक सप्ताह के सेवन से पूर्ण स्वास्थ्य लाभ हो जावेगा। यह भेद की बात है।

सन्यासी चुटकला

कसौंधी के पत्ते ८ कालीमिरच ४ दाने मिलाकर १० तोला पानी मे पीसकर पिलावे। गिनती के दिनो में पाण्डु रोग दूर हो जावेगा।

सुनहरी लटका

रेवन्द चीनी ३ माशा बकरी के दूध में घिसकर रोगी को चटायें। एक सप्ताह में ही पाण्डू रोग मिट जायगा।

पवित्र चूर्ण

जीर्ण खंडहरो में से मण्डूर के पुराने टुकड़े प्राप्त करे और उनको गरम करके १०० वार खालिस सिरके में बुझावे। फिर इन टुकडोको (जब कि वह कण रूप होजावे तब) तीन दिन तक किसी हौज या खुले बर्तन मे रखे, फिर पानी निकालकर लोहे की खरल या कढ़ाई में खूब सुक्ष्म पीसकर शीशी मे सुरक्षित रखे। बस।

दवा तैयार है।

सेवन विधि—प्रातः सांय दो दो माशा दवा दही या छाछ के साथ दिया करे। पाण्डूरोग, यकृत की दुर्बलता, संग्रहणी व आमाशय की निर्बलता के लिये अतीव गुणकारी है।

प्लीहा

कारण—यह रोग मोसमी बुखार मे ग्रसित रहने के बाद या ज्वर में शीतल जल पीने से उत्पन्न होता है या कईवार सोदावी गिज़ाये अधिक खाना भी इसकी उत्पत्ति का कारण होता।

चिन्ह—बांई ओरकी पसलियो के नीचे टटोलने से एक टुकड़ासा प्रतीत होता है. बलिक कई रोगियो के बढते २ समस्त पेट को ही रोक लेती है। यह वह रोग है जिससे मनुष्य निकम्मा हो जाता है।

चिकित्सा

इस रोग को साधारणतया बहुत ही तुच्छ समझा जाता है और प्रारम्भ मे रोगी परवाह भी नही करता, किन्तु चिकित्सा करना सरल बात नहीं है। यहां इसके अवशेष योग जो कृपणता की अन्धकारमय कोठडीयो रूपी हृदयो मे बन्द थे—इस पुस्तक के पृष्ठों पर वखेर रहे हैं, आशा है गुण ग्राहक सज्जन हमारे तुच्छ त्याग का सन्मान करेगे।

विशेषाति विशेष योग

प्लीहा की सफल चिकित्सा

मुझे यह प्रयोग एक मुन्शीजी से प्राप्त हुआ था और उनको गवालियर स्टेट मे किसी जंगली जाति के व्यक्ति ने बताया था। परीक्षा करने पर रामबाण सिद्ध हुवा। चाहे कितनी ही पुरानी बीमारी हो, चार दिनमे आराम हो जाता है।

रियासत गवालियर के जगलो मे एक जानवर मिलता है, जिसको 'जरक' के नाम से पुकारते हैं। इस जानवर की खुराक केवल हड्डियां ही होती हैं, और कोइ चीज नही खाता। उसकी जिव्हा को लेकर छाया में सुखाले और आवश्यकता के समय पत्थर पर थोड़ासा पानी डालकर घिसें। और लेपसा बनाकर प्लीहा पर लेप कर दिया करे, इससे दो चार दिन में बिलकुल आराम होजायगा।

एक अत्तारने केवल इसकी जिह्वासे ही सैंकडो रुपये कमाये हैं, और उसकी ख्याति दूर २ तक फैली हुइ है।

फकीरी टोटका

जब कभी ओले बरसे तो पावभर ओले एकत्र करके प्लीहा पर बांधे। प्रथम तो एक ही बार बांधने से नही तो दोबार मे तो प्लीहा अपने पूर्व रुपमे आजायगी।

नोट—पहिले रोगीको जुलाब दे देना आवश्यक है और ओलों की बजाय बर्फ भी बांधी जा सकती है, किन्तु ओले उत्तम हैं।

प्लीहा नाशक अर्क

विलायती नोशादर की २० टिकियां लेकर अर्क गुलाब की भरी हुइ बोतल मे डालकर खूब हिलावें। सब टिकियां घुल जावेंगी। बस ! दवा तैयार है। इस अर्क की मात्रा दो तोला प्रातः काल निराहार मुख पिलाया करे। कुछ ही दिन पिलाने से तिल्ली असली हालत पर आजावेगी और प्रतिदिन एक दो दस्त खुलकर आजाया करेंगे, जिसमे बद्धकोष्ट भी मिट जायगा।

प्राकृतिक अर्क

पौष, माघ के महीने में एक धुली हुइ सफेद चादर चने के पौदोंपर बिछाकर निचोडले इसी प्रकार एक दो बोतल ओसका पानी प्राप्त करके सुरक्षित रखे। मात्रा ५ से १० तोला तक प्रति दिन पिलाया करे। इससे तिल्ली का शोथ मिटकर अपनी पूर्वदशा मे आजायगी।

लाभदायक नोट

प्लीहा के रोगी को उचित है कि भोजन करने के और पानी पीने के समय प्लीहा स्थान को दबाकर खाया पिया करे।

पथ्य–चिकनी वस्तुएं मिठाईयां आलू अर्वी. उडद्की दाल, दूध आदि से प्रहेज रखें ।

भोजन–ऊंटनी का दूध, सिरके मे बना हुआ आचार मूली, बकरी का शोरबा आदि ।

वृक्क और मुत्राशयके रोग

वृक्क शूल

बर्फ का पानी या ठंडाई, या चावल आदि अधिक सेवन करने से वृक्को मे खिचावट पैदा होकर शूल उत्पन्न हो जाता है ।

चिन्ह—वृक्क स्थान पर से शूल उठकर टीसे पीठ की ओर जाती हैं, या अंडकोषो की तरफ निकलती हैं। मूत्र त्याग की वारंवार इच्छा होती है किन्तु बून्द २ आता है ।

चमत्कारी योग

फिटकडी भुनी हुइ एक एक माशा दिन मे दो वार समोष्ण जल के साथ दिया करे, पीडा शान्त होगी ।

अनुभूत चुटकला

जगली कबूतर की सफेद बीटे चुनकर सुक्ष्म पीसले और आवश्यकता के समय एक पुडिया गरम पानी से दे। आशा है

एक ही मात्रा से पीडा शान्त हो जावेगी। अनुभूत है।

वृक्कशूल निवारक क्वाथ

महंदी के पत्र ६ माशा लेकर आध सेर पानी मे पकावें, जब १५ तोला पानी शेष रहे तो उतार कर समोष्ण पिलावे कुछ ही दिन के सेवन से आराम हो जावेगा।

सन्यासी लटका

प्रत्यक्षमें यह लटका साधारण प्रतित होता है किन्तु वास्तव में अतीव गुणकारी है।

योग—प्रतिदिन मूली का १० तोला ताजा रस निकाल कर उसमें उमदा बीकानेरी मिश्री मिला कर निराहार मुख पिलाया करे।

गुण—न केवल वृक्कशूल बल्कि दरद मसाना व रेत तथा पत्थरी आदि रोगों के लिये अद्वितीय वस्तु है।

पथ्य—चावल, गोभी, मटर, शीतल जल और उड़द की दाल से परहेज रखें।

पथ्य भोजन—मूंग या अरहर की दाल, मसालेदार मांस आदि।

सुजाक गनोरिया

यह वह कुल घातक और स्वास्थ्य का शत्रु रोग है, कि

जिसका कथन लेखनी की शक्ति से बाहर की बात है। वह लोग भारी भूल करते हैं जो सुजाक को साधारण रोग समझते हैं। सुजाक के रोगी आत्महत्या तक करने को उतारु हो जाते हैं। यह बात कथन मात्र के लिये ही नहीं बल्कि ऐसे रोगियो को हमने प्रत्यक्ष देखा है।

इस रोग के कारण जो कुपरिणाम प्रत्यक्ष मे आते हैं उनका वर्णन अनुभूत योग चिन्तामणी मे पढे। यहा केवल वह प्रयोग लिखे जाते हैं जो सुजाक को समुल नष्ट करने के अतिरिक्त बनाने में अति सरल है।

जादूई मक्खन

यह प्रयोग गुजरात के एक हकीम साहिब को एक वेश्या से प्राप्त हुआ था। अनुभव करने पर बहुत ही गुणकारी सिद्ध हुवा। अनेक बारका अनुभूत है। केवल ३-४ बार क सेवन से फायदा हो जाता है। चाहे पीड़ा और पीप कितनी ही अधिक क्यो न हो निश्चय ही लाभ होता है।

प्रयोग—राल ६ माशा, ३ सेर गायके दूध मे मिलाकर गरम करे और फिर नियमानुसार दही जमा कर प्रात. बिलोले और मक्खन निकालले। यह मखन रोगी को दो दिन मे खिलाकर छाछ भी ऊपर से पिलादे। इसी प्रकार एक बार फिर करें। निश्चय ही स्वास्थ्य लाभ होगा।

अत्ताइ नुसखा

हल्दी की गांठ २ माशा लेकर बकरी के पावभर कच्चे दूध में घिसें और रोगी को तुरन्त पिलादे। इसी प्रकार प्रतिदिन प्रातःकाल पिलाया करे। चार दिन के सेवन से सुजाक की जड़ें कट जाती हैं।

यह एक अत्ताई हकीम के हृदय का रहस्य है जिसके कारणसे वह बहुतही प्रसिद्ध होरहा है। यदि नुसखा गुप्त रखना हो तो हल्दी की गांठो को पीसकर दो दो माशा की गोलियां बनालें और रोगी को हिदायत करदे कि एक गोली बकरी के दूधमें घिसकर सेवन करे। या निम्न विधि से तैल निकाल ले।

हरिद्रा तैल

हल्दी ५ सेर एक हंडिया में डालें और ऊपर से ढाई सेर गौ दुग्ध डाले और ध्यान रखें कि जब दूध जज्ब होजाय एवं हल्दी खुश्क होजाय तब पाताल यन्त्र से तैल निकाल कर सुरक्षित रखे। आवश्यकता के समय एक सींख भर मक्खन में खिलाया करें।

अक्सीर चुटकला

फालसे की जड़की छाल एक तोला रात्रिको पानी में भिगोकर रखदें। प्रातः मल छानकर मिश्री मिश्रित करके प्रतिदिन

पिलाया करे। घोड़े, ऊंट की सवारी गुड़, चाय और मैथुन से प्रहेज रखें। भोजन मे दलिया, खीर, खिचडी आदि दें।

मूत्रावरोध

मूत्रेच्छा को अधिक देर रोक रखने से (या मुत्राशय के ढीला होजाने से पेशाब बिलकुल बन्द हो जाता है। कभी २ वृद्ध पुरुषो का जिनको कभी मुत्रकृच्छ, सुजाक की बीमारी रही हो) अचानक मुत्रावरोध होजाया करता है, जोकि चिकित्सा साध्य नहीं होता। शेष कारणो से हुए मुत्रावरोध की चिकित्सा निम्न-लिखित है।

पेशाब जारी करने का प्रयोग

खरबूजा के खाने से पेशाब खुलकर आता है। विशेषकर छिलका बहुतही गुणकारी होता है। इससे रुका हुआ पेशाब फौरन खुल जाता है। नीचे हम रसायन का वह लेख उद्धृत करते हैं, जो एक कथा के रुप में मेरे सम्पादकत्व मे निकलने वाले मासिक पत्र रसायन मे छपा था, ताकि पाठकों को इस योग के मूल्य का अनुमान होजावे।

कथा

नवाबी युगमे हकीम मसीहउल्ला खां साहिब बड़े प्रसिद्ध हकीम थे। बड़े २ मारके के इलाज किये थे। जब कोई रोगी अन्य

चिकित्सकों से निराश हो जाता तो आपकी सेवा में उपस्थित होकर स्वास्थ्य लाभ करता था। हकीम साहिब इतने निपुण थे कि रोगी की शकल देखकर कह देते थे कि भई अब मेरे पास कोई उपाय नहीं। फिर चाहे कुछ भी हो उसकी चिकित्सा नहीं करते थे और जिसका हाथ पकड़ लेते थे उसे स्वास्थ्य करके ही छोड़ते थे। हकीम साहिब बहुत तेज प्रकृति के थे और चाहे कोई अमीर हो या गरीब अपनी फीसका अर्द्ध नही तो चौथाई भाग तो अग्रिम मंगा लिया करते थे और यदि रोगी को आराम न हो तो रुपया वापिस कर देते थे।

एक दौलतराम नामक करोड़पति सेठ मुत्रावरोध के रोग में ग्रसित होगया। दो दिन और दो रातें व्यतीत होगई किन्तु एक बूंद पेशाब न उतरा। इस बीच में शहरके तमाम हकीमों, वैद्यों का इलाज हुवा मगर कुछ फायदा न हुवा। इत्तफाक से नवाब साहिब के पास एक प्रसिद्ध अंग्रेज डाक्टर साहिब भी आये हुये थे, उनको भी बुलवाया गया मगर उन दिनों अंग्रेजी दवाइयां प्रचलित नही थीं, इस लिये डाक्टर साहिब का प्रिस्क्रीपशन लिखा हुवा धरा रहा और डाक्टर साहिब गुडबाई कहकर विदा हुये। अब अन्तिम चिकित्सा हकीम मसीहुल्ला खां की शेष थी। मुनीमजी सवारी लेकर हकीम साहिब के पास गये। हकीम साहिबने रोगी की दशा सुनकर कहा कि हमारी फीस क्या दोगे। न्यूनाधिक करके १०००) रु० निश्चय हुये, जिनमें स ५००) उसी समय दे दिये गये और हकीम साहिब रोगी के निकट पहुँचे।

नाड़ी देखकर कहाकि खरबूजे के छिलके मंगावो। ग्रीषम ऋतुथी, खरबूजो की फसल का आरम्भ था इसलिये सरलता पूर्वक मिल गये। छिलके लाकर पीसे गये और छानकर थोड़ीसी मिश्री मिला कर रोगी को पिला दिये। इश्वर की कुदरत, १५ मिनट बादही पेशाब खुलकर हुआ। पेट जो फूल रहा था और जिसके कारण कष्ट था, सब मिट गया। घर भर मे आनन्द की लहर दौड़ गई। हकीम साहिब को शेष ५००) दूसरे दिन पहुँचा देने के वायदे पर विदा कर दिया। सेठ, साहूकार रुपये पैसे के मामलेमें कठोर होते हैं, और खरबूजे के छिलको का इलाज देख चुके थे, इसलिये जो ५००) अग्रिम दिया था वही उनको बहुत अधिक प्रतीत होने लगा। सारांश फिर हकीम साहिबको एक पाइ भी न देने का सेठ साहिबने निश्चय कर लिया और हकीम साहिब कुछ बार तकाजे भेजकर चुप हो रहे।

पूरे छ मास बाद फिर सेठ दोलतराम का पेशाब बन्द हो गया। नुसखातो मालूम ही हो चुका था इस लिये खरबूजे के मोसिम मे दुःख दरद के लिये खरबूजो के छिलके भी एकत्र कर के रख लिये थे, अतएव पानी मे पीसकर पिलाये गये और जब पेशाब न हुआ तो और पिलायेगये, फिर भी पेशाब न उतरा तो बारंबार पिलाये गये सारांश कुछ बार पिलाने से और मुत्रावरोध के कारण से सेठ साहिब का पेटफूल कर ढोल बनगया और असह्य वेदना के मारे बिन पानी की मीन की भांति तडपने लगे। अब हकीम साहिब को बुलाने का ध्यान आया, लेकिन पहिले ही

आधी फीस मार चुके थे, इस लिये ५००) रु० लेकर मुनीम जी हकीम साहिब के पास पहुंचे और कहा कि सेठजी फिरबीमार हो गये हैं और यह पिछले रुपये भी भेजे हैं। आप पधारिये। हकीम साहिब ने रुपये लेकर तिजोरी में रखे और कहा, भाइ मुझे चलने मे तो कोई उजर नही किन्तु इसवार की पूरी फीस पेशगी रख दीजिये फिर चल सकूगां। आवश्यक्ता बुरी बला होती है, मुनीमजीने उसी समय १०००) मंगाकर हकीम साहिबके चरणोंमें रख दिये। हकीम साहिबने जाकर रोगी को देखा और अत्यन्त चिन्तित से होकर कहने लगे कि खरबूजे के छिलके मंगावो। मोसम नो नहीं है किन्तु तलाश करने पर कहीं न कही से मिल ही जायेगे। खरबूजे के छिलको का नाम सुनकर घर वालोंने कहा कि हकीम साहिब छिलके तो हम ७ वार पिला चुके हैं, उनसे तो तकलीफ और बढ गइ है। हकीम साहिबने गंभीरता पूर्वक कहा कि इस रोग का इलाज तो यही था। खैर! छिलके मगवाये गये और पूर्ववत विधि मे पीसे गये। केवल अन्तर इतना था कि पहिले छिलके योही पीसकर पिला दिये गये थे और इसवार उन को गरम करके पिलाया गया, जिसका तत्कालीन प्रभाव हुआ और पेशाब खुलकर आगया तथा सेठजी स्वस्थ हो गये।

हकीम साहिबने कहा कि पहिले ग्रीष्म ऋतुथी इस लिये शीतल ही पिलाये गये और चूंकि आजकल शीत ऋतु है, इस लिये गरमकरके पिलाना उचित था। इसके पश्चात हकीम साहिबने किसी माजूनकी तीन मात्राये दी और कहा कि पेशाब तो खुल ही

गया है अब रोगका अन्त इस माजून से होजायगा और भविष्यमें फिर यह रोग कभी न होगा।

सेठ साहिब चिरकाल तक हकीम साहिबके श्रधालु बने रहे मगर मुनीमजी को आयुपर्यन्त यह अफसोस रहा कि यदि यह बात पहिले मालूम हो जाती कि गरमियों में मरद और सरदियोंमें गरम करके खरबूजे के छिलको को पीसकर पिलाने से लाभ होता है तो १५००) रु० का नुकसान कदापि न होता।

अत्यन्त प्रभावक योग

कस्टर आयल १। तोला गरम पानी में मिलाकर पिलायें। तत्काल लाभ होगा। प्रत्यक्ष मे साधारण सी चीज है किन्तु गुणों मे मूल्यवान नुसखों से बाजी ले जाता है।

पेशाब जारी करने का तीसरा प्रयोग

कागजी निम्बु काटकर दो टुकडे करे और उनके बीज निकालकर उनमें कलमी शोरा भर दे और कोयलों की आंच पर रखदें ताकि जोश मारने लगे। बस समय नीचे उतार कर समोष्ण हालत में ही नाभि के चारों और मलदे। बन्द पेशाब जारी हो जाता है।

पथरी

डाक्टरों का ख्याल है कि बिना आपरेशन पथरी किसी

दशामें जा नहीं सकती, किन्तु वैद्यक और युनानी के वैद्य हकीम बड़ी से बड़ी पथरी को रेत बनाकर निकाल देते हैं। एक ऐसाही प्रयोग अनुभूत योग चिन्तामणी के द्वितीय भाग में लिखा गया है जो ५-६ दिन सेवन कर लेने से पथरी को निकाल देता है, यहां कुछ सरल प्रयोग लिखे जाते हैं।

पथरी तोड

उत्तम यवक्षार सुक्ष्म पीसलें और दो माशा प्रतिदिन मिश्री के शर्बत के साथ दिया करे। पथरी के लिये गुणकारी है।

नोट—बाजारी यवक्षार शुद्ध नही होता इसलिये किसी विश्वास पात्र औषधालय से खरीदें या निम्न विधि से स्वयं बनालें।

यवक्षार बनाना

जबके ऐसे पौदे जो पकने के सन्निकट हों-लेकर छायामें सुखालें और सूखने के बाद सबको जलाकर राख बनाले। इस राखको अष्टगुणे जलमें भिगोकर रख छोड़े। दिनमें तीन बार लकडी से हिला दिया करें। तीन दिन के बाद ऊपरसे निथरा हुवा पानी लेलें और कढाही मे डालकर पकावे, जब तमाम पानी जल जावेगा तब नीचे सफेद रंग का द्रव्य रह जायगा। यही यवक्षार है।

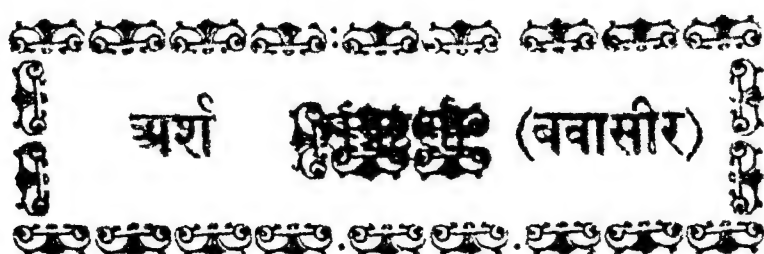
मूली क्षार

उपरोक्त विधि के मूलीयो को सुखाकर जलालें और क्षार

निकाललें। यह भी पथरी के लिये अक्सीर है।

चिकित्सा

हरमल के बीज, १ माशा रात्रिको समोष्ण जल में कई दिन निरन्तर सेवन करने से बहुमूत्र या रात्रिको नींद में पेशाब निकल जाना आदि के लिये लाभदायक है।



यह प्रसिद्ध रोग है जिसके विवरण की आवश्यकता नहीं। मेरे ख्याल मे भारतवर्ष का कोइ घर ऐसा बचा होगा जिसमे किसी न किसी पर इसका प्रकोप न हो। इसका विषद वर्णन, कारण, निदान और अछूते उत्तमात्तम अनुभूत प्रयोग "अनुभूत योग चिन्तामणी" मे वर्णन किये जा चुके हैं, वहां देखले। यहां वह प्रयोग लिखे जाते हैं जो अमिश्रित, सरल होने के अतिरिक्त अनेक बारके अनुभूत और रामबाण हैं। यह तो प्रमाणितही है कि मेरी कृतियोंमे जितने प्रभावक, अनुभूत प्रयोगोका संग्रह किया जाता है उनसे बडी से बड़ी मूल्यवान पुस्तको के पृष्ट वंचित है। यदि मैं यह कहदूं कि इससे पूर्व किसी बड़ी से बड़ी पुस्तकमे इसके सम-तुल्य प्रयोग जो कमखरच, सरल और अनुभूत तथा अधिकाधिक गुणकारी हों-प्रकाशित नहीं हुये तो किंचित भी अनुचित न होगा।

चूंकि अर्श (बवासीर) का रोग अधिक से अधिक कष्ट-दायक होने के अतिरिक्त दरिद्रता की भान्ति भारतवर्ष में फैला हुआ है, इस लिये आवश्यकता है कि इसके रामबाण योगों को भी (विशेषकर वह योग जो अत्यन्त सरलता पूर्वक बनाये जा सकते हों) अधिकाधिक संख्या में लिखकर प्रकाशित किये जावें, ताकि एक नुसखा इच्छानुसार लाभ न करे तो उसकी अपेक्षा दूसरा योग सेवन किया जा सके।

यहां कुछ प्रयोग अङ्कित किये जाते हैं. उस दयालु भगवान से प्रार्थना है कि वह सेवन करने वालों को स्वास्थ्य प्रदान करें। आमीन'

सन्यासी चुटकला।

(जो रक्तदोष, कण्डू, अपाचन और कोष्टबद्धता के लिये भी अक्सीर है।)

वास्तव में कुछ ऐसी वस्तुएं जो निरार्थक प्रतीत होती हैं—उनमें अत्यन्त गुण भरे होते हैं। हम यहां एक ऐसाही योग अर्पित करते हैं जिसको किसी विशेष नामसे हम अपने रोगियों को सेवन करा रहे हैं। यदि यह रहस्य उन पर प्रकट होजाये तो न मालूम वह क्या ख्याल करें।

प्रयोग का वर्णन करने से पूर्व यह निवेदन कर देते हैं कि इसे सावधानी पूर्वक तैयार करके सुन्दर शीशियों में भरकर रखें और रोगियों पर इसका भेद प्रकट न होने दे, वरना लाभ की आशा सशंकित हो जायगी।

प्रयोग ।

इच्छानुसार उपले लेकर जलाले और उनकी राख को कपड़ छान करके शीशोमें सुरक्षित रखें। मात्रा ६ माशा बासी पानी के साथ कुछ दिन सेवन कराने से बवासीर और उसके उपसर्ग आदि मिटकर स्वास्थ्य लाभ होगा।

लाभदायक परिवर्तन ।

उपरोक्त रूपमें भेद खुल जाने की आशंका है, और मात्रा भी अधिक है, इसलिये हम निम्नलिखित विधिसे उसका सत्व निकालकर इस्तेमाल कराते हैं, जिससे उपरोक्त दोष दूर होजाते हैं। विधि यह है कि इच्छानुसार राख लेकर यवक्षार की भान्ति पकाकर क्षार निकालले। यदि श्वेतता कम हो तो पुनः बनावें।

मात्रा केवल ४ रत्ती से १ माशा तक नुनी घी में रखकर प्रातःकाल खिलाया करे। निरन्तर १५ दिन का सेवन खूनी बादी दोनों प्रकार की अर्श को लाभदायक हैं।

कटु पुड़िया ।

इस योगकी प्राप्तिकी विचित्र कथा है। हमारे एक सहपाठी को हुक्का पीने का व्यसन था और वह एक आदमी के हां हुक्का पीने जाया करता था। एक दिन उस आदमी को बवासीर की कठिन पीडा हो रही थी और हमारे सहपाठी ने जाकर हुक्का पीने

को मांगा, चूंकि रोगी सख्त बेचैन हो रहाथा इसलिये उसने बड़बड़ाना आरंभ किया कि मैं तो अर्श की पीडा के मारे मर रहा हूँ और आपको हुक्के की पड़ी है। मुझे आप जैसे हिकमत पढने वालों से क्या लाभ हुवा।

हमारे सहपाठी ने जो दवा ज्वरों के लिये बनाइ हुई थी, जेब मे से निकालकर समय को टालने के लिये उसे देदी। जिसके कुछ दिन के सेवन से रोगी की न केवल पीडा ही शान्त होगई बल्कि रोगही समूल नष्ट होगया। इसके पश्चात तो वही दवा जो ज्वरों के लिये व्यवहृत होती थी–बवासीर की अकसीर बन गई। प्रायः जहां भी परीक्षा की गई वहीं लाभदायक पाया। हमने भी अनेक बार परीक्षा करके लाभदायक पाया है।

प्रयोग—करंजुआकी गिरी इच्छानुसार लेकर सुक्ष्म पीसकर चूर्ण बनालें या पानीकी सहायतासे चर्णोके समान गोलिया बनालें। दवा तैयार है।

सेवन विधि—मात्रा ३ माशा ताजा जलके साथ प्रातःकाल दिया करे। अर्श के लिये अतीव गुणकारी वस्तु है। १०–१५ दिन के इस्तेमाल से फायदा हो जाता है।

नोट—करंजुआ की गिरी के और भी अद्भुत गुण भिन्न २ योगों के शीर्षक में लिखे जायंगे।

अर्श नाशक चूर्ण।

यह प्रयोग एक सन्यासी द्वारा प्राप्त है, जिसके निरंतर दो

सप्ताह के सेवन से बवासीर चाहे किसी प्रकार की क्यों न हो, फायदा होजाता है और फिर पुनः इस रोग का दोरा नहीं पड़ता।

कचूर एक प्रसिद्ध वस्तु है, इसे लेकर सूक्ष्म पीस लें और इसमें से ६ माशा प्रतिदिन प्रातः सायं पानी से निगलवा दिया करें।

फक़ीरी गोलियां।

यह गोलिया बादी की बवासीर के लिये अतीव गुणकारी हैं। यदि चिकित्सा करते २ तंग आगये हो तो तनिक इनको भी सेवन करा कर चमत्कार देखिये। इश्वर की कृपा से जो लाभ महीनों और सप्ताहोंमें दृष्टि गोचर नहीं हुआ था, वह इन गोलियोसे दिनों में होने लगता है। इसके अतिरिक्त खूनी बवासीर के लिये भी उत्तम वस्तु है।

योग—कुकरोंदा बूटी जिसे कुक्कड़ छिंदी के नाम से भी पुकारा जाता है खूब हरी भरी लेकर खरल में डालकर खूब कूटे और मलमल के स्वच्छ वस्त्र में दबाकर रस निकालले। रस न्यूनातिन्यून एक सेर होना चाहिये। इस रसको कलईदार देगची में डालकर चूल्हे पर रखे और नीचे मन्द २ अग्नि जलाते रहें। जब कवास गाढा होजावे तो उसमें ४ माशा काली मिरच सूक्ष्म पीसकर मिलादें और नीचे उतार कर जंगली बेर के बराबर गोलियां बनालें।

सेवन विधि—मात्रा एक एक गोली प्रातः सयं बासी पानी के साथ देते रहें। दोनों प्रकार की बवासीर के लिये अक्सीर है।

एक महात्मा का गुप्त योग।

हमारे प्रान्त में एक साधू अर्श चिकित्सा के लिये बहुत प्रसिद्ध हैं। उनकी अक्सीरी दवाई से एकही दिनमें बवासीर का चिन्ह भी नहीं रहता। वह अपनी ओर से प्रयोग को छुपाने का पूर्ण प्रयत्न करते हैं, किन्तु उनका रहस्य अप्रकट रूपसे मुझपर प्रकट हो ही गया, जो आज पाठकों की सेवामें सादर समर्पित है।

योग—एक खटमल को केले की फलीके मध्य में बन्द करके रोगीको सूचना दिये बिना खिलावें। बस ! एकही दिन प्रयाप्त है। किन्तु मेरा अनुभूत नहीं है।

खूनी बवासीर का सरल योग।

मुण्डी बूटी की घुंडियां ७ नग, १५ तोला पानी में घोट छानकर प्रतिदिन प्रातःकाल पिलाया करें। रक्तार्श कुछ ही दिन के सेवन से निर्मूल हो जाता है। बवासीर का खून तो पहिले दिन ही बन्द होजाता है।

एक फकीरी चुटकला।

एक ऐसा हुक्का तलाश करें, जिसमें चरस पिया जाता हो, उसकी नय के भीतरी भाग से मैल निकाल कर सुरक्षित रखें।

मात्रा १ ग्रेन (आधी रत्ती) तीन दिनमे कठिन से कठिन अर्श दूर होजाती है।

चमत्कारी।

यह दवा जहां अन्य रोगों मे चमत्कारी गुणवाली सिद्ध हुई है, वहां बवासीर के लिये भी चमत्कारी ही वस्तु है। चाहे सेरो खून जाता हो-इसकी एक दो मात्रा से ही रुक जाता है और कुछ दिन के निरन्तर सेवन से रोग समूल उखड़ जाता है।

योग—कुडाछाल यथावश्यक लेकर कूट पीसकर सुरक्षित रखें। मात्रा ४ माशा प्रात: साय गौ घृत दो तोला के साथ दिया करें।

नोट—इसकी कटुता से घृणा हो तो निम्निलिखित विधिसे इसका क्षार बनाकर काम में लावें।

कुटकी क्षार।

उम्दा कुडाछाल स्याही मायल होती है, उसे लेकर जलालें और राख बनाकर आठ गुने पानी मे भिगोदें और यवक्षार की भान्ति क्षार बनाले।

मात्रा—दो रत्ती धुले हुये मक्खन में दिया करे। बरनाला के एक हकीम इसके बड़े श्रद्धालु हैं। और हर समय अपने औषधालय में प्रस्तुत रखते हैं।

खूनी बवासीर की गोलियां ।

जिस वस्तु को लोग रद्दी समझकर फैंक देते हैं, जानने वाले लोग उन्हीं से लाभ उठाते हैं और वह लाभ—जो मूल्यवान औषधियों से भी प्राप्त होना संभव नहीं होता । इसी प्रकार के एक योगका वर्णन किया जाता है, जोकि खूनी बवासीर के लिये अत्युत्तम है ।

प्रयोग—इमली की छाल को पानी में पीसकर चणे के बराबर गोलियां बनाले और प्रतिदिन तीन गोलियां पानी से खिलाया करें ।

लाभदायक चूर्ण ।

सरयाली के बीज हथेली भर प्रतिदिन पानी के साथ खिलाया करें । २१ दिन के सेवन से लाभ होगा । विशेषकर खूनी बवासीर के लिये अतीव गुणकारी है ।

अर्श रक्तरोधक योग ।

जब अर्श का रक्त जारी हो और प्रतिदिन अत्याधिक निकल रहा हो तो ऐसे समय में रक्त को देखकर रोगी के औसान खता होजाते हैं । कइबार तो सेर २ खून एकदम निकलता है, जिससे रोगी बहुत ही दुर्बल और कमजोर होजाता है । चेहरे पर मुर्दनी छा जाती है । प्रथम तो रक्त बन्द करने का प्रयत्न करें

किन्तु जब अत्याधिक निकलने लगे तो निम्नलिखित प्रयोगों को काम में लावें।

राख की चुटकी।

नारियल का छिलका (जिसके प्राय: रस्से बनाये जाते हैं) जलाकर राख बनालें और उस राख को कपड़े में म छानकर इसके समभाग मिश्री मिलाले और शीशीमे सुरक्षित रखे।

मात्रा—एक तोला प्रात:काल बासी पानी से दें। एक दो मात्रा खिलाने से ही रक्त बन्द होजाता है।

सुगन्धित्त चूर्ण।

कालाजीरी को सूक्ष्म पीसकर सुरक्षित रखें और आवश्यकता के समय १॥ माशा दवा गौ दुग्ध की मलाई में लपेटकर खिलावें। एक या दो मात्रा खिलाने से ही रक्त बन्द होजाता है। यह प्रयोग पं० गोरधनदास द्वारा प्राप्त है।

चमत्कारी ठंडाई।

आमकी कोपल १ तोला को पानी मे ठंडाई की भान्ति घोटकर मिश्री मिलाकर पिलावें। एक दो दिनमे रक्त बन्द होगा।

गूंदनी का प्रभाव।

गूंदनी एक प्रसिद्ध लसुडे से मिलता जुलता वृक्ष होता है

जो रक्तार्श का खून बंद करने में अकसीर से कम नहीं।

योग—गूंदनी के पत्ते दो तोला, १० तोला पानी में मिलाकर रगड़ कर छान ले और प्रातः सायं पिलाया करें। रक्त जल्दी से जल्दी रुक जायगा।

गैंदे की तासीर

जड़ी बूटियों का ज्ञान रखने वाला प्रत्येक मनुष्य जानता है कि गैंदा बवासीर के लिये एक अगद है। यदि गैंदे के एक तोला पत्ते और १० कालीमिरच, दस तोला पानी में घोट छान कर पिलाये जावें तो अर्श का शोणित चाहे कितनी ही तेजी से क्यों न बहता हो—दो तीन मात्रा देने से ही बन्द होजाता है।

सरल योग

सियालकोटी कागज जलाकर राख करले और उसमें से दिन में ३ बार तीन मासा ठंडे पानी से दें। खून बन्द हो जायगा।

सुन्हरी पुड़िया

कहर्वा का चूर्ण २ माशा दिन में तीन बार देने से हर प्रकार का रक्त बन्द हो जाता है।

मस्सों को दूर करने वाले प्रयोग

अर्श के रोगियों के जब मस्से फूल जाते हैं तो उनको

किसी प्रकार चैन नहीं पड़ता। यदि मस्सों के जोर को तोड़ दिया जावे तो रोगी चैन स सो जाता है।

यद्यपि अन्याय पुस्तकों में मस्सों को नष्ट करने के उत्तमोत्तम योग मिलते हैं किन्तु इन द्रव्यों को एकत्र करना प्रत्येक मनुष्य का काम नहीं, इसलिये इनसे हरएक आदमी लाभान्वित नहीं होसकता। किन्तु विपरीत इसके हमारी इस छोटीसी पुस्तक के प्रयोग चाहे उनसे तनिक कम प्रभावक और गुणों में कम रुतबे के हो, परन्तु हैं सबके सब ऐसे योग जिनसे निर्धन से निर्धन और छोटे से छोटे गांव का निवासी भी क्षण भर मे तैयार करके लाभ उठा सकता है। फिर यदि एक प्रयोग अनुकूल न पडे तो दूसरा बना लीजिये।

एक पंथ दो काज

एक तोला तूतिया लेकर सेर भर पानी में उबालें, और आग पर से उतार कर रखें। जब समोष्ण रहे तो उस से गुदा और मस्सों को धोया करे। इससे कुछ ही दिनों में मस्सों का फूलना व पीड़ा आदि बहुत जल्द दूर होकर कुछ दिनों के निरन्तर इस्तेमाल से मस्से मुरझा जाते हैं। अति गुणकारी योग है।

सरल चुटकला

नौसादर को सुक्ष्म पीसकर शीशी मे रखे और मल

त्याग कर गुदा धो लेने के बाद एक चुटकी उपरोक्त नौशादर थूक में तर करके मस्सों पर लगाया करे। कुछ दिन के इस्तेमाल से मस्से दूर हो जावेंगे।

धूनी

अबाबील की बीट जितनी मिलसके, एकत्र करके सूक्ष्म पीसकर सुरक्षित रखे और प्रातः शौच जाने के बाद उपलों की निर्धूम आंच पर १ तोला दवा डाल कर मस्सों को धूनी दे। चारों ओर से शरीर को कपड़े से ढांकले, ताकि धूवां सीधा मस्सों पर लगे। कुछ दिन धूनी देने से मस्से गिर जाते हैं।

द्वितिय प्रयोग

बैल या गाय का सींग जो जमीन में दबकर वर्षाऋतु में फूट निकलता है, उसका कुर्रा एकत्र करके रखलें और उसमें से एक माशा जंगली कण्डों की निर्धूम आगपर डाल कर धूनी दिया करे। बिना किसी कष्ट से कुछ दिन में मस्से गिर जायेंगे।

मल्हर

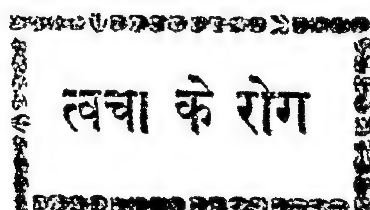
गाय की नूनी ५ तोला को १०० बार धोलें और उसमे एक तोला सीसा घिस कर मिलादे। बस मल्हर तैयार है, उसको किसी चीनी या कांच की शीशी में सुरक्षित रखें और

प्रातः सायं शौच से निवृत्त होकर लगाया करे। १०-१५ दिन में मस्से मिट जायेंगे।

जंगली कंडों का तैल

जंगली उपले आवश्यक्तानुसार लेकर जमीन में गढ़ा खोदकर डालदे और उनको आग लगाकर ऊपर पीतल की थाली औंधी रखदे और एक ओर से धूआ निकलने को तनिक छिद्र रखदें, बाकी सब जगह से बन्द करदें। इस प्रकार करने से तमाम धूंआ उडकर तैल के रूप में थाली के भीतरी भाग मे लग जावेगा, उसको उतार कर सुरक्षित रखें।

प्रतिदिन प्रातः सायं शौचादि से निवृत होकर मस्सों पर लगाया करें। इसके लगाते रहने से कुछ ही दिन में मस्से मुर्झाकर नष्ट हो जावेगे। यह प्रयोग एक अत्तार हकीम से मिला था।



त्वचा के रोग

नीचे उन रोगों का वर्णन किया जाता है, जिनका सम्बन्ध किसी विशेष अङ्ग से नहीं बल्कि समस्त शरीर से होता है। यथा फोड़ा, फुनसी, दाद, चंबल उपदंश नासूर आदि २, ताकि पाठकों को ढूंढने में कष्ट न हो। चम्बल का अक्सीर योग यह है।

चम्बल का अकसीर योग

काही जरद (पीली) आवश्यकतानुसार लेकर सरसों के तेल मे खूब अच्छी तरह पीसले और चम्बल पर लेप करदे। प्रथम तो एक ही लेप से आराम हो जावेगा, वरना दूसरा लेप और करदें।

दद्रुनाशक जड़ी

चोक एक प्रसिद्ध जड़ी है, जो पन्सारियो के यहा भी इसी नाम से सर्वत्र मिल सकती है। चोक आवश्यकतानुसार लेकर थूक मे घिसकर लेप करदे। आशा है एक वार के लेप से दाद मिट जायगा, वरना एक दो वार फिर लगावे।

एक और बूटी

एक हकीम साहब ने बताया कि मेरे मुख पर एक दाद बहुत ही रद्दी किस्म का होगया था। बहुतेरी चिकित्सा की परन्तु लाभ न हुवा। अन्त मे एक सन्यासी ने काज़ीदस्तार का दूध लगाने को कहा। सन्यासी जी के कथनानुसार तमाम दाद पर काजी दस्तार का दूध लेप कर दिया गया, किन्तु लगाते ही असह्य जलन होने लगी जिसकी निवृति पंखे पर पानी छिडक कर हवा करके की गई। यद्यपि इस प्रकार जलन में कुछ कमी अवश्य प्रतीत हुई तथापि कुछ देर तक वही दशा रही। एक वार के लगाने से ही दाद की कूजा मिश्री के तादृश्य सफेद

कीलें एक ही दिन में निकल कर उस दुष्ट रोग से छुटकारा मिला।

इस प्रयोग का हमने स्वयं अनुभव किया था। वास्तव में अत्यन्त ही गुणकारी पाया। यह बूटी काजीदस्तार के नाम से ही प्रसिद्ध है जो पंजाब के दोआबा प्रान्त और लाहौर के आस पास अत्याधिक मिल सकती है। हमने सिरसाके विक्टोरिया गार्डन से लेकर अनुभव किया था।

सरल मल्हर

प्रसिद्ध यात्री दीवान बोधाराम ने बतलाया था कि भेड की ऊन सफेद को जलाकर राख बनाले और १०० बार धुले हुये मक्खन में मिलाकर लगाया करे, अति लाभकारक मल्हर है।

अन्य योग

खरबूजा के बीजों की मीगी लेकर पानी में इतनी घोटें कि मक्खन जैसी बन जावे। इसको प्रातः सायं दाद पर लगाने से गिनती के दिनों में फायदा हो जाता है।

लाहौरी फोड़े का योग

इस फोड़े का इलाज बहुत कम लोग जानते हैं, यह दुष्ट ऐसी गहरी जड़ें गाडता है कि रोगी का पीछा नहीं छोडता।

इसके लिये निम्न लिखित प्रयोग जो एकौषधि होने के अतिरिक्त अत्यन्त लाभदायक है हमने स्वयं अनेक बार अनुभव करके मुफीद पाया है।

योग—जमालगोटे की मींगी पानी मे पत्थर पर घिसकर फोड़े पर लेप करदे। इससे जलन और कष्ट तो होगा बल्कि कुछ घन्टों के बाद ज्वर भी हो जायगा किन्तु चिन्ता की कोई बात नहीं। दूसरे दिन फिर इसी प्रकार लेप करे। फोड़े में पीप पड़ जायगी और यह पता भी न लगेगा कि इसकी जड़े कब पानी होकर बह गई। सर्वोत्तम योग है।

नोट—एक प्रयोग विभिन्नयोगों के प्रकरण में लिखा जायगा, वहां देखलें।

चिरकाल के फोड़े की चिकित्सा

जो फोडा या फुन्सी किसी प्रकार अच्छा न होता हो उसके लिये अनेक बार का अनुभूत, निम्नलिखित योग अत्यन्त लाभकारी सिद्ध होता है।

खारपुशत खुशक लेकर जलाले और उसकी भस्म को सुरक्षित रखे। आवश्यकता के समय तैल से चुपड़ पर ऊपर भस्म (राख) छिड़क दे। बस, इसी प्रकार कुछ बार लेप लगाने से शर्तिया आराम हो जावेगा।

कण्डु, दाद, चम्बल, फोड़ा, फुन्सी की

एक मात्र चिकित्सा

नीचे दो तीन ऐसे योग लिखे जाते हैं जो दूषित रक्त को साफ करके रक्त दोष से उत्पन्न होने वाले रोगों को निर्मूल कर देते है।

कुन्दन बदन

नगंदबावोरी (प्रसिद्ध दवा है) एक तोला, काली मरिच १० पानी मे घोट कर छानलें और शहद मिलाकर प्रातःकाल पिलाया करे। इसी प्रकार १५ दिन निरन्तर सपथ्य सेवन करने से शरीर का दूषित रक्त साफ होकर शरीर कुन्दन बन जाता है। दवा के सेवनकाल मे बेसनी रोटी और घी के अतिरिक्त और कोई चीज न खानी चाहिये, यह अत्यावश्यक है। दवा पुरानी न हो इसका भी ख्याल रखे।

अन्य रक्तशोधक जड़ी

जलनीम उत्तम कोटि की रक्त शोधक जड़ी है। यही ६ माशा जल नीम और सात काली मिरचे घोट कर पिलाने से हर प्रकार की खून खराबी दूर होकर काया निर्मल हो जाती है। जलनीम बूटी नहरों के किनारे सर्वत्र मिलती है। स्वाद कटु होता है। ईश्वर की कृपा रही तो शीघ्र ही उन तमाम बूटियो

के ब्लाक के असली रंग के चित्र अपनी "भारतीय जड़ी बूटी" नामक पुस्तक में प्रकाशित कर दूंगा-जिनके गुणो को यात्री और खास खास लोग ही जानते हैं।

रक्तशोधक बटिका

कुटकी को सुक्ष्म पीसकर शहद की सहायता से जंगली बेर के बराबर गोलियां बनालें और दो गोली प्रातःकाल शीतल जलसे खिलाया करे। उत्तम कोटि की रक्त शोधक दवा है।

द्वितिय योग

यह गोलियां "रक्तशोधक बटी" के नाम से प्रसिद्ध हैं, जो न केवल रक्तशोधक ही हैं बल्कि उपदंश जैसे रोग को भी निर्मूल करने का गुण इसमें विद्यमान है। परीक्षा करके लाभ उठावें।

योग–रीठे के छिलको को सुक्ष्म पीसकर कपड़छान करके शहद मिलाकर गोलियां चने के आकार की बनाले। मात्रा एक गोली प्रातःकाल अधबिलोये दही के साथ दिया करे। शाम को केवल पानी के साथ निगलवादिया करे। उपदंश, कण्डू, पित्त, दाद, चम्बल आदि २ रोगो के लिये लाभदायक है।

नहरुआ (स्नायु रोग)

यह एक ऐसा रोग है जिससे एक ही काल मे सैकड़ो

रोगी शैयाशायी होजाते हैं और स्वस्थ्य मनुष्यों को भी भय लगा रहता है कि कहीं हम भी इस दुष्ट रोग के पंजे में न फंस जाये। विशेष कर ऐसे प्रान्तो मे जहां तालाव के पानी के अतिरिक्त कूप जल प्राप्त न होता हो, वहां बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

यद्यपि किसी चीज का दावा करना तो अनुच्चित कृत्य है तथापि यहां एक ऐसा प्रयोग अङ्कित करते हैं जिसको एक दिन सेवन कर लेने से साल भर इस दुष्ट रोग का भय नहीं रहता। फिर आप ही बतलाइये कि प्रयोग के अद्वितीय होने में क्या अत्युक्ति है, योग निम्नलिखित है।

चैत्र या असोज मास मे १ माशा अनवुझ चूना पावभर दही में घोल कर पिलादे। बस एक बार पिलाने से १२ महीने तक न्हरुआ कदापि न निकलेगा।

नोट—जिसदिन दवा देनी हो उसी समय चूने की डली को पानी का छींटा दें, इससे चूना खिल जायगा। शीतल होने पर सेवन करायें।

स्नायु रोग चिकित्सा

उपरोक्त योग केवल स्वास्थ्य रक्षा के लिये ही उपयोगी हो—इतना ही नही, बल्कि यदि उपरोक्त चूना १ माशा, आधा सेर गाय के दही में मिला कर रोगी को पिला दे तो दो तीन रोज मे न्हरुआ अन्दर ही सड़ जायगा।

खानदानी योग

हकीम अलाउद्दीन महोदय न्हरुआ के रोगी को चार रत्ती सत पोदीना गुड़ में लपेट कर खिलाया करते थे, जिससे न्हरुआ बहुत जल्दी निकल जाया करता था। आपका यही मामूल रहा।

न्हरुआ की गोली

मोर का पर लेकर बारीक २ कतरलें और गुड में लपेट कर गोली बनाले। इसी प्रकार तीन गोलियां देने से न्हरुआ मिट जाता है।

पुनः

मोर पंख का गूदा सूक्ष्म रगड़ कर चूरण बनालें और गुड़ में लपेट कर जंगली बेर के समान गोलियां बनालें। प्रातः साय एक २ गोली खिलाया करे। बस ! दो गोलियां रोज़ ताजा बना लिया करें।

सफैद दवा

तीन माशा नोशादर चीनी की खरल में पीसकर पावभर गाय के दूध में डाल कर पिलावे, किन्तु यह ध्यान रहे कि दवा दूध में मिलाने के बाद पिलाने में एक मिनट की भी देर न हो, वरना

प्रभाव नष्ट हो जावेगा। ईश्वर कृपा से ३ दिन में ही शर्तिया लाभ हो जावेगा।

रसोली की चिकित्सा

प्रथम कथा

एकदिन एक महाशय रोडी के सरकारी अस्पताल के मेडीकल आफिसर डा० रघुनाथ राय के पास आये और अपने माथे पर एक बदनुमा रसोली दिखाकर चिकित्सा के लिये निवेदन किया। डाक्टर साहिब ने कहा कि ऑपरेशन होगा, इसके बिना और कोई इलाज नहीं। चूंकि रोगी निर्बल हृदय का आदमी था इसलिये ऑपरेशन कराने से उसने इनकार कर दिया। मैं भी उसदिन वहीं बैठा था इसलिये मैंने कह दिया कि यदि ईश्वर की कृपा रही तो मैं बिना ऑपरेशन और कष्ट के तुम्हारी रसोली निकाल दूंगा, किन्तु डाक्टर साहिब यह मानने को तैयार न हुये, मैंने भी इस विषय पर अधिक बहस करना उचित न समझा और अपना इलाज शुरू कर दिया। ईश्वर कृपा से आशा से अधिक सफलता मिली और क्षत भरकर त्वचा बराबर होजाने पर डाक्टर साहिब को जा दिखाया।

द्वितीय कथा

लाला प्रभुदयाल की पीठ पर एक रसोली निकली। उन्होंने मलोटमंडी से अपने एक सन्बन्धी को (जो डाक्टर

सहाब के मित्र थे) बुलाकर डाक्टर साहिब के पास चिकित्सार्थ गये। डाक्टर साहिब ने उस लिटा कर क्लोरो फार्म सुंघाना आरम्भ कराया, किन्तु किंवदन्ती के अनुसार रोगी डरपोक जाति का सुपुत्र था इसलिये सिरपर पाव रखकर भागा और घर आकर दम लिया। मगर रसोली बढ़ने का भय भी साधारण नहीं था इसलिये मेरे पास आया। मैंने वही चिकित्सा की और रोगी स्वस्थ्य होगया। उस चिकित्सा को निस्संकोच यहां निवेदन करता हूँ। आवश्यक्ता के समय बनाकर लाभ उठावे और लेखक को आशीर्वाद दे।

रसोली निकालने का सरल उपाय

बारुद (जो तोडेदार बन्दूको मे भर कर चलाई जाती है और बीकानेर स्टेट में प्रायः सर्वत्र मिल जाती है) लेकर सुक्ष्म पीसले और रसोली पर उस्तरे से क्षत करके उस पर मल दें और ऊपर से साफ नई ठीकरी रख कर पट्टी बांध दे। दो तीन दिन के बाद खोलकर देखे। क्षत पर पपड़ी सी जमी होगी। उसे धीरे २ हाथ से अलग करदे। नीचे गोल अण्डासा दिखाई देगा। उसको दबाकर निकाल दें। तमाम मवाद निकाल कर केवल एक झिल्ली सी बाकी रह जायगी। उसे चाकू से पृथक करके चिमटी से निकाल दे। झिल्ली को उतारते समय रोगी को तनिक भी कष्ट न होगा, क्योंकि बारुद के कारण मांस गति हीन हो जाता है।

रसोली दूर करने वाला लेप

यद्यपि यह प्रयोग हमारा अनुभूत नहीं है तथापि योग प्रेषक के विश्वास पर कह सकते हैं कि योग ठीक होगा। प्रेषक अपना अनुभव लिखता है।

इन्द्रबधु (बीरवहूटी) पानी में पीसकर लेप करे। कई बार के लेपो से आराम होजावेगा।

द्वितिय योग—पपीते को पानी मे पीस कर लेप करने से भी रसोली नष्ट हो जाती है।

अनुभूत योग चिन्तामणी—के द्वितिय भाग में रसोली भगंदर, नासूर आदि को दूर करने के लिये एक अनमोल नुसखा प्रकाशित किया जारहा है जिससे इस भयानक रोग से पीछा छुट जाता है।

क्षत चिकित्सा

क्षत धोने की वह अद्भुतविधि—जिसके सामने डाक्टरी विधियां तुच्छ हैं—इससे पूर्व "नीम गुणविधान" मे निवेदन कर चुके हैं, जिसके व्यवहार से पुराने से पुराना क्षत बल्कि नासूर तक दूर हो जाते हैं। अब यहां क्षत भरने के वह योग कथन किये जाते हैं जो इससे पूर्व किसी अन्य पुस्तक में नहीं लिखेगये।

क्षत सुखाने का योग

यदि क्षत से रक्त या पीला पानी सा निकल रहा हो तो उसको खुशक करने के लिये सेलखड़ी को सुक्ष्म पीस कर रखे और आवश्यक्ता के समय क्षत पर छिड़क दिया करे। इससे न केवल खुशक हो जाता है बल्कि घाव भर जाता है।

चुटकी—माजूफल को जलाकर पीसले और ज़ख्म पर लगाते रहे। उत्तम चीज है।

ग्रामीण योग

आवश्यक्तानुसार गुड़ लेकर टिकिया बनाले और जख़्म पर रखकर बांधदें। पीप निकल कर क्षत बिलकुल साफ हो जावेगा। सरल और उत्तम योग है। इसी प्रकार बांधने से कांटे कोभी निकाल देता है।

हैदराबादी रक्त तैल

(जोकि क्षत, फोड़ा, फुन्सी और गंज की शर्तिया दवा है।)

यह प्रयोग हैदराबाद के हकीम साहिब का गर्वित पेटेण्ट योग है। विशेषता यह है कि बनाने मे अतिसरल है।

योग—सरसो के पावभर तैल को आग पर रख कर खूब

गरम करले और फिर नीचे उतार लें। जब मालूम हो कि कुछ ठंडा होगया है तो उसमें २॥ तोला कमीला डाल कर किसी लकडी से हिलाते रहे, यहां तक कि शीतल होजावे। बस! तैल तैयार है, आवश्यक्ता के समय ज़ख्म पर लगाते रहें।

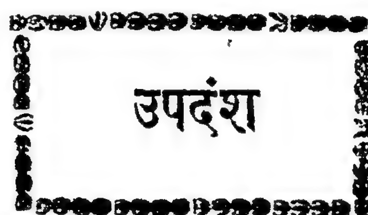
द्वितिय विधि

सरसो के तैल मे कमीला डाल कर खूब अच्छी तरह खरल करें। जितना अधिक खरल किया जावेगा उतना ही अधिक लाभदायक सिद्ध होगा। यह तैल घाव को दो तीन दिन मे ही सुखाकर भर देता है। छूतदार फुन्सीयो के लिय तो अत्युत्तम है

अक्सीर नासूर

बारूद को कड़वे तैल मे पीसकर रखे और आवश्यकता के समय घाव पर लगाया करे। कुछ दिन लगाने से ज़ख्म भर जायगा।

नोट—बारूद एकेली चीज तो नहीं है किन्तु बनी बनाई अकेली ही मिलती है इसलिये एकौषधि में शामिल है।



ईश्वर इस दुष्ट रोग से शत्रु को भी बचाये। उपदंश यदि बिगड़ जाय तो कुष्ट का रूप धारण कर लेता है। यहां दो

चुटकले लिखे जाते है, किन्तु जब तक रोगी से शपथ न लेली जाय तब तक चिकित्सा न करे।

उपदंश की अहानिकर चिकित्सा

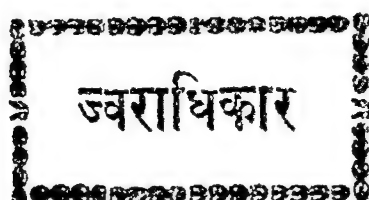
यद्यपि उपदंश के ऐसे योग मिलते हैं, जिनसे उपदंश ५-७ दिन मे चली जाती है, किन्तु ऐसी वस्तुओ के द्रव्यविशेष पारद या रसकपूर आदि होते हैं, जिनसे अन्य रोग होने की आशका रहती है। लेकिन निम्नलिखित योग अधिक दिन तो सेवन करना पडता है किन्तु है सर्वथा अहानिकारक।

योग—उन्नाव विलायती ५० प्रतिदिन रात्रि को आधा सेर पानी मे भिगो दिया करे और प्रातःकाल हाथ से मल कर छानले और शहद मिलाकर पिलाया करें। इसी प्रकार निरन्तर ४० दिन पिलाने से शरीर कुन्दन की भांति निकल आता है।

कटु चूरण

कुटकी सुक्ष्म पीसकर रखे और उसमे से ६ माशा प्रति-दिन ताजा जल के साथ सेवन कराये। कुछ दिन के सेवन से ही उपदंश का चिन्ह भी शेष न रहेगा। दवा के सेवन कालमे केवल बेसनी रोटी और घी खिलावे। अन्य सब चीजो से प्रहेज़।





ज्वर और उनकी चिकित्सा

जब कभी हृदय की उषमा वढ जाती है तो इस उष्णता का प्रभाव शिराओं द्वारा समस्त शरीर में पहूँच कर उसे गरम कर देता है और इसी अवस्था का नाम ज्वर है। ज्वर के अनेक भेद हैं, जिनका इस छोटीसी पुस्तक में वर्णन करना कठिन है इसलिये यहां उन ज्वरों का कथन किया जाता है जो भारतवर्ष में सर्वत्र व्यापक हैं।

विषम ज्वर

यह ज्वर प्रायः अर्द्ध जोलाई मास से लेकर अर्द्ध नवम्बर तक पाया जाता है और स्वास्थ्य रक्षा विभाग के कठिन प्रयत्न करने पर भी प्रतिवर्ष लाखों जीवन मलेरिया की भेंट चढ जाते हैं।

कारण—युनानी में इसका कारण वर्षा के कारण जल वायु का दुषित होना बताया है, किन्तु डाक्टरी मतानुसार मलेरिया का मच्छर काटना इसका कारण बताते हैं। प्रत्यक्ष में दोनो बातों में अन्तर प्रतीत होता है, किन्तु वास्तविकता दोनो को एक ही बना लेती है।

विषम ज्वर के चिन्ह

शीत लगकर ज्वर चढ़ता है और रोगी को अत्यन्त गरमी अनुभव होती है। बेचैनी, प्लीहा वृद्धि, आमाशय के आस पास पीड़ा मालूम होना इस बुखार के चिन्ह हैं। यह, कफजनित ज्वर प्रति दिन, पित्तजनित तीसरे दिन, और वातजनित चौथे दिन आया करता है। भारतवर्ष में विषम ज्वर अधिकता से होता है इसलिये प्रथम इसकी चिकित्सा लिखते हैं।

नोट—यदि मलेरिया ज्वर के रोगी को बद्धकोष्ठ हो तो प्रथम जुलाब देकर कब्ज़ को तोड़ना अत्यावश्यक है वरना उत्तम से उत्तम दवा भी कुछ लाभ न करेगी।

विषम ज्वर के प्रयोग

अर्वाचीन डाक्टरी मतानुसार विषम ज्वर के लिये कुनैन से बढ़कर और कोई चीज़ नहीं। इसमें वह बेचारे विवश हैं, क्योंकि अन्य औषधियों के अनुभव का इन्हें अवसर ही नहीं दिया जाता। गो हमें कुनैन के गुणकारी होने में आपत्ति नहीं, किन्तु इन्कार है तो इस बात से कि कुनैन जैसी और कोई चीज़ आजतक मालूम नहीं हुई। हमारे वैद्यक शास्त्रों में कई चीजें कुनैन जैसी ही नहीं, बल्कि इससे अधिक लाभदायक मिलती हैं। कुनैन की कटुता और रूक्षता प्रसिद्ध है, किन्तु हमारी औषधियों में कई इन दोषों से रहित हैं और कुनैन के मुकाबले में बहुतही सस्ती हैं। यहां हम ऐसे ही प्रयोग लिख रहे हैं, जो मलेरिया

ज्वर को दूर करने के लिये कुनैन के समतुल्य ही नहीं बल्कि उससे बढ़ चढ़कर हैं। आशा है गुणग्राही सज्जन मेरे अनुभवों का सन्मान करेंगे। ईश्वर से प्रार्थना है कि वह इससे लाभान्वित हों।

कुनैन का मसील

करंजुआ एक साधारण और सर्वत्र मिलने वाला वृक्ष है, जिसको बाग की रक्षा के निमित्त उसके चारों ओर लगाते हैं। इसके बीज की गिरी विषम ज्वर के लिये अत्युत्तम है। पन्सारियों की दुकानों पर भी बड़ा सस्ता मिल जाता है। इसके बीजों की गिरी आवश्यक्तानुसार लेकर सुक्ष्म पीसले और शीशी में सुरक्षित रखे। बस तैयार है।

सेवन विधि—इसमें से छः रत्ती दवा ज्वर आने से दो घंटा पूर्व और इसी प्रकार एक घन्टा बाद पानी के साथ दें। प्रथम तो उसी दिन ज्वर न होगा, वरना दूसरे तीसरे दिन फिरदे। यदि इसमें अर्द्ध भाग पिप्पली सुक्ष्म पीसकर सम्मिलित करलें तो इसका प्रभाव और भी बढ़ जाता है।

ज्वर तोड़ गुटी

करंजुआ चूं कि कटु चीज है इसलिये कोमल प्रकृति के मनुष्य खाने से लाचार होजाते है इसलिये उचित है कि ऐसे मनुष्यों के लिये कीकर के गोंद का पानी मिलाकर जंगली बेर के समान गुटी बनाले और उपरोक्त विधिसे सेवन करायें।

यह गोलियां जल की सहायता से सरलता पूर्वक निगली जा सकती हैं।

कुनैन के समतुल्य दूसरी चीज

अतीस को थोड़ी देर पानी मे भिगो कर उसका छिलका उतार लें और फिर सुक्ष्म पीसकर शीशी मे सुरक्षित रखे। यह भी विषम ज्वर के लिये कुनैन के समतुल्य नही बल्कि बढ़कर गुणकारी है। आवश्यक्ता के समय ज्वर आने से दो घन्टा पहिले और फिर घन्टा २ के अन्तर से दो बार पानी से दे। आशा है प्रथम दिवस ही ज्वर दूर होजायगा।

कुनैन के मुकाबले की चीज़

सुरजमुखी मलेरिया ज्वर के लिये अतीव गुणकारी है, जो कि भिन्न २ अनुपानो से सेवन कराइ जाती है। सुरजमुखी के पत्ते या बीज (जो मिल सके) ६ माशा से एक तोला तक कुछ काली मिरचे डालकर और घोटकर पिलादे या रात्रि को भिगोकर प्रात.काल पिलादें। मलेरिया ज्वर दूर हो जावेगा।

नोट—यदि नियमानुसार इसके पंचाग का घनसत्व बनाकर गोलिया बनाली जावें तो भी लाभदायक सिद्ध होती है।

स्वदेशी कुनैन

लीजिये, हम अपने हृदय का भेद भी प्रकट किये देते हैं। यह वही चीज़ है, जिसका हमने बड़े जोर से विज्ञापन किया हुवा है

वह महाशय इस रहस्यको मालूम करके अतीव प्रसन्न होंगे जो इस योग को जानने के लिये व्याकुल थे। संसार की अनित्यत्ता का विचार करके यह भी सेवा में समर्पित हैं। चूंकि हमने इसको विज्ञापन का रंग देरखा है इस लिये हम इसे मीठा भी कर लेते हैं और वैज्ञानिक ढंग से बनाते हैं। यहां सरल विधि लिख देते हैं, जिससे सर्व साधारण भी तैयार करके लाभ उठा सके।

धतुरा के फलों को कूटकर लुगदी बना लें और एक हांडी मे आधी लुगदी नीचे बिछा कर उसपर गौन्दती हरताल के टुकड़े २० तोला रखकर ऊपर से बाकी आधी लुगदी बिछाकर स्राव सम्पुट करके ३० सेर उपलो की आंच दे। शीतल होने पर हांडी को निकाल कर खोले। हरताल सफेद रंग की निकलेगी। उसे पीसकर शीशीमें सुरक्षित रखें। गुणो व सुन्दरतामें कुनेन से बढकर होगी। ज्वर होने से दो घंटा पहिले २ से ३ रत्ती की पुडियां तथा फिर १ घंटा पहिले एक पुडियां पानी से दें। यह अद्भुत वस्तु है।

मलेरिया ज्वर की परीक्षा

करंजुआ को जोकुट करके मसूर की दाल के समान टुकड़े बनालें। अब इसको मलमल की पट्टी पर रख कर रोगीकी दाहिने हाथकी अनामिका अंगुली पर बांधदें और अंगुली को पानी भरे गिलासमें डबोये रखें। यदि विषम ज्वर होगा तो अंगुली में टीसें चलने लगेंगी, किन्तु रोगी से कहदें कि इसकी परवाह न करे। इससे न केवल विषमज्वर की ही परीक्षा हो

जावेगी बल्कि ज्वर आने में दो घंटा पूर्व बाद दी जावे तो ज्वर भी न आवेगा।

नोटः—यद्यपि यह क्रिया अभी अधिक अनुभवकी मोहताज है किन्तु है रामबाण।

हरित गुटी

तुलसी पत्र हरे लेकर कूटकर रस निकालले. जो न्यूनातिन्यून १० तोला हो। उसमें अनुमानतः एक तोला कालीमिरचों का सूक्ष्म चूर्ण मिला कर इतना खरल करे कि गोलियां बांधने योग्य हो जावे। फिर चणे के परिमाण की गोलियां बांधकर सूखने पर शीशीमे सुरक्षित रखे। मात्रा दो गोली ज्वर आने से दो घंटा पूर्व दें फिर दो घंटा बाद पुनः दो गोलियां दे। कम्पज्वर और विषम ज्वर के लिये अक्सीर हैं। दो तीन दिन देना काफी है।

एक रु० में एक गोली—एक हकीम साहिब एसी अक्सीरी गोलिया बनाया करते थे कि ऐक ही गोलीसे ज्वर शर्तिया उतर जाता था। कीमत १)रु० लेते थे। हमने भी १०० रोगियो पर अनुभव करने के बाद वह प्रयोग "अनुभूत योग चिन्तामणी" द्वितीय भागमें स्पष्ट लिख दिया है।

चढे हुये ज्वरको उतारने का पौडर

इससे एक ही दिन में पसीना आकर ज्वर उतर जाता है और विशेषता यह है कि एन्टी फेबरीन की भांति हृदय को निर्बल नहीं करता। अद्भुत वस्तु है।

योग—कोडियालोबान उमदा सुक्ष्म पीसकर चार २ रत्ती की पुड़ियां बनाले और आवश्यकता के समय चढे हुये ज्वर में नागपुरी संतरे के रस मे या अर्क बेदमुश्क के साथ दिन में तीन बार खिलाये। एक ही दिन मे ज्वर दूर हो जावेगा।

स्वेदक क्वाथ

दारु हल्दी १५ तोला १६ सेर पानी मे जोशदे और जब आधा पानीजल जावे तब उतार कर छानले और शीशीमे सुरक्षित रखे।

मात्रा—५ तोला हर चार घंटे के बाद गरम करके पिलावे। इससे न केवल पसीना आकर ज्वर उत्तर जाता है बलिक बारी को रोकने में अक्सीर है।

पित्त ज्वर के लिये अर्क

यदि रोगी को गरमी बहुत अधिक प्रतीत होती हो और तृषा की ज्यादती के साथ जिह्वा खुशक हो और कांटे से पड रहे हो, तो एसे ज्वर को उतारने के लिये निम्नलिखित अर्क अतीव गुणकारी है।

प्रयोग—कपूर की ३ टिकियां साबतही एक सफेद बोतल मे डालकर पानी से भरदें। जिस समय आवश्यक्ता हो रोगीको ३ बार ५ तोला की मात्रामे पिलाते रहे। बोतल में जितना पानी कम हो उतना ही सादा पानी और डाल दिया करे। बीसीयो रोगियो को लाभ होजावेगा।

तृतियक ज्वर के योग

यह भी विषम ज्वर का एक भेद है जैसा कि पहले लिखा जा चुका है। चूंकि यह भी बारी से आनेवाला ज्वर है इसलिये वह समस्त औषधियां जो बारी रोकने के लिये लिखी गई हैं-तृतियक ज्वर को रोकने के लिये भी अक्सीर हैं। यहां हम कुछेक ऐसे योग और लिख देते हैं जो सरलता पूर्वक बन सकते हैं और बहुत कम निष्फल जाते हैं।

नोट-तृतियक ज्वर वाले के कबज हो तो प्रथम उसे दूर करना उचित है।

कृष्ण दवा

(जोकि कफ जनित, पित्त जनित, कम्प ज्वर तथा तृतियक और चौथिया ज्वर के लिये अक्सीर हैं।)

धतुरे के फल यथावश्यक लेकर मिट्टी के बर्तन में बन्द करके आव सम्पुट करें और अग्नि में फूंकलें। शीतल होने पर निकाल कर खरल में पीस कर शीशी में सुरक्षित रखें। अत्युत्तम दवा तैयार है।

सेवनविधि-ज्वर आने से एक घन्टा पूर्व ६ रत्ती या रोगी की आयु व बलाबल अनुसार मात्रामें पान में रखकर खिलायें। जहा पान न मिलसके वहां केवल जल के साथ दे दें। एक बार

देने से ही ज्वर रुक जायगा वरना दूसरी बार देने से तो अवश्य ही रुकेगा ।

हरित दवा

यह मेरे एक निजामाबाद निवासी प्रिय भाई द्वारा प्राप्त योग है । आपने मुझे सूचित किया था कि इस योग को पहेली के रूप मे लिखूं, किन्तु पाठकों के सामने स्पष्ट वर्णन किये देता हूँ । मेरे मित्र नाराज अवश्य होंगे क्योंकि यह उनके औषधालय का गर्वित योग है, किन्तु मैं उन्हे राजी करलूंगा ।

योग—भंग के पत्ते छाया में सुखाकर सुक्ष्म पीसलें और शीशी मे भर रखे और आवश्यक्ता के समय ज्वर आने से एक घन्टा पूर्व १ रत्ती से दो रत्ती तक की मात्रा पानी से खिलायें । ईश्वर ने चाहा तो ज्वर न होगा ।

हरित अर्क

तृतियक ज्वर की शर्तिया दवा

यह योग श्रीयुत कविराज हरनामदास जी बी० ए० लेखक "विवाहित आनन्द" ने धतुरा गुण विधान में प्रकाशनार्थ भेजा था, किन्तु एकौषधि होने से इसी पुस्तक मे प्रकाशित कर रहे हैं ।

योग—धतुरे के पत्तो का रस निकाल कर शीशी में सुर-

क्षित रखें और रोगी को ज्वर होने से दो घन्टा पूर्व मिश्री या बताशे मे दो बूंद डाल कर खिलादें। ज्वर कदापि न होगा।

बारी के ज्वर को रोकने के लिये

आश्चर्य जनक सुरमा

हुक्के की चिलम में जो मैल एकत्र हो जाती है उसे खुरच कर सुक्ष्म पीसकर शीशी मे सुरक्षित रखे।

सेवनविधि—ज्वर आने से आध घंटा पूर्व सलाइ से नेत्रों में लगायें। यदि सिर में चक्कर आने लगे तो शीतल जल की कुछ घूंट पिलादे। किन्तु यह अत्यावश्यक है कि रोगी को इसका ज्ञान न होना चाहिये।

तृतियक का जादू

(केवल अंगुली पर दवा बाधने से ज्वर न चढे)

तीन लाल मिरचे पानी मे भिगोकर अच्छी तरह घोटलें और बाये हाथ की अंगुली पर नाखून का भाग छोड़कर बाकी पौरुए पर लेप करके मलमल की पट्टी बांधदे और पट्टी को हर समय पानी से तर रखे। इससे उंगली में टीसे चलेंगी और दिल धड़केगा किन्तु ज्वर न होगा। यदि प्रथम बार में सफलता न मिले तो दूसरी बार फिर यही क्रिया करें। अनेक बार का अनुभूत है।

चौथिये ज्वर का योग

चौथिये ज्वर का समय दुखियों के [illegible] सिद्ध है। यदि उचित चिकित्सा न हो तो [illegible] वर्ष तक पीछा नहीं छोड़ता। यहां कई एक उत्तमोत्तम योग दिये जाते हैं।

करामात

मेरे प्रिय मित्र श्रीयुत [illegible] लिखते हैं कि मेरा छोटा भाई कोई तीन वर्ष से चौथिये ज्वर से ग्रसित था। यदि हजारों नहीं तो सैकड़ों इलाज अवश्य किये थे किन्तु कोई लाभ न हुआ। मैं हैरान व परेशान बैठा था कि उस दिन एक साधु महाराज पधारे—जिनको मैं पहिले से जानता था। साधु महाराज ने मेरी परेशानी का कारण पूछा तो उत्तर में मैंने भाई की बीमारी का हाल बता दिया। उन्होंने समवेदना प्रकट करते हुए कहा—

कि "यह लो साधू की चुटकी", और ईश्वर का नाम लेकर रोगी को सेवन कराओ। ईश्वरने चाहा तो तीन मात्राओं के सेवन से रोगका चिन्ह भी न रहेगा।

साधू महाराजने कठिनता से १॥ रत्ती दवा दी थी, जिसकी ३ मात्रायें बनाई गई और साधू महाराज के आदेशानुसार तीनों मात्रायें सेवन करादीं। निश्चय जानिये कि न केवल तीन दिन में ज्वर ही दूर हो गया, बल्कि आज ७–८ वर्ष हो गये–किसी प्रकार

का ज्वर तक उसे नहीं हुआ।

कुछ महीनों बाद साधू महाराज फिर पधारे और मैंने ही उन्हे अतिथी बनाया, फिर मैंने इस प्रयोग को बतादेने की प्रार्थना की। साधूजी ने कृपा करके वह प्रयोग मुझे बता दिया। इस योग को मैंने पांचसौ रोगियो पर अनुभव करके शतप्रतिशत सफल पाया। मैं गर्व से कहता हूँ कि कोइ डाक्टर इसके मुकाबले का नुसखा पेश नहीं कर सकता। यह प्रयोग केवल चौथिया ज्वर को ही लाभदायक नहीं बल्कि तृतियक ज्वर और रोजाना के बुखारों के लिये भी अकसीर है।

प्रयोग—खटमल जितने मिल सके संग्रह करले। जब मर जावें तब एक लोहे के तवे को आग पर गरम करके नीचे उतारलें और मरे हुये खटमलो को उस तवे पर डाल कर जरासा हिलादें ताकि उनकी तरी खुशक होजावे [बस ! तत्काल ही तवे परसे उतारलें वरना उनके काले हो जाने पर क्रिया बिगड जावेगी] फिर पीसकर सुरक्षित रखे, मात्रा एक ग्रेन से एक रती तक ज्वर आने से १ या १॥ घंटा पूर्व मक्खन मे लपेट कर दे। अधिक से अधिक तीन मात्राओं से ज्वर दूर हो जावेगा।

द्वितीय प्रयोग

घोडे का पर [इसी नाम से मिलता है] १ रती गुडमें लपेट कर ज्वर आने से दो घंटा पूर्व रोगी को खिलादें। दो तीन मात्रा खिलाने से आराम हो जावेगा।

तृतीय योग

ज्वर आने से दो घंटा पूर्व एक खटमल गुड़में लपेटकर रोगीको सूचना दिये बिना ही निगलवादे, ज्वर कदापि न होगा।

कम्प ज्वर की दवा

पांच रत्ती नौशादर बेरी के पत्तो मे लपेटकर रोगी को खिलावें। आशा है प्रथम दिवस ही ज्वर न चढेगा, वरना कम्पन तो कदापि न होगा।

बारी के ज्वर की चिकित्सा

यह दवा तभी लाभ करती है, जब कि कफ जनित ज्वर हो। रेवन्दचीनी आवश्यक्तानुसार लेकर सुक्ष्म पीसलें और आध आध घटा के अन्तर से रत्ती २ की मात्रा समोष्ण जल से देते रहें। कफ जनित ज्वरको रोकने में अकसीर है।

तपेदिक के लिये

तपेदिक एसा रोग नही जिसकी सरलता पूर्वक चिकित्सा की जासके, किन्तु यह भी मिथ्या है कि "संसार मे तपेदिक का कोई इलाज नहीं" हमारे एक मित्र हकीम साहिब [जिनका नाम प्रकट करना उचित नही समझते] इस चिकित्सा में प्रसिद्ध हैं और आप सदैव निम्न लिखित चुटकले से इलाज करते हैं तथा सफल होते हैं। पाठकों के लाभार्थ हम अपने प्रिय मित्र का गुप्त

योग प्रकट कर रहे हैं, फिर भी न मालूम किस चीज को आप किस दृष्टी से देखें ?

आजशुगाल प्राप्त करके छाया में सुखाकर पीसलें और शीशीमें सुरक्षित रखें। मात्रा १ माशा प्रातःकाल उचित शर्बत या अर्क के साथ रोगी से गुप्त रखते हुये खिलाना आरंभ करें। कुछ दिनों के सेवन से ज्वर दूर होगा। मेरा तो एक बार का अनुभूत है।

पीर साहिब का योग

पीर अब्दुलरहीम ने निम्न लिखित योग की बडी प्रशंसा की है। आपका कथन है कि निम्न लिखित चुटकले से तपेदिक के रोगी निश्चय ही स्वस्थ हो जाते।

योग—गन्धक मूसली यथावश्यक लेकर सुक्ष्म पीसले और उसमें से एक रत्ती प्रात सायं गधी के दूध के साथ सेवन करायें, और फिर चमत्कार देखें।

नोट—जिनको गधी के दूध से घृणा हो वह बकरी के दूध के साथ सेवन कर सकते हैं किन्तु लाभ कम होगा।

तपेदिक के रोगी की आपबीती

पं० रामजी लाल 'रत्न' अलीगढ़ निवासी ने मुझे बताया कि एक बार वह दिक् के रोग से ऐसे बीमार हुए कि लोगों ने ही नहीं बल्कि हकीम डाक्टरों ने भी असाध्य बता दिया। एक

दिन एक महात्मा पधारे और कहने लगे कि एक बार कब्रिस्तान में चक्कर लगा आया करो। मैंने फकीर साहिब के कथनानुसार गिरते पड़ते जाना प्रारम्भ किया। एक दिन मुझे असाधारण थकान हो रही थी तो वही साधू प्रकट में जो फकीर दृष्टि गोचर होते थे, मुझे चिन्तित देखकर कहने लगे कि बेटा घबराओ नहीं, बाजार से कद्दू लाकर चाकू से उसके छिलके निकाल कर फाके बनालो और खांड लगाकर हमेशा खाया करो। तपेदिक के लिये अक्सीर है।

मैंने कद्दू का सेवन आरम्भ कर दिया और कुछ ही दिनों के सेवन से ईश्वर कृपया मेरे स्वास्थ्य मे असाधारण परिवर्तन होगया। लोग मुझे देखकर आश्चर्य चकित रह गये। इन बातों को कई साल व्यतीत हो चुके किन्तु मुझे फिर यह रोग कभी नहीं हुआ।

जीर्ण कफ ज्वर का अगद

जीर्ण कफ ज्वर के लिये निम्नलिखित योग असाधारण गुण कारी सिद्ध होता है।

प्रथम दिवस आधी पिप्पली खाकर ऊपर से गाय का उष्ण दुग्ध पान करें, दूसरे दिन पूरा और तीसरे दिन १।। और चौथे दिन दो, पांचवें दिन २।। इसी प्रकार आधी रोज बढ़ाते जावें और सातवें दिन ३।। तक पहुँचा दें और फिर क्रमशः कम करते २ आधी पिप्पली तक ले आवें। यदि इतने से लाभ न हो

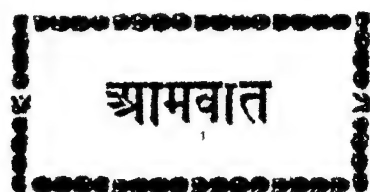
तो फिर आधी से बढावें और घटावें । इसी प्रकार दो तीन बार करने से जीर्ण ज्वर चला जाता है । इससे तपेदिन जैसे ज्वर भी दूर होते हैं ।

शीतला (मसुरिका) की चिकित्सा

यह वह प्रयोग है जिससे एक महाशय की दूर तक प्रशंसा फैली हुई है । उनका दावा है कि मेरी दवा की पेट में यदि एक मात्राभी पहुँच गई तो रोगी इस रोग से कदापि नहीं मरेगा ।

यह रहस्य मेरे एक मित्र द्वारा मुझे मालूम होगया जो आपकी भेट है । पाठक न केवल मुझे ही बल्कि मेरे मित्र को भी शुभाशीर्वाद दें ।

योग—फिटकडी सफेद, आवश्यक्तानुसार लेकर सुक्ष्म पीसलें और कूजे में डालकर मुंह बन्द करके सुखालें । फिर ५ सेर उपलो की आग दे । मात्रा १ रत्ती प्रातः सायं खांड में रख कर खिलावें और ऊपर से गो दुग्ध पान करायें ।



आमवात

बड़े जोड़ो में पीड़ा होने को आमवात कहते हैं । जब यह रोग पुराना हो जावे तो बड़ी कठिनता से जाता है ।

कटु औषधि

कुड़ा छाल उमदा लेकर सुक्ष्म पीसलें और किसी बोतल या डिबिया में सुरक्षित रखें। आमवात के लिये अक्सीर है।

सेवन विधि—प्रातःकाल ६ माशा गरम पानी से खिलाया करें। भोजन में बेसनी रोटी घी के साथ दें, अन्य कोई पदार्थ खाने को न दें। इससे ऐसा रोगी जो खाट से उठना तो दूर रहा, करवट भी न बदल सके-ईश्वर कृपासे चलने फिरने लगता है। किन्तु पथ्य पालन में अवहेलना न होनी चाहिये। यह योग मुझे पुराने अनुभवी डा० बिशनसिंह जी से प्राप्त हुआ था। मैं ने स्वयं कई रोगियों पर अनुभव कर के लाभदायक पाया है।

एक और अक्सीर

उमदा कलोंजी लेकर बारीक पीसलें और प्रति दिन ३ माशा गरम पानी या शहद की चाय से दे। शर्तिया आराम होगा।

गृध्रसी की चिकित्सा

कटु औषधि के नाम से जो प्रयोग लिखा गया है वह गृध्रसीके लिये भी अक्सीर है। दो तीन मात्रामे ही अपना चमत्कारी गुण प्रकट कर देता है। पथ्य वही रखना आवश्यक है।



पुरुषों के गुप्त रोग

संसार कर्म क्षेत्र है। प्रत्येक मनुष्य चाहे वह किसी सांप्रदाय का हो—यह मानने से इन्कार नहीं कर सकता कि दुनियां कुछ न कुछ करने का स्थान है। हाथ पर हाथ धरे बैठे रहने या सो कर समय व्यतीत कर देने के लिये नहीं। जो मनुष्य अकर्मण्य हैं, उन्हें इस संघर्षमय संसार में रहनेका कोई अधिकार नहीं। किन्तु दुःख तो यह है कि दुर्भाग्य से भारत वर्ष में जब से स्वास्थ्य के दीपक का प्रकाश कुकर्मों और अनियमितता की आंधी के तेज झोको से मधम होगया है तब से हमारे लिये कुछ करने न करने का मार्ग ही बन्द होगया। विशूचिका, महामारी आदि विषधर रोग प्रतिवर्ष जहां लाखो भारतवासियों को डसने के लिये मौजूद थे, वहां रही सही कसर पुरुषों के गुप्त रोगों ने पूरी कर दी। कहने का तात्पर्य यह है कि इस समय देश में प्रमेह, स्वप्नदोष, शीघ्रपतन, नपुंसकता, वाजीकरण शक्ति का अभाव आदि रोग जितने मिलेगे उतने अन्य किसी देश के किसी प्रान्त में न मिलेगे। यह देश का दुर्भाग्य है। जिस देश के युवकों की यह दशा हो उस देश का ईश्वर ही रक्षक है।

एक युग था जब कि प्रमेह के नाम से केवल वैद्य लोग ही परिचित्त हुआ करते थे, किन्तु अब यह शब्द मुख से निकलते ही प्रत्येक मनुष्य समझ जाता है, इसलिये हम भी इसकी विवे-

चना करके पृष्ट बढाना नहीं चाहते। केवल उत्तमोत्तम योग लिखकर ही संतोष करेंगे। ईश्वर से प्रार्थना है कि वह इन योगों द्वारा लोगो को आरोग्य प्रदान करे। यदि १०-२० रोगियों ने भी मेरे प्रयोगो से लाभ उठाया तो मै अपना परिश्रम सफल सम· भूंगा। एकौषधि गुण विधान मे वही प्रयोग लिखे जावेंगे जो अभिश्रित और अनुभूत हो। यदि मिश्रित योग एक से एक बढ़ कर देखने हो तो" अनुभूत योग चिन्तामणी" मे देखे।

रसायन बदन चूरण

यह दवा एक प्रसिद्ध दवाखाने की चलती हुई औषधि है। प्रमेह, स्वप्नदोष, कटिपीडा, बहुमूत्र, हृदय की धड़कन, सांस का फूलना, दृष्टिमान्द्य आदि २ अनेक रोगो के लिये अक्सीर है। दवाखाने में इसकी अत्याधिक बिक्री है। यह प्रयोग किसका है ? मैंने किस प्रकार प्राप्त किया ? इन सब बातो को अनावश्यक समझ कर केवल प्रयोग लिखदेना ही प्रयाप्त समझता हूँ।

प्रयोग—असगन्ध नागौरी को हावनदस्ते मे कूट कर चूर्ण बनाले और समभाग खांड मिलाकर डब्बे या शीशीयों में भरले, दवा तैयार है।

सेवन विधि—मात्रा ६ माशा प्रातःकाल शीतल जल के साथ ४० दिन सेवन कराये।

प्रमेह नाशक मालपूड़े

यही वह प्रयोग है, जिसको हमारे स्व० मित्र कृष्णकंवर

शर्मा फीस लेकर बतलाते थे। इसके गुण निम्न लिखित वर्णन किये जाते थे।

'प्रमेह और स्वप्न दोष को दूर करके शरीरको लोहे की लाठ बनाने वाला, चेहरे के रंग को काबली अनारकी भान्ति सुर्ख बनाने वाला'' इत्यादि। वही प्रयोग आज मुफ्त लिखा जा रहा है क्या यह एक ही योग दो पुस्तकों के मूल्य को पूरा नहीं कर रहा है!

योग—शतावर एक तोला रात्रि के समय पानी में भिगोदें। प्रातः काल तक नरम हो जावेगी। घोटकर चटनीसी बनालें और और आटा मिला कर माल पूड़े बना कर प्रमेह वाले रोगी को खिलाये। प्रतिदिन नाशते के तौर पर सेवन करायें। स्वादिष्ट होने के अतिरिक्त निम्न लिखित गुणों से पूर्ण है। प्रमेह स्वप्नदोष नाशक, वीर्य को गाढा बनानेवाला प्राकृतिक स्तम्भक, चेहरे की रंगत निखारने वाली दवा है।

प्रमेह नाशक सुगन्धित चूर्ण

यह प्रयोग देहली के एक खान्दानी हकीम का है जो आज कल लाहौर में प्रैक्टिस करते हैं। यह उनका गर्वित योग है और वह इसी प्रयोग के प्रताप से प्रमेह और स्वप्नदोष के विशेषचिकित्सक प्रसिद्ध हैं। उन्होने एक मात्रा का मूल्य दो आने रखा हुआ है। असल लागत एक पैसा भी नहीं होती। लोगो का विश्वास है इस लिये दो आने प्रति मात्रा में लेजाते हैं। इसकी दो तीन

मात्राओं से ही आरोग्यता लाभ हो जाती है किन्तु वह ७ मात्रायें सेवन कराते हैं। यह योग मेरे एक मित्र द्वारा मुझतक पहुँचा है जो कुछ दिन मेरे हृदय पट में बन्द रह कर आज पाठको के मनोरंजन का कारण बनरहा है। प्रयोग यह है।

धनिया आवश्यकतानुसार लेकर कूटलें और समभाग मिश्री मिलाकर सुरक्षित रखें। मात्रा ६ माशा प्रातःकाल ताजा जल से सेवन करायें।

नोट—सर्व साधारण में यह बात प्रसिद्ध है कि धनियां के इस्तेमाल से मनुष्य नपूसक बन जाता है, किन्तु यह सत्य नहीं है। अनुभव बतलाता है कि ५–७ दिन के सेवन से एसा कदापि नहीं हो सकता। हां वीर्य की उष्मा मिटकर क्षणिक चेतन्यता और प्रमेह, स्वप्नदोष आदि अवश्य नष्ट हो जाते हैं। इस नुसखे को निशंक इस्तेमाल कर लेना उचित है। यदि फिर भी शंका रहे तो फिर निम्न लिखित योग बना कर सेवन करें जो कि प्रमेहनाशक होने के अतिरिक्त बाजी करण भी है। या पूर्वकथित दोनों योगों में से इच्छानुसार बना कर सेवन करें।

मुफ्त की दवा

हरी काही जो पानी पर आजाया करती है, जिससे पानी पर एक आवरण सा चढा रहता है (यह एक प्रकार का घास है) लेकर सरावसम्पुट करके इतनी आग दे कि न तो जले और न ही गीला रहे। शीतल होने पर निकाल लें और पीस कर समभाग मिश्री मिलाकर रखें। मात्रा १ माशा ताजा पानी के साथ। इसकी इक्केक मात्राओं से चिरकालीन रोग भी मिट जाता है।

प्रमेह नाशक अजीब चूर्ण

माष की दाल को कूटकर समभाग मिश्री मिलादे। दवा तैयार है। मात्रा ५ तोला प्रातःकाल ताजा जल से दे। दो घंटाबाद इच्छानुसार दूध पिलावें देखने में साधारण चीज है, किन्तु गुणों में अपूर्व है।

प्रमेह नाशक जड़ी

भिण्डी की जड़े इच्छानुसार लेकर छाया मे सुखालें और जौ कुट करके रखें। आवश्यक्ता के समय इसमें से १ तोला लेकर रात्रिको पाव भर पानी में भिगो दे और प्रातःकाल मल छान कर मिश्री मिलाकर पिये। निरन्तर २१ दिन के सेवन से प्रमेह, स्वप्नदोष मिट कर वीर्य पुष्ट होजाता है। प्राकृतिक स्तम्भन भी उत्पन्न करती है।

सिरस के बीजों का चूरण

सिरस के बीजो को कूट कर चूरण बनावे और समभाग मिश्री मिला कर रखे मात्रा ६ माशा प्रातः सायं ताजा जल के साथ दे। इससे प्रमेह स्वप्नदोष का निराश रोगी भी स्वस्थ हो जाता है।

स्वप्नदोष नाशक दवा

भिलावे शुद्ध सुक्ष्म पीसकर रखें और और आवश्यक्ता

के समय प्रथम दिवस १ चावल, दूसरे दिन दो चावल और तीसरे दिन ३ चावल दें। फिर ३ चावल १५ दिन सेवन करने से स्वप्न दोष का रोग मिट जाता हैं।

प्रमेह तथा स्वप्नदोषहर गुटी

रीठे के बीज की गिरी निकाल कर सुक्ष्म पीसलें और समभाग खांड मिलाकर पानी की सहायता से चणे की परिमाण की गोलियां बनालें। मात्रा दो गोली प्रातः दो गोलियां सायंकाल पानी से दिया करे। कुछ दिन के सेवन से आराम हो जायगा।

नोट—स्वप्नदोष के रोगी को दो गोलियां रात्रि को दें। ईश्वर कृपा से प्रथम दिवस ही स्वप्नदोष बन्द होजावगा।

पथ्य—गरम, खट्टी वस्तुओ तथा मैथुन से ग्रहेज रखें। हलका शीघ्र पचने वाला भोजन करें यथा दलिया, खीर, मूंग की दाल, गेहूँ का फुलका आदि।

अमिश्रित वाजीकरण योग

अमिश्रित औषधि का वाजीकरण होना कठिन समझा जाता

प्रमेह के प्रयोगों का कोष

अभी भी मेरे पास मौजूद है। अर्थात ऐसी अक्सीरी बूटियां जिनकी चन्द मात्राओं से प्रमेह रोग नष्ट होजाता है, किन्तु उनका कथन "भारतीय जड़ी बूटि" नामक पुस्तक में पढ़ें।

है, किन्तु यहां कुछ ऐसे योग लिखे जाते हैं जोकि अमिश्रित होने के अतिरिक्त बाजी करण भी खूब हैं।

प्रमेहनाशक वीर्यवर्धक वाजीकरण

नाशता

प्रत्यक्ष मे यह साधारण सा योग प्रतीत होता है किन्तु गुणों में अच्छे २ नुमखो से मुकाबला करता है। मध्यम श्रेणी के लोगों के लिये निसन्देह अद्भुत वस्तु है। वाजीकरण, प्राकृतिक स्तम्भक होने के अतिरिक्त प्रमेह, स्वप्नदोष, शीघ्रपतन और वीर्य को गाढा करने मे एक ही चीज है।

सफेद मूसली आवश्यक्तानुसार लेकर कूटलें और चूरण बनाकर रखें। रात्रिको १ तोला चूरण लेकर गायके पावभर दूध मे पकावें, यहां तक कि गाढा हो जावे। अब इसको मिट्टी के कोरे प्याले या तशतरी में डाल कर रखदें। प्रातःकाल खीर की भांति जमा हुआ मिलेगा। इसमें यथारुचि मीठा मिलाकर चम्मच से खिलाये। इसी प्रकार ४० दिन तक खिलायें और फिर इसके गुणो को देखें। हमारा अनेक बार का अनुभूत है। औषधि के सेवन काल में गरम और खट्टी चीजों तथा मैथुन से प्रहेज रखें। अनुभूत है।

बाजीकरण योग की विचित्र कथा

(जिसके प्रभाव से चार मर्दों की शक्ति पैदा होजाती है)

इस प्रयोग को प्राप्त करने की कथा विचित्र है। एक

रसिक जन इस योग को नित्य सेवन करते थे चूंकि इसमे असह्य शक्ति पैदा होती है, इसलिये वह अपनी जीवन संगिनि की कामाग्नि को प्रदीप्त करने के लिये उसे भी नित्य सेवन कराया करता था, जिसके परिणाम स्वरूप नित्य······का कृत्य चालू रहता था। अन्त को यमराज की ठोकर से उन रसिक महोदय के जीवन के जाम का प्याला लुढक गया और उनकी श्रीमति जी यत्र तत्र ठोकर खाने को एक मात्र रह गई। चूंकि उसकी कामाग्नि बहुत भड़की हुई थी, इसलिये कुछ दिन कठिनता मे सबर रखकर अन्त को किसी और व्यक्ति से अपना सम्बन्ध स्थापित कर लिया, किन्तु चिरकाल के तृषा से व्याकुल की प्यास एक दो घूंट से कैसे बुझ सकती थी। लाचार होकर उससे विदा हुई और एक तीसरे गबरु से अपना दामन जोड़ा। किन्तु यहां भी उसकी इच्छा पूर्ण न हुई परन्तु यह तीसरा आदमी बहुत ही सुन्दर था, इसलिये उससे पृथक होने को भी जी न चाहता था, इसलिये उसने अपने मृतक पति वाला नुसखा इस मनुष्य को खिलाना आरम्भ कर दिया और थोड़े समय के बाद ही वह अपनी कामना पूर्ण करने में सफल होगई। यह वही प्रयोग है जो हमें अपने एक मित्र से इस कथा सहित प्राप्त हुआ था परन्तु सन्देह है कि यदि इस योग को स्पष्ट शब्दों में लिख दिया जायेगा तो अनाचार फैलने का भय है और बहुत से लोग अनुचित लाभ उठा कर इस योग का दुरुपयोग करना आरम्भ कर देंगे, इसलिये इसे ऐसे शब्दो में लिख रहे हैं कि जिनको विद्वान हकीम तो समझ लेने में सफल हो जायेंगे।

प्रयोग यह है

फार्सी गधा और अर्बी मिट्टी के बीच में एक हज़ार का अंक रखदें और इसको पीसकर प्रतिदिन १ माशा प्रातः सायं किसी शाक भाजी या मास में डाल कर खिलाया करे। इसके निरन्तर एक मास के सेवन से लाभ होना प्रारम्भ हो जाता है और तीन मास खाने से चारमर्दों की ताकत शरीर में पैदा हो जाती है।

नोट—मैं अपनी सरल प्रकृति के अनुसार इस योग को स्पष्ट शब्दो में लिख देता, किन्तु इस विचार से कि कई रसिकजन इससे अनुचित लाभ उठा कर व्यभिचार फैलायेंगे। हा जिनको अधिकारी समझा जायगा उन्हें हम बता भी देंगे या दवा ही भेज देंगे। प्रत्येक को नहीं।

एक सन्यासी की उत्तम क्रिया

इस योग को सेवन करने वाला कुछ दिनों के निरन्तर सेवन से सुर्ख और सफेद हो जाता है।

शहद खालिस ६ माशा गिलास में डाल कर ऊपर मलमल का कपड़ा बांध दें और उस कपडे पर गाय या भैंस को दूहें, जिस का अनुमान प्रथम दिवस डेढ़पाव हो और फिर धीरे २ बढ़ाते जावें। यहां तक कि आध २ पाव बढाकर तीन पाव करले और फिर इसी प्रकार ४० दिन जारी रखें। किन्तु यह सावधानी रहे कि दूध तत्क्षण पी लिया जाय, गिलासको जमीन पर न रखें। इसके सेवन काल में पेटमें गुड़गुड़ाहट और अतिसार आदि

आरंभ हो जावेंगे, किन्तु घबरा कर दवा बन्द न करदें बल्कि बिना घबराहट जारी रखें, सब दोष अपने आप शान्त हो जावेंगे।

बाजीकरण अण्डे

वास्तव मे हमने सोमल (संखिया) को एक विशेष विधि से खिलाना है, क्योंकि संखिया बाजीकरण औषधियों में शिरोमणि है, किन्तु इसका सेवन करना या कराना कठिन कार्य है, इस लिये यहां हम एक ऐसी विधि लिखते हैं जिससे बिना कष्ट के पूर्ण लाभ उठाया जासकता है।

सेर भर पानी मे १ तोला संखिया डालकर जोश दे। जब जोश आने लगे तो १२ नग मुर्गी के अण्डे डालकर उबाले, किन्तु यह ध्यान रहे कि अण्डे फटे नहीं। दो मिनट बाद निकाल कर अण्डो को सुरक्षित रखे और एक अण्डा छीलकर नमक लगाकर खिलाया करे किन्तु सेवन काल मे घी और दूध का अत्याधिक सेवन करना परमावश्यक है। यह अत्यन्त बाजीकरण हैं। यह योग कफ प्रकृतिवालो के लिये लाभदायक है, पित्त प्रकृतिवालों को सेवन न करना चाहिये।

नोट—अण्डों के छिलकों और पानी को भूमीमें दबादें ताकि कोई जानवर खाकर मर न जावे। सावधानी रखें।

एक बाजारी औरत का करिश्मा

एक वैश्या एक मनुष्य पर आसक्त होगई किन्तु आवश्यक्ता के समय उसको बिलकुल कोरा पाया किन्तु वासना की

तृप्ती केवल सौन्दर्य से नहीं हो सकती थी इसलिये उसने निम्न-लिखित योग उसे सेवन कराना आरम्भ किया, जिससे एक सप्ताह में ही वह भला चंगा होगया और फिर आयु पर्यन्त उसकी वाजीकरण शक्ति मे न्यूनता न आई।

यद्यपि यह योग भी स्पष्ठ शब्दों मे लिखने योग्य नहीं है, तथापि पाठकों का दिल दुखेगा, अतः स्पष्ठ शब्दो मे योग लिख देता हूँ। किसी अल्पाश आदमी को न यह बतायें और न सेवन करायें बल्कि अधिकारी को खिलायें और बस !

कंजशक नर एक लेकर उसे जिबह करके उसके बाल और पर उतार लें और पेट चीर कर तामाम द्रव्य निकाल दें और फिर किसी लकड़ी या सीख पर लगाकर पीले रग के ततैयों के छत्ते के निकट लेजावे ताकि वह उसे खूब काटें। इसके बाद उसे नियमानुसार घी में भून कर और मसालों मे भूनकर खिलाते रहे। इस प्रकार ७ दिन सेवन कराने से गया बीता नामरद भी मर्द बन जाता है।

वाजी करण चूर्ण

कौंच के बीजों की गिरी १० तोला, मिश्री १० तोला, दोनों को कूट पीसकर चूरण बनालो और सुरक्षित रखे। मात्रा ७ माशा रात्रिको सोते समय गौ दुग्ध से सेवन किया करें। कुछ दिनों के सेवन से वीर्य उत्पन्न होकर वाजीकरण शक्ति बढ़ जायगी।

ग्रामीण चिकित्सा

एक तोला चने रात्रि को पावभर दूध मे भिगो दें और प्रातःकाल दूध में से निकाल कर घोटलें और उसमें मिश्री व मक्खन मिलाकर चटायें। ऊपर से दूध पिलावें। कुछ दिन के सेवन से ही अपूर्व शक्ति बढ़ जायगी, किन्तु दुःख है कि स्वादिष्ट न होने के कारण कम आदमी सेवन करते हैं।

कथा—हमारे प्रान्त में एक आदमी काफी बड़ी आयु का मौजूद है, जिसकी शारीरिक शक्ति और स्वास्थ्य को देखकर स्पर्द्धा उत्पन्न होती है। उसने स्वय बतलाया कि उसमें वाजीकरण शक्ति इतनी प्रबल है कि एक रात भी बिना······के नहीं रह सकता और इतना बहु मैथुन करने पर भी उसका स्वास्थ्य अत्युत्तम होने का और कोई कारण दृष्टि गोचर नहीं हुआ। उसने वर्षों से १० तोला गुड़ प्रतिदिन सेवन करने में कभी आलस्य नहीं किया।

वाह्य चिकित्सा

आन्तरिक खाद्य अमिश्रित योगों के बाद अब हमने बाह्य चिकित्सा सम्बन्धी योगो की ओर आकृष्ट होना है, क्योंकि जब रगों और पट्ठों में हस्त मैथुन आदि के कारण दुर्बलता उत्पन्न होगई हो तो उसके लिये वाह्य चिकित्सा अधिक सफल होती है, किन्तु ऐसी औषधियां प्रायः मुल्यवान और बहुतसे द्रव्यों के

मिश्रण को पाताल यन्त्र द्वारा तैल रूप में बनाया जाता है। जो हमारी इस पुस्तक का विषय नहीं है। अतएव हम उन्हें छोड़ कर केवल वह योग लिखते हैं, जो अमिश्रित होने के अतिरिक्त कई बार तो बड़े परिश्रम से बनने वाले मूल्यवान प्रयोगों से भी बाजी ले जाते हैं।

यदि गुप्तेन्द्रिय पर नीली रगें उभरी हुई प्रतीत हो तो अवश्य इस्तेमाल करायें।

नपुंसकता नाशक लेप

हमारे कार्यालय के एक कर्मचारी के सहपाठी मित्र ने आकर मेरे पास अपने रोग का वर्णन किया कि मैं कुछ काम से बिलकुल नामर्द होचुका हूँ और आर्थिक स्थिति ऐसी है कि इलाज पर कुछ खरच नहीं कर सकता। कोई ऐसा प्रयोग बतायें कि जो अत्यन्त सस्ता और सरलता पूर्वक बनने वाला हो। यद्यपि यह दोनों बातें बड़ी कठिन प्रतीत होती थीं तथापि मैंने ईश्वर का नाम लेकर नुसखा तजवीज कर दिया, जिस पर लागत एक पैसा और परिश्रम में केवल २० मिनट खरच हुये और वह बेचारा इससे पूर्ण स्वास्थ्य होगया। योग निम्नलिखित है।

तज इच्छानुसार लेकर सुक्ष्म पीसलें और फिर पानी डालकर खूब ही घोटें, यहां तक कि मरहम सी बन जावे। रात्रि को सीवन, सुपारी को बचाकर इन्द्रिय पर लेप करके ऊपर

अरंड का पत्ता बांध दें। और प्रातःकाल खोल डालें। इसी प्रकार कइ दिन तक सिलसिला जारी रखें। रगों की सुस्ती कुछ ही दिनो के इस्तेमाल से दूर होकर शक्ति उत्पन्न हो जावेगी। दार-चीनी का चूरण २ माशा दूध के साथ सवन भी करते रहना उचित है।

सरलता पूर्वक बनने वाला तिला

आवश्क्तानुसार लहसुन लेकर छीलले और किसी खरल में डालकर कूट कर रस निकाल लें। रस के समभाग तिलों का तैल मिलाकर कोयलो की आंच पर रखे। जब रस जल कर तैल मात्रा शेष रहे तो उसे शीशी में सुरक्षित रखे। रात्रि को सीवन सुपारी बचाकर इन्द्रिय पर मर्दन करें और पान का पत्ता बांधकर सो रहे। इसी प्रकार ८–१० दिन के इस्तेमाल से छोटी छोटी फुन्सियां निकलेगी या बिना फुन्सी निकले ही पट्ठों में पूर्ण शक्ति आजावेगी।

फूल बिना कांटा

अण्डों की पीतता इच्छानुसार लेकर कड़छी में डालकर कोयलों की अग्नि पर पकावे। पहिले झाग पैदा होगें और अन्त को पीतता काली होकर गौंद की भांति जम जावेगी, उस समय किसी चम्मच आदि से दबाकर तैल पृथक करलें और शीतल होने पर शीशी में सुरक्षित रखें।

रात्रि को गुप्तांग पर खूब अच्छी तरह से मालिश करें और इसी प्रकार प्रातःकाल भी। कुछ ही दिनों के इस्तेमाल से बिना किसी छाले या फुन्सियो के शक्ति उत्पन्न हो जावेगी।

विशेषता—यदि इस तैल में फी तोला एक रत्ती के हिसाब से फास्फोर्स मिश्रित कर लिया जावे तो बस सोने पर सुहागा का काम देगा।

उत्तेजक लेप

सोंठ बिना रेशे वाली का एक टुकड़ा लेकर शहद में घिस कर इन्द्रिय पर लेप करें और ऊपर से पान या अरंड का पत्ता बांध दें और प्रातः खोल दिया करें। उत्तेजना लाने वाली खास चीज़ है।

हींग का चमत्कार

विशुद्ध हींग शहद मे पीसकर रात्रि को लेप करदें और ऊपर से पट्टी बांधदें। कुछ ही दिनों के इस्तेमाल से मुर्दा रगो में जान पड़ जावेगी।

एक अत्ताइ हकीम की पट्टी

हमारे प्रान्त में एक अत्ताइ हकीम इसी पट्टी के प्रताप से नपुंसकता का विशेष चिकित्सक बना हुआ है। वास्तव में

अनेक लोगो को इससे स्वास्थ्य लाभ होचुका है। इससे एक ही रात्रि में नामर्द मर्द बन जाता है। लगभग ३ घंटे कष्ट होकर अत्याधिक उत्तेजना होजाती है। योग यह है।

जमाल गोटे की गिरी एक लेकर पानी की चद बूंदों के साथ पत्थर पर घिसें, और गुप्तेन्द्रिय को मोटे कपड़े से इतना रगड़े कि लाल होकर रक्त फूटने के निकट होजावे। इस पर सीवन सुपारी को छोड़ कर लेप करके ऊपर अरण्ड का पत्ता बांध दें। ३-४ घन्टा तो खूब कष्ट होगा, फिर उत्तेजना हो जायगी। उस समय पट्टी खोल दे, और दूसरे दिन छाले को सूई से छेद कर पानी निकाल दें तथा मक्खन को पानी से धोकर लगाते रहे। ईश्वर की दया से आराम हो जायगा।

नोट—यथा संभव छाला डालने वाले तिलो को इस्तेमाल नहीं करना चाहिये। जब कोई आशा न रहे तब कोई हरज नहीं।

खाने और लगाने का तिला

(जो खाने और मालिश करने के काम आता है)

निम्नलिखित तिला कोई साधारण तिला नहीं, बल्कि यह वही तिला है जो एक प्रसिद्ध कम्पनी से हजारों रुपये का निकल रहा है। इससे गुप्तेन्द्रिय की मुरदा रगो में जान पड़ जाती है और असाधारण कठोरता आजाती है। इसी प्रकार एक रत्ती पान में रख कर खिलाना अत्यन्त शक्ति दाता सिद्ध होता है।

मालकंगनी के तैल को स्वयं बनावें या किसी विश्वास-पात्र फार्मेसी से खरीदें। रात्रि को तनिक गरम करके इन्द्रिय पर खूब मालिश करें और ऊपर अरण्ड या पान का पत्ता बांधदें और प्रातःकाल खोल डालें। इसी प्रकार निरन्तर इस्तेमाल करें और पान मे रख कर खिलाते रहें। अनुभूत है।

अद्भुत टकोर

भेड़ के दूध को आगपर रखकर गरम करे और उसमे दरदरी कुटी हुई सोंठ की ५-५ तोला की दो पोटलियां डाल कर बारी २ से गरम करके इन्द्रिय और उसके आसपास पेडू आदि पर टकोर करते रहें। न्यूनातिन्यून आधा घंटा प्रातः और एक घन्टा सायंकाल यह क्रिया करें। फिर एक पोटली की दवा इन्द्रिय पर रख कर। पट्टी बांधदें। इसी प्रकार ७ दिन करने से लाभ हो जायगा।

पुनः

काले तिल १० तोला कूटकर दो पोटलियां बनाले और प्याज के रस में गरम करके बारी २ से टकोर करें। यह भी अतीव लाभकारी है।

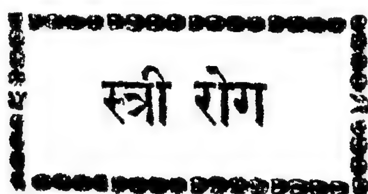
अत्यन्त वाजीकरण योग

आयुर्वेदि ग्रन्थों में भी इसके सेवन के योग मिलते हैं,

किन्तु मैंने तो इस चीज़ को न कभी बनाया और न कभी किसी को सेवन कराया। जिसको घृणा हो वह न बनावे और न किसी को सेवन करायें, जिसे इससे नफरत हो। किन्तु वह महाशय जो अङ्गरेजी औषधियो········के श्रद्धालु हैं, उनको इस दवा से बंचित न रहना चहिये, इस दवा को बनाने वालो का कथन है कि इससे अधिक पौष्टिक वस्तु मिलना असम्भव नही तो कठिन अवश्य है।

बकरे के अण्ड भूनकर या पकाकर जिस प्रकार चाहें, सवन करे। निम्नलिखित विधिसे इसका चूरण भी बन सकता है। त्तिब्बेजदीद वालो ने इसका चूरण बनाकर "मुरवारीदी" के नाम से विज्ञप्त हुआ है।

बकरे के अण्ड इच्छानुसार लेकर कूटले, और उसमें समभाग मिश्री मिलाकर हाथो से जोर २ से मले। जब शर्बत के क़वाम जैसा हो जावे तब कपड़े से छानले और जो छिछड़े निकले उनको फैक दें तथा दवा को वाटरबाथ पर पकावें। कई घन्टे निरन्तर पकाने से जम जायगा। सुखाकर चूरण बनालें। मात्रा ६ माशा प्रति दिन। अत्यन्त पौष्टिक चीज है।



स्त्री रोग

यूं तो प्रत्येक मनुष्य को स्वस्थ्य रहने की इच्छा और आवश्यक्ता है, किन्तु विशेष कर स्त्रियां जो गृह की शोभा और

गृहस्थ के प्रबन्ध में मन्त्राणी पद की अधिकारिणी होती हैं—उनको स्वस्थ्य तथा प्रसन्न रखना आवश्यक है, क्योंकि उनका रोगग्रस्त रहना न केवल उनके लिये ही कष्ट प्रद होता है बल्कि आपकी अर्द्धाङ्गिनी होनेके कारण आपकी चिन्ता का कारण भी बनेगा।

पुरुष प्रायः सौन्दर्योपासक होते हैं, वह ऐसी पत्नी से-जिसके सौन्दर्य को घुन लग गया हो, निश्चय ही विमुखसा रहेगा और वह स्वर्ग के तुल्य सुखी घर नर्कधाम का नमूना बन जायगा।

कहने का तात्पर्य यह है कि प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है कि अपनी पत्नी के स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखे। यदि वह अपनी प्राकृतिक निरार्थक लज्जा के कारण स्वयं अपनी व्यथा का वर्णन न कर सके तो किसी उचित उपाय से उसका पता लगा कर उसकी चिकित्सा कराओ, वरना उसका परिणाम बहुत बुरा होगा।

आगामी पृष्ठो में कुछेक प्रसिद्ध स्त्री रोगो की चिकित्सा लिखी जाती है।

मासिक धर्म का बन्द होजाना

मासिक ऋतु का बिलकुल बन्द होजाना या बहुत कम आना ऐसा रोग है जिससे भांति २ के रोग उत्पन्न हो जाते हैं, और जब तक मासिकधर्म खुल कर नियमित न आवे तब तक

गर्भ स्थापन नहीं होता। नीचे बन्द मासिक ऋतु को खोलने के सरल चुटकले निवेदन किये जाते हैं, जिनमें से कुछ प्रयोग तो ऐसे हैं जो अभीतक किसी पुस्तक के पृष्टों की शोभा नहीं बनें बल्कि गुरु मन्त्र की भांति चले आते हैं।

चुटकी

हीराकसीस उत्तम हरे रंग का लेकर खरलमें डालकर पीसें और उसमें से एक रत्ती प्रतिदिन गरम पानी के साथ दिया करें। कुछ दिनों के निरन्तर सेवन से मासिक धर्म जारी हो जायगा।

चूरण

रेवन्द खताई आवश्यक्तानुसार लेकर सुक्ष्म पीसलें और शीशी में सुरक्षित रखे। मात्रा ३ माशा दिन में ३ बार गरम पानी से दिया करे। इससे न केवल मासिक धर्म खुल कर आजायगा, बल्कि ऋतु का पीड़ा से आना भी दूर हो जावेगा।

रक्तार्क

नागफनी बूटी के पके फलो का रस ४ तोला निकाल कर जिसमें ५ तोला पानी मिलाकर अग्नि पर पकाये। जब जोश आजावे तब गरम २ ही रात्रि को पिलावे। कुछ दिनमें निश्चय ही आराम हो जावेगा।

फकीरी नुसखा

काले सांप की केंचुली जलाकर शीशी में सुरक्षित रखें। मात्रा १ रत्ती गुड में लपेट कर दिया करें। मासिक धर्म को जारी करने की विशेष दवा है।

५ मिनट में मासिक धर्म जारी हो

यह वह प्रयोग है जिसको बताने वाले महाशय ने बहुत गुप्त शब्दों में बताने की आज्ञा दी है किन्तु मैं अपनी प्रकृति से मजबूर होकर ऐसी प्रतिज्ञाओं को प्रायः तोड़ दिया करता हूँ। लेकिन इस प्रयोग को स्पष्ट शब्दों में लिखना पागल के हाथ में तलवार देने से कम नहीं। क्योकि इसकी एक मात्रा से गर्भपात भी हो जाता है, इसलिये इस पर परदा डालना अत्यावश्यक है। विद्वान हकीम ही इसे समझने की चेष्टा करें।

ईरानी बुढिया कलब बर आवर्दा का सिर पांवपर रख कर रिह हिन्दी पर रखकर सवार कराये यहां तक कि उसके जीवन का कोई चिन्ह शेष न रहे बल्कि बिलकुल खुशक हो जावे। अब इसको सूक्ष्म पीस कर आवश्यक्ता के समय एक ही वार में मुरक्कब बलगमे फुजला पर चढाकर हैय अलालिम से महेमेज करे। बहुत जल्दी खून जारी हो जावेगा और उस समय तक खून का सिलसिला जारी रहेगा जब तक की तनताव बिना हवा पंजाबी के देकर उसका पानी निकाल कर न पिलाया जावेगा।

क्वाथ

लाल मजीठ २ तोला कूट कर २० तोला पानी में जोशदे और दो तोला मिश्री मिलाकर पिलावें । ३-४ वार पिलाने से मासिक धर्म खुलकर आने लगता है।

मासिक धर्म की अधिकता

यह बड़ा भयानक रोग है, जिससे सारे शरीर का रक्त निकल जाता है। रोगीणी का दिल धड़कता है, चेहरा पीला पड़ जाता है। प्रायः गरम वस्तुओं के अधिक सेवन से या मासिक-धर्म के दिनों में मैथुन करने से यह रोग लागू पडजाता है।

चमत्कारी दवा

यह योग अपने चमत्कारी प्रभाव से पहली मात्रा के सेवन करते ही बहते हुये रक्त को रोक देता है। बीकानेरी कागज़ को जलाकर सुरक्षित रखें, और इसमें से ६ माशा मुलतानी मिट्टी के स्वरस के साथ सेवन करायें। एक मात्रा से ही लाभ होजायगा, तथापि दो चार दिन देते रहे।

लाभदायक चूरण

मोचरस आवश्यक्तानुसार लेकर सुक्ष्म पीस कर सुरक्षित रखें और उसमें से ४ रत्ती से १ माशा तक प्रातः सायं मिश्री के

शर्बत के अनुपान के साथ सेवन कराये। बहुत जल्दी रक्त की अधिकता मिट जायगी।

तत्कालीन प्रभावक पोटली

गधे की ताज़ा लीद लेकर बारीक कपडे मे पोटली बनाकर दाई से ···के अन्दर रखवादे। दूसरीवार रखने की शायद ही जरूरत पड़े। यदि योग को गुप्त रखना चाहे तो गधे की लीद को कूट कर पानी निकालले और इसमे मलमल का कपडा भिगोकर दाई या नर्स से ··· में रखवायें। जो लाभ पोटली से होगा, वही इसमे होगा। अनुभव कर देखे।

मिट्टी के गुण

कोई इतनी पुरानी ईंट प्राप्त करे जो हाथ से भुरती हो अर्थात गल गई हो। इसको सुक्ष्म पीसकर शीशी मे सुरक्षित रखे। मात्रा ६ माशा पानी मे घोल कर रोगिणी को सूचना दिये बिना ही पिलादे। तीन दिन के सेवन से पूर्ण लाभ होगा।

अकसीर जड़ी

यदि किसी प्रकार भी रक्त बन्द होने मे न आता हो और सब दवाइयां निष्फल सिद्ध हो चुकी हो तो धमासा बूटी एक तोला घोट छान कर मिश्री मिलाकर पिलादें। कुछ दिन के सेवन से शर्तिया आराम होगा। गरम चीजों और मैथुन से कठिन परहेज रखे।

स्त्रियों के स्वास्थ्य को नष्ट करने वाला रोग

प्रदर

इस रोग में योनि से सफेद रंग का दुर्गन्धित द्रव्य जारी रहता है, मानो स्त्रियों का प्रमेह है। जिस प्रकार प्रमेह रोग पुरुषों को किसी काम का नहीं छोडता, उसी प्रकार स्त्रियों के स्वास्थ्य, यौवन और सौन्दर्य का सबसे बडा शत्रु यह रोग है। रोगिणी का दिल धडकता रहता है, कमर में दर्द और भूख बन्द होजाती है और कइवार योनि में कण्डु होती रहती है। चेहरे का रंग बिना रक्त के भूसरा सा होजाता है। शरीर टूटता सा रहता है।

प्रदर का शाही प्रयोग

ऑलइन्डिया आयुर्वेदिक एण्ड तिब्बि कान्फ्रेंस के रामपुर के उत्सव पर अनुभूत योगों को प्रकट करते समय स्वयं स्व० नवाब हामिद आलीखां साहिब बहादुर नवाब रामपुर ने अपने अनुभव का एक प्रयोग का वर्णन किया, जो प्रदर के लिये बहुत ही लाभदायक है।

प्रवाल की जड आवश्यकतानुसार लेकर कोयलों की दहकती हुई आग पर रखदे। तनिक देर में सफेद हो जायगी। पीस कर शीशी मे सुरक्षित रखें। मात्रा १ माशा से ३ माशा तक प्रातःकाल पानी के साथ दिया करें। १०–१२ दिन देना पर्याप्त है।

दीवान साहिब की भेंट

नागकेशर सुक्ष्म ६ माशा की मात्राये शीतल जल के साथ प्रात: काल खिलाया करे। कुछ ही दिनों के सेवन मे आराम हो जावेगा।

एक गुप्त योग

कन्घी के बीज आवश्यक्तानुसार लेकर सुक्ष्म पीसले, और समभाग खांड मिला कर ६ माशा की मात्रा मे दूध के साथ सेवन करे। एक सप्ताह हद दो सप्ताह मे पूर्ण आराम हो जायेगा।

मीठा चूर्ण

सरयाली के बीज बाजार या जंगल से लाकर सुक्ष्म पीसले और समभाग मिश्री मिलाकर रखें। प्रातः सायं एक हथेली भर पानी से दिया करें। कुछ दिनके सेवन से लाभ हो जावेगा!

प्रदर नाशक गुटी

हजारदानी के बीज आवश्यक्तानुसार लेकर बट दुग्ध में खरल करके गोलियां बनाले। मात्रा दो गोली प्रातः सायं पानी के साथ दिया करे।

बन्ध्यत्व

सन्तानोत्पत्ती में बाधक जितने कारण हैं उन सबमे बड़ा

कारण मासिकधर्म की अनियमितता और पीडा से आना होता है, अतएव सर्व प्रथम मासिकधर्म को नियमित बनाना अत्यावश्यक है। जब मंथलीकोर्स नियमित हो जावे तब गर्भस्थापक औषधियां सेवन करायें। नीचे कुछेक गर्भस्थापक अभिश्रित योग अंकित किये जाते हैं।

गर्भधारक चूरण

असगंधनागौरी आवश्यक्तानुसार लेकर चूरण बनावें, और उसको घी में चिकना करके रखे। मासिकधर्म के बाद ६ माशा प्रति दिन दूध के साथ देते रहे। एक माशा के निरंतर सेवन से गर्भस्थापित हो जावेगा।

जायफल की करामात

एक जायफल लेकर उसको खरल में डालकर सुक्ष्म पीसले और उसकी ७ पुड़िया बनाले और मासिकधर्म स्नान के पश्चात एक पुड़िया प्रातःकाल पानी से दिया करे। ७ दिन में गर्भस्थापित होजावेगा। यह प्रयोग एक माहात्मा द्वारा प्रयाप्त है।

सन्यासी योग

शिवलिंगी के बीज ३ माशा, एक माशा गुड़ में लपेट कर गोलियां बनालें और मासिकधर्म के पश्चात एक गोली प्रतिदिन काली गायके दूधसे दिया करें। तीसरे दिन मैथुन करें। गर्भस्थापन

होगा। यदि एक बार में सफलता न मिले तो द्वितिय और तृतीय यही क्रिया करें।

नोट—एक हकीम साहिब ने अपने अनुभव का एक ऐसा प्रयोग बताया, जिसके कारण से वह दूर २ प्रसिद्ध है और सैंकडों रुपये कमा रहे है। इन्होंने अपना योग हमें बता दिया जो अनुभूत योग चिन्तामणी के द्वितीयभाग में छपेगा। द्वितीय भाग शीघ्र ही छपने वाला है।

गर्भपात

यह एक ऐसा रोग है कि जिसके लग जाता है उसे कठिनता से छोडता है। अनेक ऐसी स्त्रिया हमने देखी हैं जो तंग आकर यहां कहती हैं कि फिर गर्भस्थापित ही नहो। हम यहां गर्भरक्षा के निमित एक दो योग प्रकाशित कर रहे हैं। परीक्षा करलाभ उठावें।

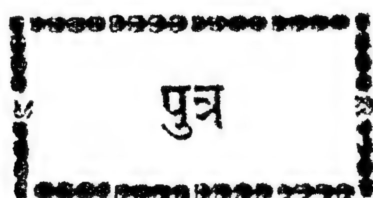
गर्भरक्षक गुटी

शुद्ध रसौत लेकर सुक्ष्म पीसले, और पानी की सहायता से चणे की परिमाण की गोलिया बनाले और खुशक होने पर शीशी में सुरक्षित रखे। मात्रा १ गोली शीतल जल के साथ बालक उत्पन्न होने तक खिलाये। बालक स्वस्थ्य उत्पन्न होगा।

गर्भरक्षक माला

दवा का पिलादेना तो बड़ी चीज है, कई वस्तुओ का

शरीर से लगा रहना ही बड़े २ प्रभाव रखता है। यदि गर्भिणी स्त्री को कहरवा की माला या हार पहिना दिया जावे तो गर्भपात कदापि न होगा।



पुत्र

किसी को निर्धन या किसी को श्रीमंत बनाना, बादशाहों से भीख मंगाना और भिक्षावृत्ती करने वालों को राज्यसिंहासन पर बिठा देना यह ईश्वरीय शक्ति का ही काम है। इसी प्रकार किसी बे औलाद को सन्तान देना भी उसी के वश की बात है। वैद्य, हकीम तो निमित्त मात्र हैं। हां यह अवश्य है कि उसी प्रभू ने कई औषधियों में ऐसे गुण भर दिये हैं, जिनसे उन निःसन्तानों की गोद हरी हो जाती है, जो सन्तान का मुख देखने के लिये तरसते रहते हैं। यहां हम वह गुप्त योग प्रकाशित कर रहे हैं, जिनको अभी संसार की हवा भी नहीं लगी होगी। ईश्वर की कृपा से इन योगों द्वारा अनेक अन्धेरे घरों में प्रकाश होजायगा। वैद्यक संसार के लोग मुझ से नाराज़ हों तो हों, किन्तु मैं इन प्रयोगों को छुपा नहीं सकता। जिनको प्रकट कर देने से हज़ारों निराशाओं की आशा पूर्ण होगी, क्योंकि रात्रि के शान्त समय में उनके प्रसन्न चित्त से निकले हुये आशीर्वाद मुझे उन कुछेक चमकती हुई ठीकरियों से अधिक प्रिय हैं। सम्भव है मेरी यह कुर्बानी

किसी नाजुक समय में इन ठीकरियों से मेरी अधिक सहायता कर सके

घर का दीपक

हमारे हां एक चेजारे के पास निम्नलिखित योग था और यह उसका अनेक बारका अनुभूत था। बल्कि वह कहा करता था कि बालक रंग चाहे सांवला बनालो चाहे गोरा। योग निम्नाङ्कित है।

मोर के पंखका वह भाग जो चांदकी शकल का होता है, लेकर काटलो और सुक्ष्म कतर कर गुडमें लपेट कर गोली बनालो और सुन्दरता के लिये ऊपर चांदी का वर्क लपेट दो।

सेवनविधि— गर्भ के दूसरे मास के आरम्भ मे उस समय जबकि स्त्री का दाहिना स्वर चल रहा हो, वह गोली ऐसी गाय के दूध मे दे, जिसने बछड़ा जना हो। उस दिन दूध के सिवाय अन्य कोई वस्तु खाने को न दे। हां! सन्ध्या समय दूध और चावल दे सकते हैं। अवश्य चांद जैसा पुत्रोत्पन्न होगा।

दाहिना स्वर—कुदरती तौर पर दाहिना स्वर चल रहा हो तो ठीक है. वरना बांई करवट लेटने से स्वर चलने लगता है।

मधुर फल

जिन लोगो के घरो मे लड़कियां ही लड़कियां पैदा होती हों और पुत्र का मुख देखने को तरस रहे हो उनके लिये सरल

चुटकला लिखाजाता है। यह योग स्व० श्री ध्वजाराम वैद्य मालिक अमृत औषधालय पटियाला निवासी का विशेष गुप्त योग है। गर्भ के दूसरे मास में ही १ माशा भाग के बीज प्रातःकाल ताजा जल से सेवन कराये। इसी प्रकार निरन्तर एक मास सेवन कराने से अवश्य पुत्र ही उत्पन्न होगा।

दूसरा योग

संसार की किसी वस्तु को निरार्थक समझना हमारी अल्पज्ञता का प्रमाण है। इससे पूर्व भी हम ऐसी अनेक वस्तुओं के गुणों का कथन कर चुके हैं जिनको लोग निरार्थक समझ कर फैंक दिया करते हैं। यहां भी एक ऐसी ही वस्तु का वर्णन करने लगे हैं। लोगों की दृष्टि में यह व्यर्थ की वस्तु है किन्तु यह अनोमल चीज है कि जिसका मूल्य आंका ही नहीं जासकता।

जंगल में किसी हिरनी के नर बच्चे का नाडा प्राप्त करे और आवश्यकता के समय इसको अग्नि पर जलाकर ३ भाग करले और गुड में लपेट कर तीन गोलियां बनाले और गर्भ के तीसरे मास के आरम्भ में १ गोली प्रतिदिन ऐसी गाय के दूध से दें जिसने बछडा जना हो। ईश्वरकी दया से लड़का ही पैदा होगा।

एक अद्भुत योग

यद्यपि इसका प्रभाव देखने के लिये चिरकाल तक प्रतीक्षा की आवश्यकता है, किन्तु परिणाम के लिहाज से अद्भुत वस्तु है। वास्तव में यह योग एक पहाड़ी कुटुम्ब में वंश परम्परागत

चला आता है, जो किसी प्रकार हमारे स्वामीजी को मिल गया और उनके द्वारा हमारे तक पहुँचा है। हालांकि यह प्रयोग मुझे इस प्रकार सर्व साधारण मे प्रकट करने को नही मिला था किन्तु फिर भी उपस्थित है। इसमे तनिक भी सन्देह नही कि इस प्रकार के योग लोग किसी मूल्य पर बताना स्वीकार नही करते किन्तु हम स्पष्ट ब्यान कर देते हैं। हमे इसका कोई बदला नही चाहिये। केवल आपके आशीर्वाद की आवश्यकता है। और बस।

जो बकरी पहली बार बच्चा दे उसके नर का नाडा प्राप्त करें। कार्तिक मास मे बकरियां प्रायः बच्चा जनती हैं इस लिये इन दिनो मे एकत्र करलें और छाया मे सुखाले। आवश्यक्ता के समय उनमें से एक नाडा लेकर कोयलो की आंच पर जलालें, किन्तु ऐसा न हो कि जलकर राख ही होजावे और ऐसा भी न हो कि कच्चा रह जावे बल्कि कोयला बन जावे। उसको सुक्ष्म पीस कर सुरक्षित रखे और १ माशा की मात्रा मे जन्म घुटी मे मिला कर दें। बस ईश्वर की कृपा से नवजात बालिका के जितनी भी सन्तान होंगी सब लडके ही लडके होगे।

प्रसवकाल

कौन नही जानता कि प्रसवकाल स्त्री के जीवन मरण का समय होता है। लाखों देवियों के जीवन का बलिदान इस नाजुक समय पर होजाता है। यदि हम इस विषय पर कुछ न लिखे तो बड़ा अन्याय होगा, इस लिये कुछेक योग लिख देते हैं, जिनसे प्रसवकाल में आसानी होजाती है।

रक्तार्क अक्सीर

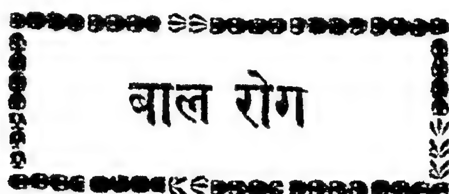
यह योग अपने अन्दर विद्युतका सा प्रभाव रखता है। प्राय: प्रथम मात्रा में ही बालक उत्पन्न होजाता है। वरना १५ मिनट बाद दूसरी मात्रा और देदे। असली काशमीरी केशर दो माशा को केवड़े के अर्क में पीसकर समोष्ण करके पिलाये। अवश्य ही सरलता पूर्वक प्रस्व होगा।

आश्चर्य जनक योग

मरियम पञ्जा प्रसिद्ध बूटी है जो प्राय:ही हाजी लोग अरब से लाया करते हैं। उसको पानी मे डालकर रोगिणी के सामने रखदें तो बच्चा शीघ्र ही उत्पन्न होजावेगा।

गुप्त रखने योग्य नुसखा

रोगिणी को सूचना दिये बिना ही ६ माशा गाय का गोबर गोली बनाकर उसपर खांड चढाकर गरम पानी से निगलवादे। दस मिनट में ही बच्चा पैदा होजावेगा।



बाल रोग

अङ्गरेजी में एक कहावत है कि "बच्चा इनसान का बाप है" यह सर्वथा सत्य बात है। यदि बालकों के स्वास्थ्य और

संस्कारो पर ध्यान नही दिया जावे तो बडे होने पर उनसे देश और जाति की सेवा तो क्या माता पिता को भी सेवा की आशा रखना व्यर्थ सिद्ध होगा। यदि बालक के नन्हे मे सुकोमल मस्तिष्क या हृदय पट पर आत्मिक या शारीरिक रोग अङ्कित होगया तो अनेक यत्न करने पर भी दूर न हो सकेगा। यथा सभव बालकों के स्वास्थ्य का अधिकाधिक ख्याल रखना उचित है। विशेष कर कोष्ट बद्धता और अजीर्ण का तो बहुत ही ख्याल रखे क्योंकि अनेक रोग इन्हीं मे पैदा होते हैं। इसके अतिरिक्त बारम्बार दूध पिलाते रहना बहुत ही खतरनाक होता है। इससे स्त्रियो को रोक देना उचित है। केवल दूध के बारबार पिलाने से नवजात शिशु को अनेक रोग से ग्रसित होना पड़ता है।

नोट—चूंकि यह पुस्तक संक्षेप में लिखी जारही है अत विशेष देखना होतो "अनुभूत योग चिन्तामणी" में देखें।

बालकों की मृगी (कमेडा)

इस रोग मे बालक एकदम मुर्च्छित होजाता है और कइ बार तो बालक के मुंह से झाग निकलने लगते है। हाथ पांव ऐंठ जाते हैं, होठ नीले पड़ जाते हैं। इसके लिये निम्नलिखित उपाय उत्तम है।

(१) बालक के बाजू और राने कसकर बांधदे (२) यदि कब्ज़ हो तो उसे दूर करे (३) तीक्ष्ण नस्य सुंघाये।

एक आश्चर्य

एक बडी बतख का नर बच्चे के पास छोड़दे। जिस समय दौरा पडेगा उस समय वह स्वयं आकर बच्चे को अपनी पंखो मे लेलेगा और मुंह म मुंह मिलाकर सास खैंचेगा तथा बालक तुरन्त स्वस्थ्य हो जावेगा। यह मेरा स्वयं आंखों देखा दृश्य है।

दूसरा योग

जब बालक को दौरा पड़ रहा हो तो एक साबत खटमल किसी प्रकार बालक के पेट में पहुँचा दे। तत्काल दौरा मिट जायगा और फिर कभी न होगा।

विद्युत प्रभाव नस्य

आक का टिड्डा छाया में सुखाकर पीस कर नस्य बनालें और दौरा के समय सुंघायें।

तुतलापन

प्रायः कइ बालक तुतला कर बोलते हैं, इसके लिये स्वर्ण-क्षीरी का दूध अतीव गुणकारी है। प्रतिदिन तनिकसा जिह्वा पर लगादिया करे। ज़बान साफ हो जावेगी।

मुंह के छाले

सुहागा भुना हुआ लेकर शहद में मिलाकर छालो पर लगाया करें।

सन्यासी का चुटकला

वर्षाऋतु में आवश्यक्तानुसार खुंवियां एकत्र करके छाया मे सुखालें और फिर सुक्ष्म पीसकर शीशी में रखें तथा आवश्यक्ता-के समय छालों पर छिड़क दे। आराम होगा।।

बालकों की कास

जब छोटे बालकों को खांसी का रोग हो जाता है तो बेचारे बड़ा कष्ट भोगते हैं क्योंकि उनके सुकोमल फुप्फुस कफ को निकलने में समर्थ नहीं होते और इस कारण से कफ गले तक कठिनता से आता है, किन्तु बच्चा उसको निकालने की अपेक्षा फिर अन्दर निगल जाता है।

उत्तम चटनी

काकड़ासींगी लेकर जलाले और उसकी भस्म को शहद मिलाकर थोड़ी सी अंगुली पर लगाकर चटाया करें।

बाल कासघ्न गुटी

यह गोलियां बालकों की खांसी के लिये गुणकारी हैं। प्रत्येक घर में रहनी उचित हैं। काकड़ासींगी आवश्यक्तानुसार लेकर सुक्ष्म पीसले और शहद मिलाकर मोठ की दाने की आकार की गोलियां बनालें। मात्रा एक गोली उसकी माता के दूध में घिस कर दें।

कास नाशक उपाय

सुहागा या फिटकडी भुनी हुई पानी मे घोल कर बालक की माता के स्तनो के उसभाग पर लगा दे, जिस भाग को बालक मूंह से लगा कर दूध पीता है, फिर बालक को दूध पिलावे। इस उपाय से कठिनतम खांसी भी दूर हो जावेगी।

समय का मसीहा

जब कफ की अधिकता से बालक की छाती रुकी पडी हो, सांस तगी से आरहा हो तो ऐसे अवसर पर प्रथम गवार के आटे का हलवा तैयार करे और उसकी दो पोटलियां बनाकर बारी २ से गरम करके बच्चे की छाती पर टकोर करें और फिर शुद्ध नोशादर बाजरे के दाने जितना लेकर एक नासपाल के टुकड़े मे डालकर ऊपर से कुछ बूंदे माता के दुग्ध की डाले और कोयलो की आंच पर रखदे, जब एक दो जोश आजावे तो उतार कर शीतल करके बालक की (जिह्वा बचाकर) गले मे डालदे। कफ वमन द्वारा या मल के साथ निकल जावेगा।

नोशादर शुद्ध करने की विधी—नोशादर की एक माशा की डली गेहूँ के आटे में लपेट कर अङ्गारो पर रखदे। जब ऊपर से आटा कालिमायुक्त होजावे तब निकाल ले। बस नौशादर शुद्ध होगया।

बालकों के स्वास्थ्य का ठेकेदार

यदि निम्नलिखित प्रयोग को सेवन कराते रहे तो बालक बहुत कम बीमार पडते हैं। कारण इससे कब्ज नही रहता, पाचन शक्ति तीव्र होजाती है और बालक हृष्ट पुष्ट होकर रंग निखर आता है।

प्रातःकाल सर्दियो मे गरम पानी में और गरमीयो में शीतल जल में थोडीसी सुपारी और पीतहड़ें घिस कर पिलाया करे। अनेक बार का अनुभूत है।

हरे पीले दस्तों का योग

तेलियां सुहागा भुना हुवा आवश्यक्तानुसार लेकर खरल मे डालकर पोसें और अदरक के रस की सहायता से मूंग के बराबर गोलियां बनाले। मात्रा एक गोली प्रातः साय पानी मे घिसकर पिलावे।

अतिसार की चुटकी

धाय के फूल बारीक पीसकर रखे और बालक की माता के दूध मे हल करके पिलाये। दस्त बन्द हो जावेंगे।

बालकों की विशुचिका

जब अतिसार और तृषा जोर से हो तो उस समय पपीता अर्क गावजबा में घिस कर पिलाते रहो। अतिशीघ्र ही वमन,

तृषा तथा दस्त बन्द होजावेंगे। पर्तोना न कवल बालकों को बल्कि बड़ी आयु के लोगों के हैजे में भी अकसीर है।

काली खांसी का चुटकला

यह प्रयोग भी एक सन्यासी द्वारा प्राप्त है, जो अपने विद्युत सम प्रभाव से अतीव गुणकारी सिद्ध हुआ है। मेरी इच्छा थी कि सन्यासियों के योगों को पृथक पुस्तक रूप में प्रकाशित कराद्ं किन्तु थोड़े स व्यक्तियों के अतिरिक्त किसीने विशेष दिलचस्पी जाहिर नहीं की, इसलिये हमने ऐसे योग ' अनुभूत योग चिन्तामणी'' के द्वितीय भाग मे प्रकाशित करने का निश्चय कर लिया। अतः उसमें पढ़ें।

कच्छुवे की खोपड़ी जलाले और भस्म मे स दो रत्ती की मात्रा १ माशा खांड मे मिलाकर चटाया करे। काली खांसी के लिये मुफीद है।

डब्बा रोग

यह बालकों का नमूनियां होता है जिसकी परीक्षा यह है कि सांस लेते समय पसली के नीचे गढ़ासा पड़ता रहता है। सास की गति तीव्र होजाती है और ज्वर भी तेज होजाता है। यह बहुत कठिन बीमारी है, जिससे लाखों बालक मृत्यु की मुख गह्वा में पतित हो जाते हैं।

पीत गुटी

रेवंद ग्रामार बारीक पीसकर रत्ती २ की गोलियां पानी मे घोलकर पिलावे। उसी समय वमन या दस्त होकर स्वास्थ्य लाभ होगा। दवा बालक के बलाबल और आयु को देखकर दे। दवा कम देने से वमन न होगी और अधिक देने से कष्ट होगा!

फकीरी चुटकी

अमलतास की साबत फली को जला कर राख बनाले। और डब्बा रोग से पीड़ित बालक को एक चुटकी शहद मे मिलाकर चटायें। निराशा के समय यह दवा अकसीर का हुकम रखती है।

बालकों का तपेदिक

इस रोग से बालक दिन प्रतिदिन सूख कर अस्थिपिंजर रह जाता है, रोग के आरम्भ मे कुछ पता नही चलता जैसा कि 'अनुभूत योग चिन्तामणी'' मे लिखा है वैसे यहां पर भी एक दो चिन्ह लिख देते हैं। (१) जिस बालक को इस रोग के होने का सन्देह हो उसके कान की ''लो'' को चुटकी मे दबादे। यदि बालक को कष्ट नहो तो निसन्देह यही रोग है, (२) इस रोग से ग्रसित बालक को हर समय दूध पीने की धुन लगी रहती है। यह बालको का यक्ष्मा रोग है जो कई इलाजो से दूर हो जाता है।

गोबर का प्रभाव

यद्यपि इस चुटकले का मैंने अनुभव नही किया किन्तु मेरे दो मित्रो ने अपना बारम्बार का अनुभूत बताया है। जब बालक को सूखा रोग होतो उसके मेरुदण्ड पर ताजा गोबर मले और फिर ध्यान पूर्वक देखे कि पीठ मे से छोटे २ काले मूंह के कृमी निकलते दृष्टी गोचर होंगे, उनको चुनकर फैंक दे और यही क्रिया प्रतिदिन किया करें। कुछ दिन मे बालक स्वस्थ्य हो जावेगा।

अद्भुत गोलियां

खुशक आमले आवश्यक्तानुसार लेकर बारीक पीसले और दही के पनीर से मूंग के समान गोलिया बनावें। मात्रा १ गोली प्रातः सायं देना अतीव लाभकारी है। सौ से ऊपर बालको पर अनुभव किया। गिनती के दिनो मे बालक हृष्ट पुष्ट बन जाते हैं।

—(❀)—

विविध योग

इस प्रकरण मे विविध रोगों के योग लिखे जायेगे। सबसे पहिले विषैले जन्तुओं के दंशन की चिकित्सा का कथन किया जायगा। इच्छा थी कि इस प्रकरण मे उन अद्भुत बूटियो का भी वर्णन करदिया जाय कि जिनको हाथ मे पकड़ने या शरीर से स्पर्श करा देने से सालभर तक अगद का प्रभाव हाथ मे बना रहे। ज्यो ही हाथ फेरा कि ईश्वर कृपया विष दूर हो गया, किन्तु इस विचार से कि पुस्तक की पृष्ठ संख्या बहुत बढ़ रही है और पुस्तक का विषय जड़ी बूटियो के गुणो का वर्णन करना नहीं बल्कि अमिश्रित औषधियो को बताना है, जो अत्तारो और पन्सारियों की दुकानो पर सर्वत्र मिल सकती है, अतएव उन तमाम बूटियो का "भारतीय जड़ी बूटी" नामकपुस्तक में कथन करूंगा। अब मेरा विचार कुछ काल के लिये भ्रमण करने का है। वैद्यक संसार और जनता की आज तक मै जो सेवा कर सका हूँ, वह किसी से अविदित नही है. ईश्वर से प्रार्थना करे कि मैं अपने विचारो मे सफल बनूं और इसके बाद नवीन खोज और नवीन ज्ञान द्वारा इससे अधिक सेवा कर सकूं।

शर्पदंशन का टीका

यह एक सन्यासी का योग है, जिससे असाध्य रोगी भी स्वस्थ्य होजाते हैं। भिलावा टोपीदार लेकर उसकी टोपी अलग करदे और गरम संडासी से भिलावा पकड़ कर दबाकर क्षत पर उसका तैल टपका दे। इसी प्रकार और भिलावे लेकर उनका तैल क्षत मे प्रविष्ट करते रहे। दो तीन या अधिक भिलावों का तैल विष को शरीर से खैचलेगा। सन्यासी महोदय भिलावे अपनी झोली में रखते थे। जहां कहीं रोगी मिला कि दवा लगाई और चलते बने।

एक पैसे में इलाज

चिरकाल हुआ, देशोपकारक लाहौर मे एक सबइन्स्पेक्टर महोदय ने एक प्रयोग जनता के लाभार्थ छपवाया था और उसके गुणो के विषय में यहां तक विश्वास दिला दिया था कि उन्होने सैकड़ो रोगियो पर इसका अनुभव किया और जिस रोगी के गलेमे दवा उतर गई, वह नही मरा।

जेष्ठ माष मे जमुना के वृक्ष की छाल आवश्यक्तानुसार एकत्र करके छाया मे सुखालें और कूट कर डब्बों मे भरले। जब कोई दवा मांगे तो उसमे से ५ तोला चूरण और एक तोला काली मिरच कूटकर मिलादे तथा ताजा जल में घोल कर पिलादें। तत्काल विष दूर होगा।

सर्प का मोहरा

(जिसको एक सपेरे ने ३०) में बेचा था)

यह मोहरा उन कृत्रिम मोहरों से अधिक उत्तम है, जिसको जोगी लोग सांप का मोहरा कहकर बेचते हैं। यह मोहरा भी वास्तव में एक हकीम साहिब ने ३०) में खरीदा था। किन्तु हम इसका रहस्य प्रकट किये देते हैं। जिससे पाठक एक पैसे में ३० मोहरे तैयार कर लिया करें। कहिये क्या अब भी यह पुस्तक १॥) में महंगी मालूम होती है।

जब किसी मनुष्य को सांप काटे तो तत्काल रोगी के दंशित स्थान पर नश्तर से क्षत लगाकर इमली का बीज (प्रथम पत्थर पर तनिकसा पानी डालकर घिसलें) ऊपर रखदें, उसी क्षण बीज क्षत पर चिपक जायगा और विष को चूसना आरम्भ कर देगा। जब स्वयं ही गिर पड़े तो दूसरा बीज उसी प्रकार घिस कर लगादे। यदि विष बहुत होगा तो कई बीज बदलने पड़ेंगे। जब घाव पर बीज न चिपके तो समझलो कि विष निकल गया। जो बीज विष लेकर गिरे उनको जमीन में दबादें।

सर्प विष चूसने वाला जन्तु

यदि चूहे का पेट चीर कर सर्प दंशन स्थान पर बांध दें, तो तत्क्षण विष को अपने अन्दर खैंचलेगा।

आश्चर्य जनक सुरमा

लाल मिरच लेकर खरल मे डालकर अच्छी तरह सुक्ष्म पीसले, यहां तक कि सुरमें की भांति पिस जावे। फिर आवश्यक्ता के समय रोगी के नेत्रो मे एक २ सलाई डाले। विष के प्रभाव से रोगी को मिरचो की तेजी का अनुभव न होगा।

वमन द्वारा विष निकालना

यद्यपि यह प्रयोग इससे पूर्व "रीठा गुण विधान" में लिखा जा चुका है, किन्तु अनेक बार का अनुभूत अगद होने के कारण यहां भी लिख रहे हैं।

रीठे का छिलका ६ माशा, पानी मे खूब अच्छी तरह घोट कर समोष्ण करके रोगी को पिलावे। थोडी देर मे वमन होगी, फिर पिलावे, जब तक कि विष वमन द्वारा निकलता रहे, पिलाते रहे। यह एक माना हुवा अगद है।

सर्प दंशन का अगद

सर्प दंशित रोगी को हुक्के की नय मे से मैल निकाल कर कुछ तो गरम पानी में घोल कर पिलावे और कुछ दंशित स्थान पर उस्तरे से घात करके लगावे। ईश्वर की कृपा से आराम होगा।

एक गुप्त योग

एक मुर्गी लेकर उसकी गुदा और उसके आस पास के

बाल इस प्रकार उखाडे कि स्वच्छ त्वचा निकल आये। अब इसकी गुदा को दंशित स्थान पर लगादे। उसी समय चिपक जायगी। और थोड़ी देर मे जहर को चूसकर मर जायगी फिर तत्क्षण दूसरी मुर्गी को उसी पर चिपका दे। जब तक मुर्गिया चिपकती रहे और मरती रहे तब तक इस क्रिया को जारी रखें। जब मुर्गी न मरे तो समझलो कि विष निकल गया। यह योग अतीव लाभकारी है।

बिच्छु काटे का अगद

बुद्धिमान लोगों का कथन है कि सांप का काटा सोवे और बिच्छु का काटा रोवे। वास्तव में बिच्छु के विष की लहर गम्भीर व्यक्ति को भी रुला देती है। इसकी अद्भुत जड़ी बूटियो के योग तो "भारतीय जड़ी बूटी" मे लिखे हैं, यहा कुछेक सरल योग लिख देते हैं जिससे कि यदि एक प्रयोग से लाभ न हो तो दूसरे से काम लिया जा सके। क्योंकि सर्पों की भांति बिच्छुओ के न्यूनाधिक विप के अनुसार कई भेद होते हैं।

बिच्छु काटे का मोहरा

जिस मोहरे का वर्णन सर्पदंश के अगदो मे वर्णन किया है वह बिच्छु काटे पर भी विश्वास की वस्तु है।

बिच्छु काटे का अगद नं० २

एक प्रसिद्ध हकीम साहिब का योग है, जो नुसखा हृदय मे

और शीशी जेब मे रखते हैं। जहां आवश्यक्ता पड़ी वहां दवा की जरासी फुरैरी लगादी और रोगी को आराम होगया। हमारे मित्र डा० एस० जे० राय के यत्न से यह प्रयोग हमे मिल गया जो आपकी भेट है। यदि हकीम साहिब ने इस पुस्तक को कहीं पढ़ लिया तो हम पर नाराज़ होंगे। खैर !

इच्छानुसार जमालगोटे की मींगियां लेकर अदरक के रस से हल करें और शीशी मे सुरक्षित रखे। जरूरत पडने पर फुरैरी तर करके दंशित स्थान पर लगादे। यह भिड, ततैया, मधु मक्खी के काटे पर भी लाभदायक है।

तृतीय अगद

यह भी अत्यन्त गुणकारी है। विशेषता यह है कि दवा ज्यों २ पुरानी होगी त्यों २ प्रभाव बढता जायगा। एक सिंधी महाशय इसी चीज़ को ।) प्रति शीशी के हिसाब से बेचा करते थे। हालांकि एक पैसे की लागत में एक पौंड तैयार होता है।

जितनी चाहें-मूलियां लेकर खरल मे कूट कर रस निकाल कर छानले और शीशीयो मे भर रखे। बिच्छु काटे स्थान पर फुरैरी लगाने से तुरन्त ठन्ड पड़ जाती है।

विष से विष की चिकित्सा

संखिया सफैद पत्थर पर घिस कर लेप बनाकर दंशित स्थान पर लगाने से पीड़ा तुरन्त शान्त होजाती है।

बिच्छु के शरीर में बिच्छु का अगद

जब बिच्छु काट खाय तो तुरन्त उसे पकड कर मार डालें और दहकते हुये अङ्गारो पर डाल कर दंशित स्थान पर उसकी धूनी देनेसे पीडा मिट जाती है ।

बावला कुत्ता काटे का इलाज

बावले कुत्ते के विषैले परिणाम से प्रत्येक मनुष्य परिचित है इसलिये विशेष व्याख्या की आवश्यक्ता नहीं । यहा कुछेक योग लिख देना ही पर्याप्त समझते हैं, जिनके सेवन कराने से हलकाव का आक्रमण कदापि न होगा ।

मूत्र द्वारा विष को निकाल देने वाला

अद्वितीय प्रयोग

एक काला झींगर गुड़ में लपेट कर रोगी को सूचना दिये बिना ही खिलावें और किसी बर्तन पर मोटा कपड़ा बाध कर रोगी को उस पर पेशाब करावे । मूत्र छनकर बर्तन में चला जावेगा और कपड़े पर बालों की भाति एक द्रव्य शेष रह जायगा । यह बाल उसी रंग के होते है, जिस रग के कुत्ते ने काटा हो । शाम तक पेशाब साफ आजावेगा, पुनः दवा देने की आवश्यक्ता न होगी । वरना तीसरे दिन फिर यही क्रिया करे । दवाके सेवन काल में रोगी को खाने के लिये कुछ नदें । केवल दूध ही पिलावे । यदि उष्णता प्रतीत हो तो चिन्ता न करें । केवल दूध या दूध घी मिला कर सेवन करावे ।

नोट–झींगर एक कीडा होता है। यह प्राय. मकानों के नमनाक भागों में मिलता है। मूछों के दो लम्बे २ बाल होते है। पर भी होते हैं। किन्तु उडता नहीं, छलाग लगाता है। एक सफेद होता है, दूसरा काला। काला सेवन करायें।

यह प्रयोग मुझे एक फकीर ने बताया था। इससे सैंकडों आदमी स्वस्थ हो चुके है। इसके सेवन से हडकाव नहीं उठता।

द्वितीय योग

आमकी बडी गुठली मे से एक सुन्हरी रंगकी मक्खी निकलती है, उसे तलाश कर गुड मे लपेट कर रोगी को सेवन कराये।

बावले कुत्ते के प्रसिद्ध चिकित्सक

मौलाना हकीम महोमद युसफ स्व० हकीम अजमलखां के सहपाठी थे और बावले कुते के इलाज में प्रसिद्ध थे। आपका वह गुप्त प्रयोग "अनुभूत योग चिन्तामणी" के द्वितिय भाग में दिया हुवा है, जोकि गोलियो के रूप में है। मिश्रित औषधि होने से इस पुस्तक नहीं छाप सकते थे अतः उक्त पुस्तक मे पढे।

अग्निदग्ध की चिकित्सा

असली हींग लेकर पानी मे हल करे और मुर्गी के पर से दग्ध स्थान पर दिनमे दो तीन बार लगावे और रात्रिको भी एक दो बार लगादे। जलन बहुत जल्दी दूर होजावेगी और छाला नहीं पड़ेगा।

आस्मानी अर्क

जब कभी आले बरसें तो उनको एकत्र करके शीशी में रखे और पानी होजाने पर फिल्टर करके साफ शीशी मे मजबूत कार्क लगाकर रखे। यदि जलते ही तत्क्षण इस पानी का फाया दग्ध स्थान पर लगादिया जावे तो तुरन्त चैन पड़ जाता है। मानो जला ही नहीं।

लाहौरी फोड़े की दवा

आमलासार गंधक को मिट्टी का तैल मिलाकर खूब खरल करें। पतली सी मरहम तैयार हो जावेगी। किसी चौडे मूंह की शीशी मे सुरक्षित रखे और फोड़े पर रुइ का फाया तर करके लगावे। कई दिन लगाने से निश्चय ही लाभ होजायगा।

चम्बल की दवा

ढाक के बीज सुक्ष्म रगड़ चूरण बना रखे और फिर खट्टे दही या छाछ मे घोट कर प्रातः सायं लगाया करे। इस योग से हमारे मित्र दिलबर हुसेन खां ने योरोप के एक प्रसिद्ध प्लेयर का इलाज किया था।

दमा की अकसीर दवा

यह योग पहिले भी प्रकाशित कर चुके हैं किन्तु एकौषधि होने से इस पुस्तक में भी लिख रहे हैं। मोर पखो को जलाकर राख बनाले और एक रत्ती पान में रखकर खिलाया करे। दस दिन का सेवन काफी है।

निर्दयता

कुछेक अदूरदर्शी मातायें बालको को सुलाये रखने के लिये थोड़ीसी अफीम देदिया करती हैं, (किन्तु अफीम बालकों के

लिये विष में कम नहीं) ताकि बालक सोता रहे और वह अपना काम करती रहे। किन्तु जब अनुमान से तनिक अधिक अफीम देदी जावे तो वह पुष्पवत सुकोमल बालक को सदैव के लिये गहरी नींद में सुलाने का कारण बन जाती है। इसलिये इसका अगद लिखना आवश्यक प्रतीत होता है।

योग—बिनौले की गिरी थोड़ीसी लेकर पानी में पीस कर पिलाने से विष का प्रभाव दूर होगा। यदि एक बार में कुछ कसर रहे तो पुनः फिर पिलादे।

द्वितीय अगद

जितनी अफीम दी गई हो उतनी ही या उससे द्विगुण हींग पानी में घोलकर पिलावे।

बिच्छु काटे का एक अगद

मेरे मित्र मुजफ्फर नगर से लिखते हैं कि मैं एकबार यात्रा में गया हुआ था, वहा एक आदमी को बिच्छु काट गया। चूंकि जगह ऐसी थी जहां कोई दवा प्राप्त नहीं हो सकती थी इस लिये रोगी की तसल्ली के लिये टूटे हुये रिकार्ड को घिसकर लगा दिया। लगाते ही ठंड पड़ गई। इसको अनेक बार परिक्षा में लाकर सफलता प्राप्त की है। संगरिया (बीकानेर) निवासी गोवर्धन दास मोदी ने भी इसकी तस्दीक की थी।

प्रायः विष का अगद

चौलाई की जड को पानी में पीस कर रोगी को पिलावे। कई जहरों का उत्तम तिरयाक है। चौलाई सर्वत्र मिलने वाली बूटी है।

॥ समाप्तम् ॥

५४२४ रु० के सन्यासी प्रयोग

आजकल अनुभूत प्रयोगो के नाम से कई पुस्तके प्रकाशित हो रही हैं. किन्तु खेद है कि उन पुस्तको को देखकर "कहीं की ईंट कहीं का रोडा" वाली किम्बदन्ति स्मरण आती है। अर्थात् अनुभूत प्रयोग दो किसी पुस्तक के और तीन किसी पुस्तक के दृष्टिगोचर होते हैं। वास्तव मे अपने अनुभूत प्रयोग कोई भी प्रकाशित नही करना चाहता और न ही कोई ऐसे प्रयोगोके संग्रह का भगीरथ प्रयत्न करता है। किन्तु "अनुभूत योग चिन्तामणी" के लेखक को ही ईश्वर ने वह उदार हृदय प्रदान किया है जिसने वर्षों तक सन्यासियो की कठिनतम सेवा और भ्रमण के कठिन परिश्रम के अतिरिक्त ५४२४) रु० व्यय करके जो ५४० नुसखे प्राप्त किये थे वह सब निष्कपट भाव से इस पुस्तक में प्रकाशित कर दिये हैं। जिनके प्रताप से आज सहस्रो वैद्य और हकीम अपने औषधालयो को सफलता पूर्वक चला रहे हैं। इस पुस्तक में वे प्रयोग लिखे गये है, जो अनेक बार अनुभव की कसौटी पर परखे जा चुके हैं। इस पुस्तक मे एक भी ऐसा प्रयोग नहीं जो किसी पुस्तक से लिया गया हो, अपितु सबके सब सन्यासियो के हृदय के खास गुप्त प्रयोग है जो तत्कालीन चमत्कारी प्रभाव दिखाते है। इस पुस्तक के सभी प्रयोगो की भारतवर्ष के वैद्य और हकीमो द्वारा पुनः २ परीक्षा हो चुकी है, और सभी ने एक

स्वर से प्रयोगो की सत्यता को स्वीकार कर लिया है। किस वैद्य
और हकीम ने किस २ प्रयोग की परीक्षा करके उसके विषय मे
क्या सम्मति दी, वह सब परिशिष्ठ रूप से पुस्तक के अन्त मे
प्रकाशित करदी गई है, जिससे सिद्ध होगया है कि इस पुस्तक
मे एक भी ऐसा प्रयोग नही जो अनुभूत सिद्ध न हो। जिस वैद्य
या हकीम के औषधालय मे यह पुस्तक नही, निसन्देह उसकी
चिकित्सा और औषधालय अधूरा ही है।

इस पुस्तक के प्रयोगों की संक्षिप्त सूची इस प्रकार है।



घडी पास रखकर मिनटों में ज्वर को दूर करने वाले नुसखे, अगुली पर दवा बाधकर ज्वरका उतारना, आखों में अजन लगाकर तृतियक ज्वर उतारना, नाडी पर बूटी बाधने से ज्वर न चढना केवल नस्य (हूलास) सुघाकर सर्प विष दूर करना अक्सीर सुजाक, जो एक पैसे की लागत से तैयार होती है और पाच दिन में सुजाक की जड काट देती है। पावों पर मर्दन करने से पुराने से पुराना, उपदश ,आतशक) समूल नष्ट हो जाता है। अर्श ,ववासीर) के मस्सों को जडसे उखाड देने वाले नुसखे, जो कि हजारों रुपये खर्च करने पर भी प्राप्त होने दुस्तर हैं। प्रमेह के अचूक प्रयोग जिसमें से एक तो ऐसा है जो सर्वत्र प्राप्त होने वाली अमिश्रित औषधि है, जिससे २० वर्ष का पुराना प्रमेह भी दूर होजाता है। दूसरे

प्रयोग से प्रमेह और स्वप्नदोष चाहे कितना ही पुराना हो, तीन मात्रा से ही दूर होजाता है। स्त्री पुरुषों के गुप्त रोगों की चिकित्सा विधि जिसे पढ़कर साधारण आदमी भी नामर्दी का इलाज करके हजारों रुपया कमा सकता है। मृगाङ्क भस्म छ. आना तोला में तैयार करने का गुप्त रहस्य। एक ऐसा तिला जिसको पर .....तो क्या अंगुली पर लगा देने मात्र से ही इतनी कठोरता आजाती है कि अंगुली को बलवान आदमी भी नहीं मोड़ सकता। इसके अतिरिक्त कला-कौशल सम्बन्धी भी अनेक प्रयोग लिखे गये हैं। जिनको लोग पान्च २ सौ रुपये फीस लेकर बताते हैं। यथा फिनायल बनाना, जर्मनी खिजाब पोडर बनाना, जिससे साधारण स्थिति का आदमी भी मालदार हो सकता है। रोग परीक्षा और निदान के सरल उपाय, पथ्य और रोगों के नाम प्रत्येक भाषा में लिखे गये हैं। साराश सागर को गागर में बन्द किया गया है। यदि पुस्तक पसन्द न आवे तो एक सप्ताह के अन्दर वापिस करदें, इससे ऊपर और क्या शर्त हो सकती है। तिसपर भी इतने बड़े और उपयोगी ग्रथ का मूल्य २) रुपया मात्र। पोस्टेज ।।)

वीर्य वर्धक ! प्रमेह नाशक !! बाजीकरण योग !!!

बबूल (कीकर) गुण विधान।

इस पुस्तक में बहुत ही कमाल किया गया है अर्थात कीकर के द्वारा प्रमेह, स्वप्न दोष, नपुंसकता, अर्श (बवासीर) सुजाक आदि रोगो के रसायनिक सन्यासी योग स्पष्ट लिख दिये हैं। अपितु कीकर से होने वाली अनुपम धातु भस्मो का वर्णन भी इसमें है। मूल्य केवल ।-)

सन्यासियों के गुप्त भेद ।

पाठको ने देखा होगा कि बड़े २ हकीम, वैद्य और डाक्टरो ने जिन रोगियों को जवाब दे दिया था और लोग निराश हो बैठे थे उनको सौभाग्य से कोई सन्यासी मिल गया और किसी जड़ी बूटी की कुछ मात्रायेदीं, और जिससे रोगी स्वस्थ हो गया। यह है सन्यासियो की जड़ी बूटियों की करामात जो सब को आश्चर्य में डाल देती है। किन्तु हम उन्ही जड़ी बूटियों (घास) को पांवो तले रोंदते फिरते हैं, जिनमें मरणासन्न रोगी को जीवित कर देने की दिव्य शक्ति भरी होती है।

भारतीय जड़ी बूटी ।

नामक पुस्तक में ऐसी ही जड़ी बूटियों के गुप्त रहस्य प्रकट किये गये हैं, जिनकी बदोलत सन्यासियों की धाक जमी हुई है और वह लोग वर्षों सेवा करने पर भी इन जड़ी बूटियों को बतला कर नहीं देते, हालांकि इनमें से अधिकांश बूटियां आपको जंगल खेत, बागीचो और पंसारियों की दुकानों पर भी मिल सकती हैं, और आवश्यकता पड़ने पर घर की स्त्रियां भी अनेक दुष्ट रोगों की चिकित्सा घर में ही कर लिया करेगी। इसके अतिरिक्त हमने अपने वह विशेषातिविशेष प्रयोग भी इस पुस्तक में लिख दिये है जिनकी फीस पांच २ सौ रुपया लेते हैं। इस पुस्तकको पढ़ लेने के बाद आप इस युगके धन्वन्तरी समझे जायंगे, रोगियों का तांता बन्धा रहेगा, धन और

यश दोनो एक साथ ही सुलभ प्राप्त हो सकते है। इस पुस्तक मे पैर के नख से लेकर सिर तक की चिकित्सा जड़ी बूटियों से ही करना बतलाया गया है, जिनमे से कुछेक बूटियों की विषय सूची निम्नलिखित है:—

लाख २ रुपये का एक २ प्रयोग

(१) एक ऐसी बूटी कि जिसकी लकडी कानों में लगाने से सर्प काटे का विष मुंह द्वारा निकल जाता है। (२) एक ऐसी बूटी जिससे मूढ गर्भ ५ मिनट में निकल जाता है। (३ मधुमेह के लिये अक्सीरी बूटी, (४) वह बूटी जिसके सेवनसे दुबला पतला आदमी मोटा ताजा होजाता है (५) एक अद्भुत बूटी जिसके सेवन से एक सप्ताह म ही नामर्द मर्द बन जाता है। (६) दमे को एक दिन में मिटा देने वाली बूटी (७) एक ऐसी बूटी के जिसके धूम्र से विधवा स्त्री एवं पुरुष की कामवासना सदैव के लिये नष्ट हो जाती है। ८) वह बूटी जिसके रस में अंगुली डबोने से तत्काल ज्वर उतर जाता है। (९। ऐसी बूटी जिसके दर्शन मात्रसे ही स्त्री वशीभूत होजाती है। (१०) वह बूटी जिसको मुख में रखने से इच्छानुसार स्तम्भन होता है। (११। जो स्त्रिया और अधिक सन्तान पैदा रना नहीं चाहतीं उनके लिये बूटी जिसके सेवन से गर्भ नहीं रह सकता (१२। जलधर रोग के लिये अचूक बूटी (१३) उपदंशको एक सप्ताह में मिटा देने वाली बूटी (१४। नमोनिया के लिये बूटी (१५) ऐसी बूटी जिसको देखते ही सर्प अंधा होजाता है(१६)बन्ध्या स्त्रीके भी संतान पैदा हो ऐसी बूटी इत्यदि २

ऐसी ही सैकडों जडी बूटियोंका वर्णन इस पुस्तक में है जिनसे चमत्कार दिखाकर आप सिविल सर्जनों को भी दंग कर सकते है मूल्य २) पोष्टेज ।=)

यौवन के गुप्त रहस्य

लुटी हुई जवानी और बीता हुआ यौवन वापिस लाने के

शर्तिया उपाय

पुरुषत्व और जवानी के वह गुप्त रहस्य, जिनको जानने मे नपु सकता के ऐसे रोगी, जिन्हे किसी दवा मे लाभ नही हुआ या सैकडो रुपये की दवा खाकर भी निराश बैठे है, निसन्देह मरद बन सकते है और दूसरो की सफल चिकित्सा कर सकते हैं, मनुष्य देह का वह केन्द्र जहां से स्वास्थ्य और यौवन का रस झर कर समस्त शरीर का पोषण करता है—उस केन्द्र को शक्ति प्रदान करन के अनुठे उपाय, जिससे लुटी हुई जवानी और बीता हुआ यौवन पुनः लौट आता है, वह बाते जो पुरुषत्व शक्ति को नष्ट करती हैं। वह बातें जो पु सक शक्तिको बढाती है, शीघ्रपतन, स्वप्नदोष प्रमेह. और धातु क्षीणता जैसे भयंकर रोग बिना दवा सेवन किये ही किस प्रकार नष्ट हो सकते है, महादेव जी के उर्द्धवरेता होने का वह प्रयोग जिसस मनुष्य वृद्धावस्था में भी पूर्ण युवक बना रह सकता है और आयु पर्यन्त उसकी बाजीकरण शक्तिमें कमी नही आती, रसग्रंथियोंकी आश्चर्यजनक दवाइयो के प्रयोग, हजारो रुपया खर्च करक डा० वोरनोफ की बताई हुई बन्दर की रस ग्रंथी लगवाने में आपरेशन का कष्ट सहन किये बिना ही सुगमता से प्रत्येक स्त्री पुरुष वही शक्ति कैसे प्राप्त कर सकते हैं, एक भारतीय फल जिसके सेवन से बिना किसी औषधि और तिला के नामर्द मर्द बन सकता है। इसके अतिरिक्त पुरुषो के गुप्त रोगो के सम्बन्ध मे निदान व ऐसे २ गुप्त प्रयोग इस पुस्तक मे दर्ज किये गये है जिनको उपयोग करके एक गया बीता नपुंसक भी अपने पुरुषत्व पर गर्व कर सकता है।

मूल्य २) पोस्टेज =)

"पेटेन्ट औषधें और भारतवर्ष"

आधुनिक काल मे पेटेन्ट औषधियों की देश-विदेश में चारो तरफ बाढ सी आगई है। जिधर देखो, उधर इनके विज्ञापन फैले हुये अपनी मनमोहनी कला से जनता का धन हरण कर रहे है; लेकिन इन विज्ञापनीय द्रव्यों मे एक दम धूर्तता भी नहीं है, बल्कि लोगो को उनसे लाभ भी होता है। अवगुण उनमें यह है कि एक पैसा का माल एक रुपया में बेचा जाता है. जिसके महन करने की भारतवर्ष मे शक्ति नहीं है, जहां पर अनेक व्यक्तियों को भर पेट भोजन मिलना कठिन है. वहां पर मन माना द्रव्य कहां से फेका जा सकता है। यह सब दशा होते हुये भी देश को लूटने के लिये नित्य नवीन उपाय निकलते ही जाते है और कोई शक्ति ऐसी नहीं है, जो रोधक होकर लूट से रक्षा कर सके।

इसी लिये हमारा यह विचार हुआ कि विज्ञापनीय द्रव्यो का प्रथक्करण करके प्रकाशित कराया जाय, तो जनता वही द्रव्य स्वल्प मूल्य में तैयार करके अपने द्रव्य की रक्षा कर सकेगी। इस विचार को लेकर तमाम द्रव्यों को खरीद कर और सतत परिश्रम कर डा० रामकृष्ण वर्माने सर्प मृत्यु लेबोरेटरीमे पृथक्करण कर, असली तत्व जान उसके निर्माण की रीति सहित प्रकाशित करके यह पुस्तक मातृ-भूमि के चरणो मे समर्पित की है।

औषधियो के पृथक्करणकर्ता भारतवर्षमे हमीं हैं और हमारे ही प्रयोग समाचार पत्रो मे जो निकले थे उनको कई व्यक्ति छपवाकर पुस्तक रूप से बेचते हैं लेकिन इसमें वह ५१० योग है, जो अभी प्रकाशित नही हुये है, इससे जो व्यक्ति इसको खरीदना चाहे, वह शीघ्र मंगाले, अन्यथा पछताना होगा। कीमत ७) डाक व्यय अलग। पुराने योग इसमे बिलकुल नहीं हैं, ग्राहक इससे सावधान रहे। १६७ प्रयोग वाली का मूल्य ।।।)

पता—रसायन कार्यालय, संगरिया (बीकानेर)